९	कल्ली	दौलसींघ	टोडरमल	[illegible]		१९फागुणी सं०१९७२	४॥
१०	मगलसींघ	देवीसींघ	सानसींघ	[illegible]	३५	[illegible]	
११	[illegible]	जैसनसींघ	नंदुसींघ	[illegible]		जेठवुदी ३ सं०१९६५	
१२	गंगासींघ	ब्रिजसींघ	हीमतसींघ	[illegible]	८	पोसवुदी ८	
१३	रामसींघ	वलवंतसींघ	देवीसींघ	[illegible]	२१	पोसवुदी	
	मगलराम	चुरामन	रामचंद	[illegible]		[illegible]	४॥

		बेकलसींघ	मायोसंघ	धांधवता	ना...	...गनुदी आ. १९३१	हरावृतसंघपमी मोडे...	३॥।=।
	...मनसींघ	फतहसींघ	रूपसंघ	हमीरदेपा	राजगाव...	...दी २८. १९५२	...दासंघपहमी ...मनादे	३=॥
१७	गोबींदसींघ फुर्तीनामरत्न	हरनामसींघ	डालुसंघ	सांहारण	राजा... ७	प्रातीगनुदी ... २	हरावृतसंघप वांधर्या	३॥।=।
१८	गुलाबसींघ	मनानसींघ	मोडमसं...	चोहाण	राजगा...	दुजाजेठनुदी ...१९३१	डीसनसंघपवो ...	३=॥
१९	रामचद्र	चोरांमन	रामवल	श्रीमा...	राजगाव...	...साजनुदी	श्रीनसंघप ...पीहार	३॥।=।
२०	सेपुसींघ	भगनीसींघ	प्रतापसंघप	वैस ...प... त	राजगाव...			३॥।=।
	चांदसींघ	नीरनैसींघ	लालसंघ	...				

२२	लछमणसींघ	नारनसींघ	लालसींघ	[illegible]	[illegible]		[illegible] वाधा [illegible]	मोती [illegible] ५ मुगा	उ=
२३	नाथु	वीहारी	हेमा	धानाई			१९ फागुणी सन१९७१ सावीइज्ञा	वीहारीदीयां ५१	आ=
२४	जोरावरसींघ	देवीसींघ	भैरवसींघ	चौहाण	[illegible]	३५	सावुणवदी १६-१९९४	०	आ=
२५	अमरसींघ	नौनदसींघ	दौलतानसींघ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	माघसुद दी१३सन१९ १९९६	महोवतसींघरा ठौड़	आ=
२६	गोपालसींघ	नाहरसींघ	मोहनसींघ	सांगर	[illegible]	२०	पुसाबदी दस-१९००	नाहरसींघ [illegible]	उ=
२७	करणसींघ	फतहसींघ	प्रहलादसींघ	चौहाण	[illegible] ५१	२६	माहसुदी १३सन१९०५	केसरीसींघ जोगी[illegible]	आ=
२८	टोडरमल	जीवणसींघ	[illegible]सींघ	सांखला	[illegible]		[illegible] १३स-१९००	गोविंदसींघ [illegible]	उ=

३०	[illegible]सिंह सोधा	राजसोधा	[illegible]नसंघ	नुड्रा	पाडला जयपुर	३२	कातीगवदी १३ग. १९१०	परतापसंघ चोहाण	३॥७	
	रत्नचन्दसोधा	मंदनसोधा	रूपसंघ	लुहा	राजसाथ	[illegible]	चैतवदी ३ग १९८३	मोनेराम चो.	आउ।	
३१	गंगासोधा	कालूसोध	हुजारसंघ	नड्रा	वडोडा	५	फागणवदी ६ग. १९१३	ईशरीसंघ वाप	३॥८	
३२	रामबगस	नानिगराम	पुनीराम	गोकुलदास महा	चांदासर	[illegible]	वसाखसुदी ८. १९१४	हरीबगस	३॥८	
३३	छाजूसोध	मोनसाधा	गगानसंघ	चोहाण	राजगढ	१३	आसोजवद ६१ग ११ १९१८	मोनेराम बापजी	३॥३	
३४	गिरधरसोध	धोकलसोध	फतेसंघ	राठौड	राजगढ	१९	[illegible]मसावद ४ ६१११ १९१७	रूपनाथ संघ ॥॥ जी	३॥८	
३५	सोहनसोध	मघसोध	भेरसंघ	चौहाण जयपुर	[illegible]	६	आसोजवद ६३ग [illegible] १९२०	रामलाल भाई		

३६	मेलासांघ	[illegible]सांघ	[illegible]सपे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]वदी ११८.१९७१	[illegible]सपे नानाफोतरु [illegible]	आन
३७	बलूसांघ	मंगलसांघ	मामोसपे	धारावृ	[illegible]	[illegible]	सावण वदी १३/८.१९७१	वरीसा [illegible] जा[illegible]फोतरी	आन
३८	[illegible]छमणसांघ	गिरधरसांघ	गिरारामण	चंदैल	धमरैडा	३५	जी[illegible] ८.१९७१	गा[illegible] सपेगा [illegible]	३
३९	नानदारा[illegible]	[illegible]	लालचंद	[illegible]	राजगढ़	[illegible]	सावण वदी ८.१९७१	हसनबाप बापडी	३[illegible]
४०	भरथसांघ	बंसालसांघ	[illegible]सिंपे	[illegible]	राजगढ़	७६	दुजा जेठ वदी [illegible] १९७१	[illegible]	३
४१	[illegible]सांघ	सदुपसांघ	[illegible]सपे	नुडा	मा[illegible]	७१	दुजा जेठ वदी [illegible] १९७१	फुलसपेचो [illegible]	आन
	घांसांघ	भुल्लारामसपे	संपतसपे	सौभाग	जैसपुरा	[illegible]	[illegible] साढ वदी ३ [illegible] १९७३	[illegible]	आन

४३	गोकलप्री. पुर्न्या	[illegible]राम	मनसुखराम	ब्राह्मण	रामपुरा	३	[illegible] १९८३	गंगासहायप्री. [illegible]	३॥
	सरदारसींघ	समरथसींघ	जागासन	राजपूत	सुरैपुरा	१५	[illegible] १९८२ [illegible]	[illegible]	३॥
४५	भवानीसहाय	बलदेव	प्रितोराम	ब्राह्मण	मांचाडी	२६	[illegible] १९८०	[illegible]	३॥
४६	रामचंद्र	मोतीराम	[illegible]	मीणा	राजगढ	५	[illegible] १९८१	मोतीराम	३
४७	रामकंवार	सोनाराम	गंगाविसन	[illegible]	राजगढ	२०	[illegible] १९८२	[illegible]	३
४८	सोहनलाल	छाजूराम	रामदयाल	[illegible]	राजगढ	१९	[illegible] १९८५	[illegible]	३
४९	नसीरदीन	मुरादबक्स	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नं	नाम	पिता	दादा	जाति	ग्राम	उमर	तारीख	...	...	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५८·१९७७ तारीख छ	[illegible]	(५)	फागणवदी ६ सम्वत् १९२६
५१	रामकुमार	समरथमल	धनीराम	ब्राह्मण गौड़		१९	फागणसुदी १७·१९७६	[illegible]	३॥	
५२	मोहन	छाजूरामजी	रामलाल	ब्राह्मण तैलंग	राजगढ़	१९ साल का	आसोज वदी १०·१९७७	पु. जुगीलाल तामलाई आप गाँव नोमोहफालेडा	३॥	
५३	हरखसांध	नैणसांध	नीलमस	मोची	[illegible]	२१	वसाख वुदी २८·१९७७	[illegible]	३	
५४	फैजुल्ला	मदारी	छैलोलजी	पठाण	राजगढ़	१९	मगसिर वदी १०·१०८	[illegible]	३॥	
५५	जालगराम	चुनीलाल	गोरधन	ब्राह्मण मथाणी	छाजूराम पुराण	२१	असाढ वदी ११·१९७९	छोटे परधान	३॥	
५६	गणपतराम	नंदुराम	धासीराम	कुम्हार	राजगढ़	[illegible]	भादवा वदी ५८·१९७०	[illegible]	३	

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]









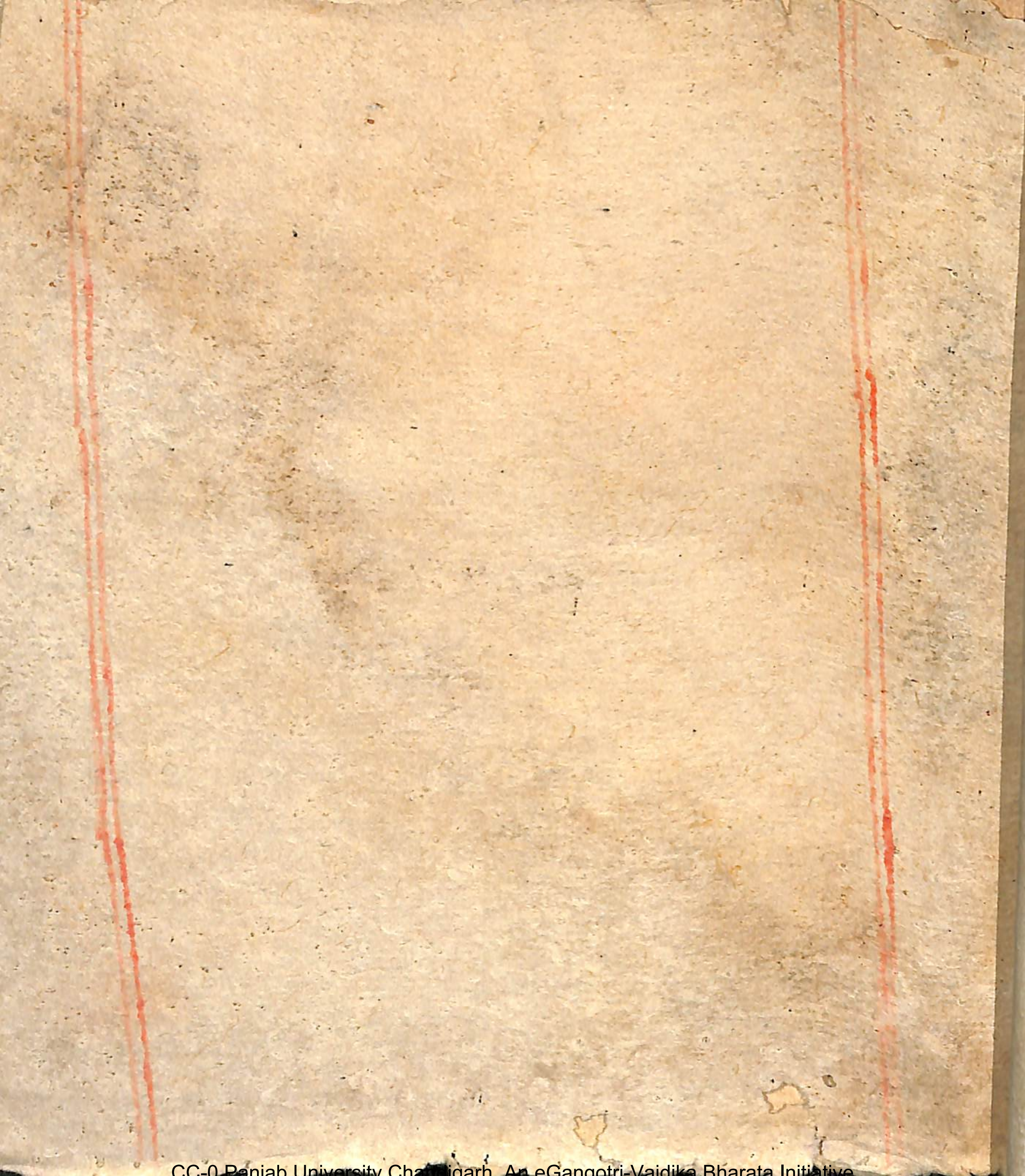


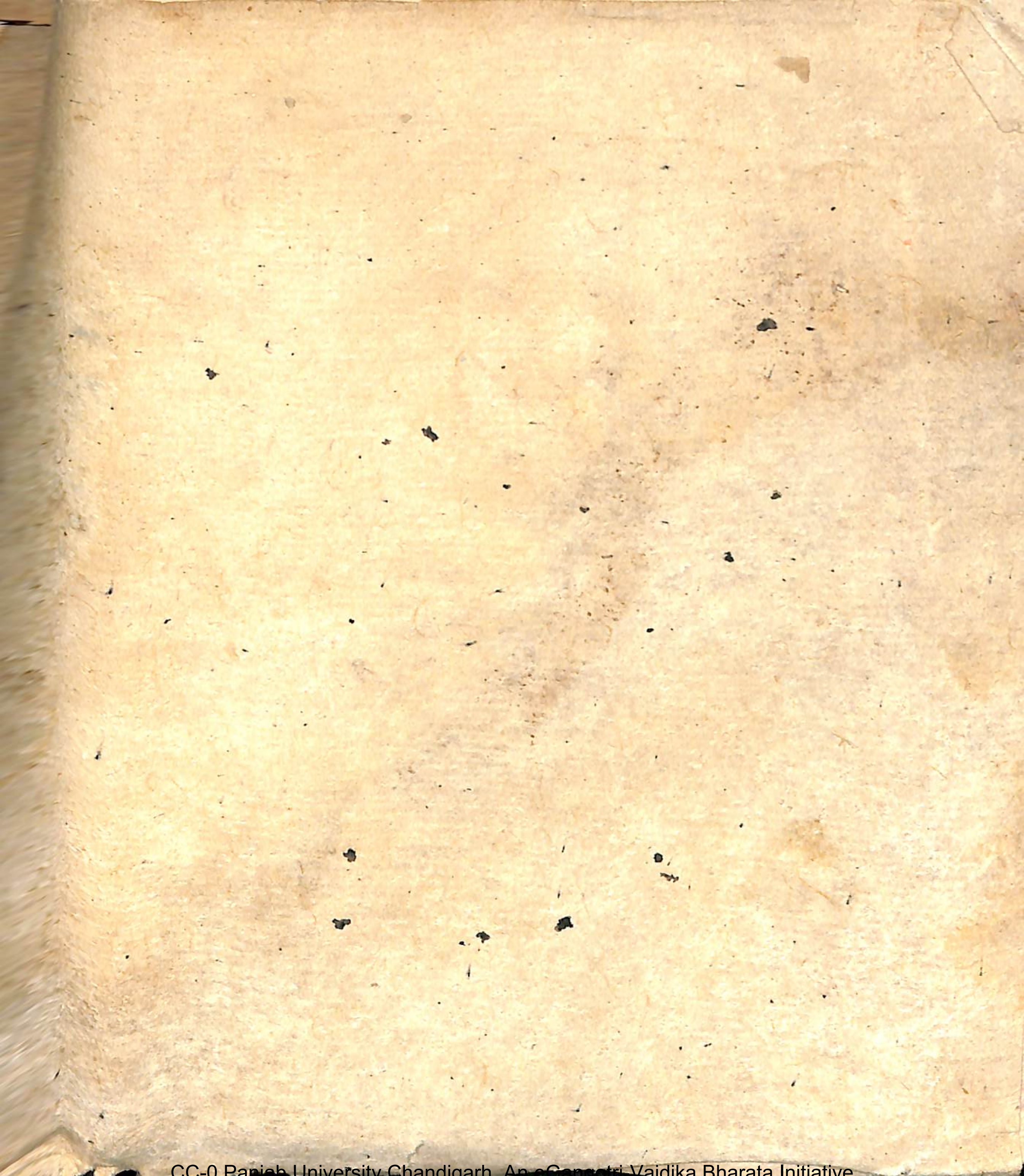




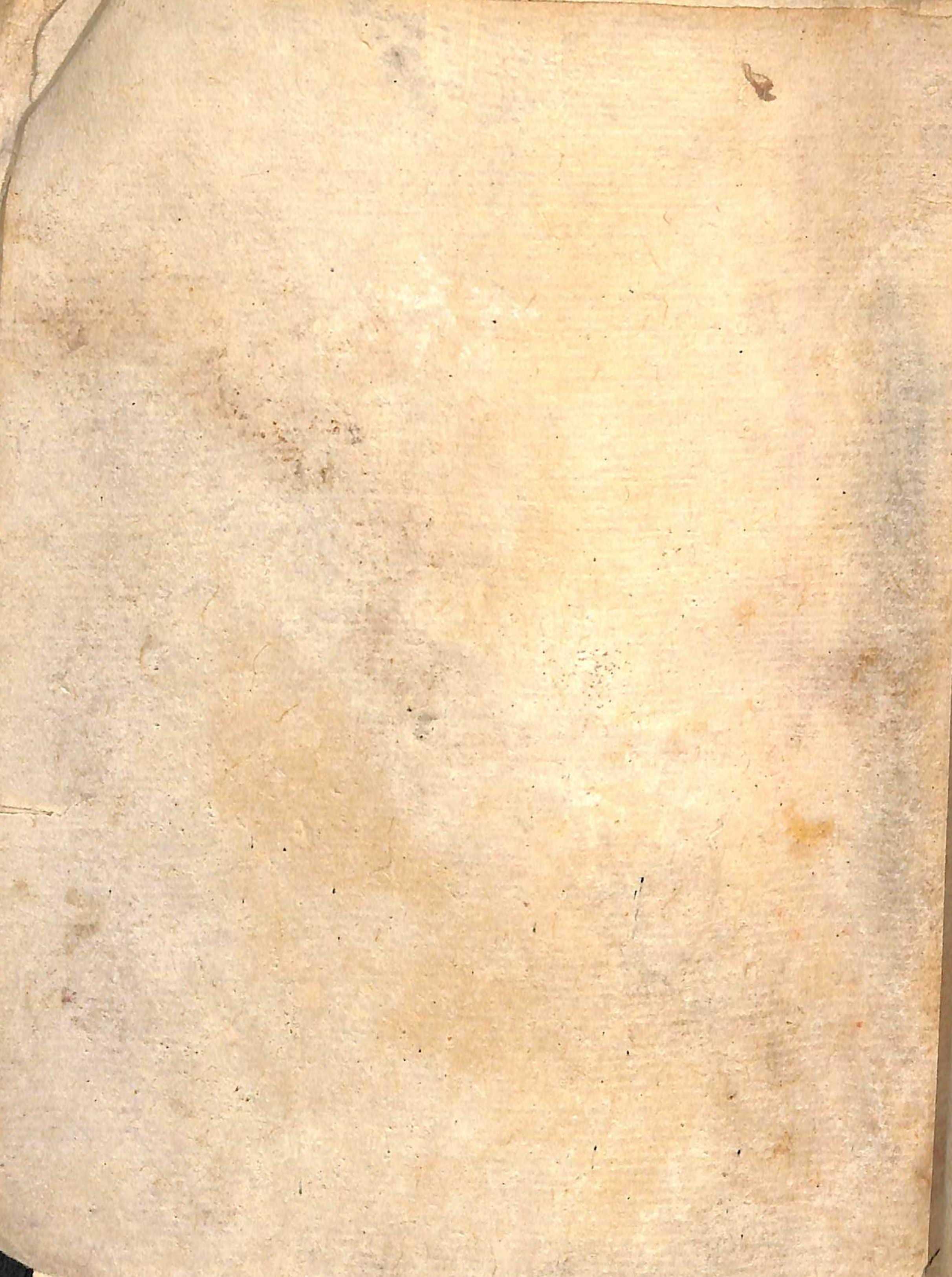












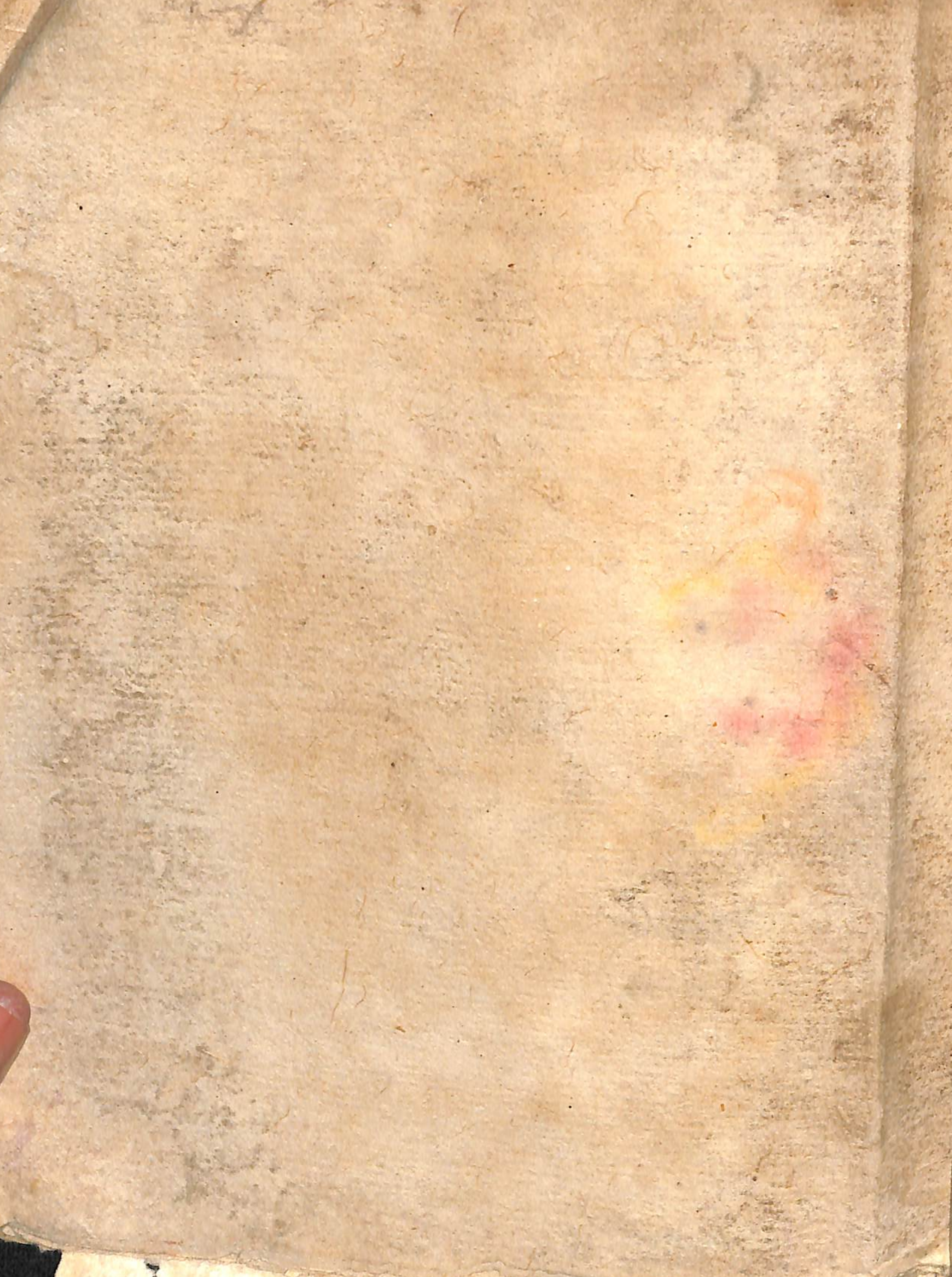






















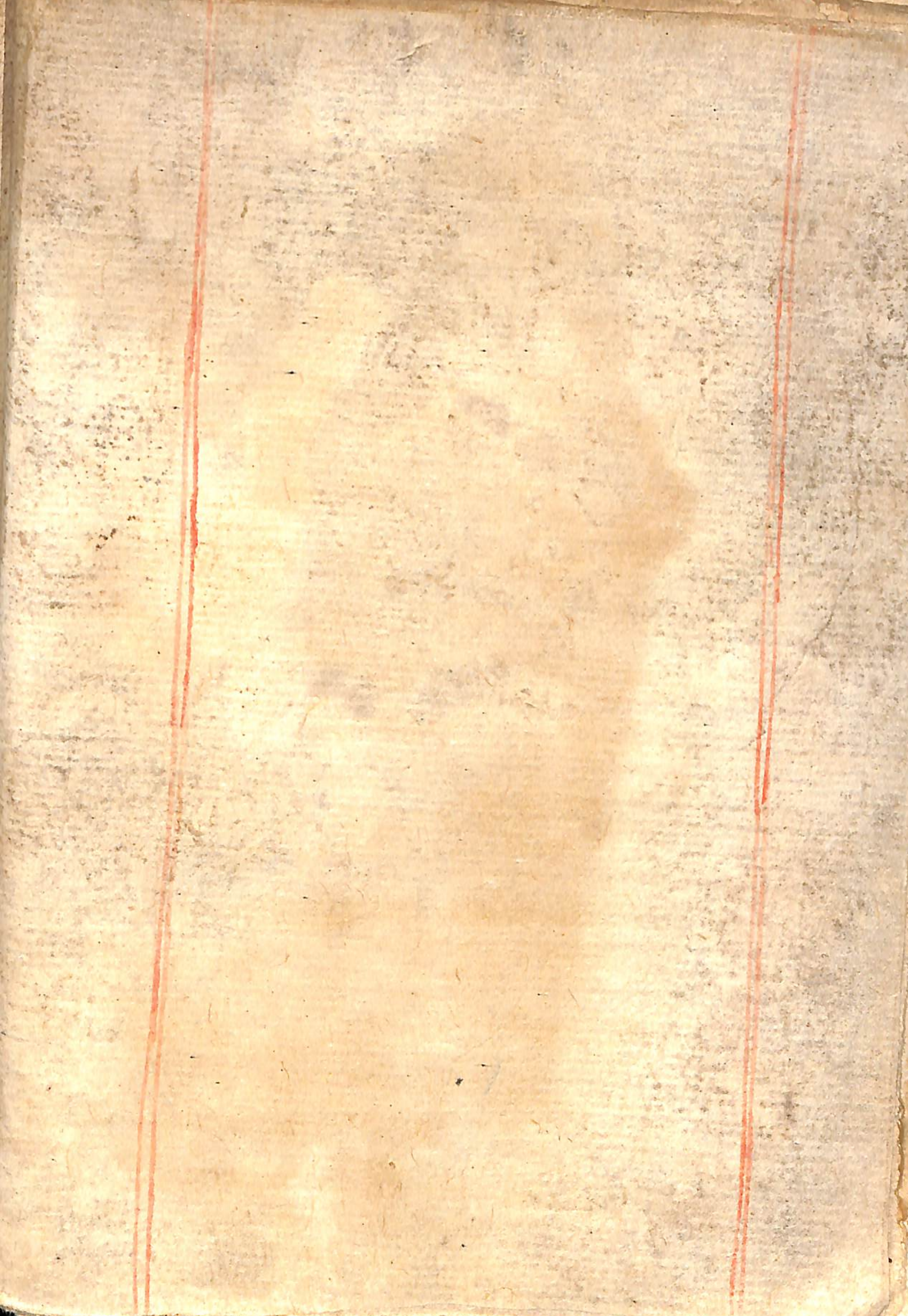




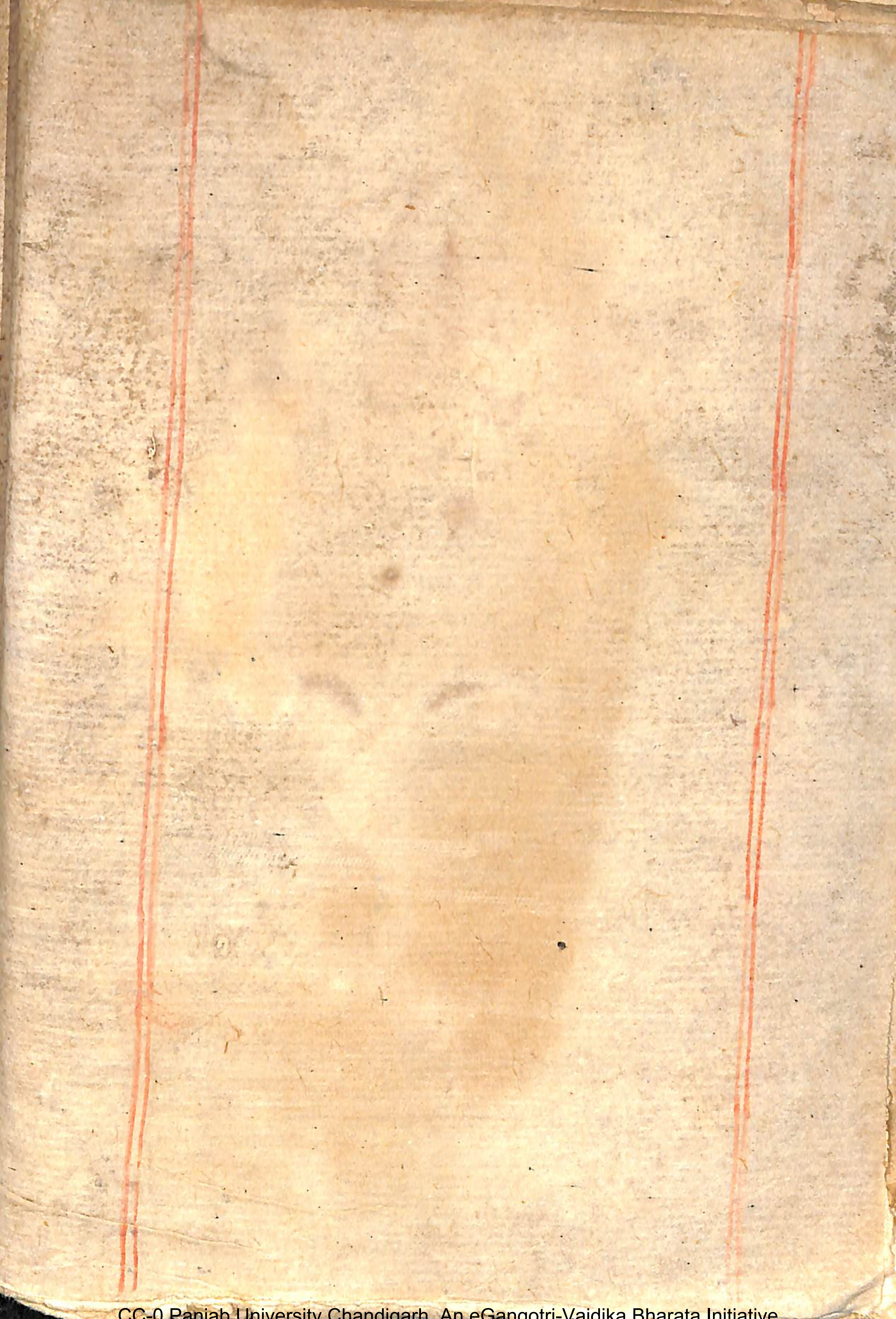


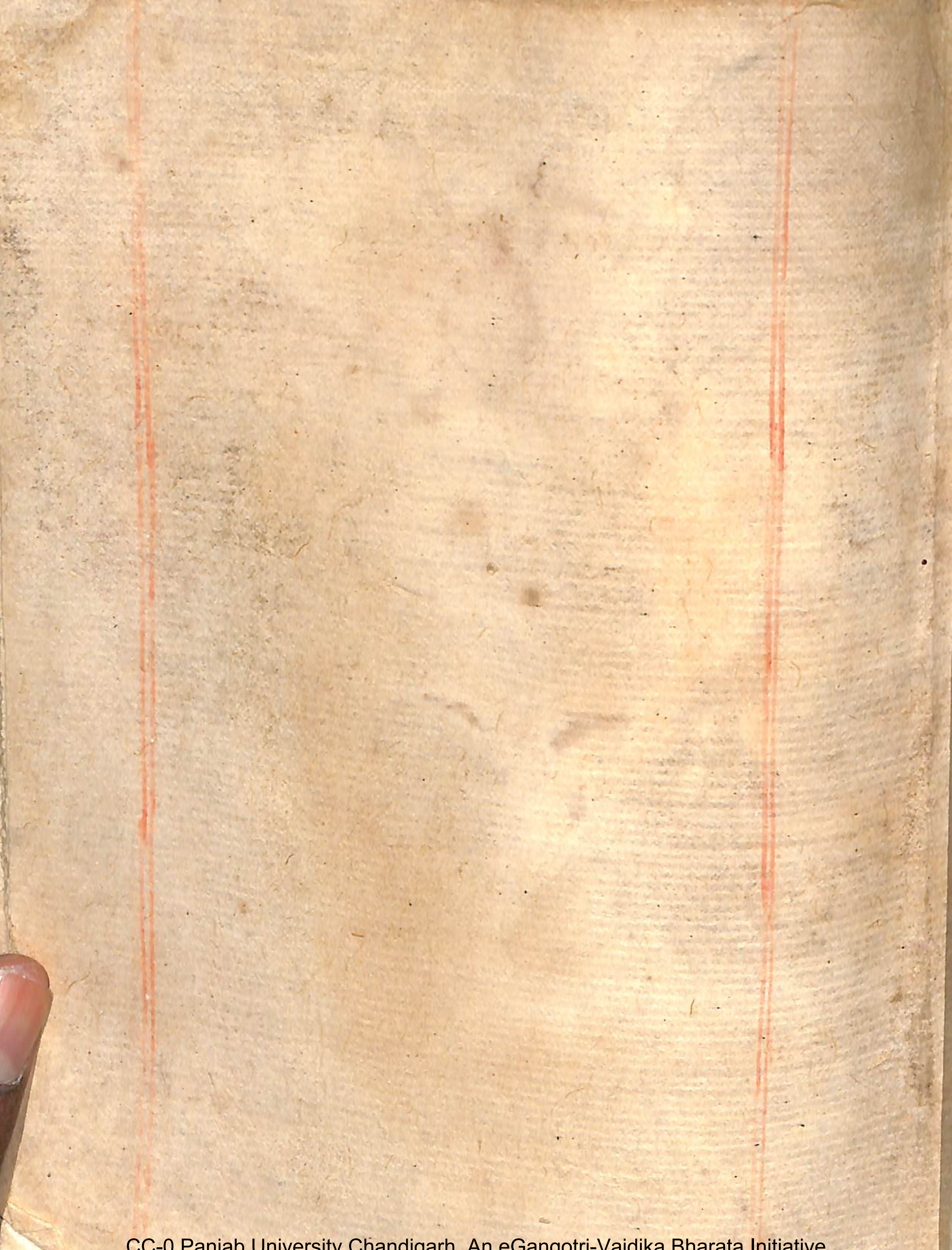


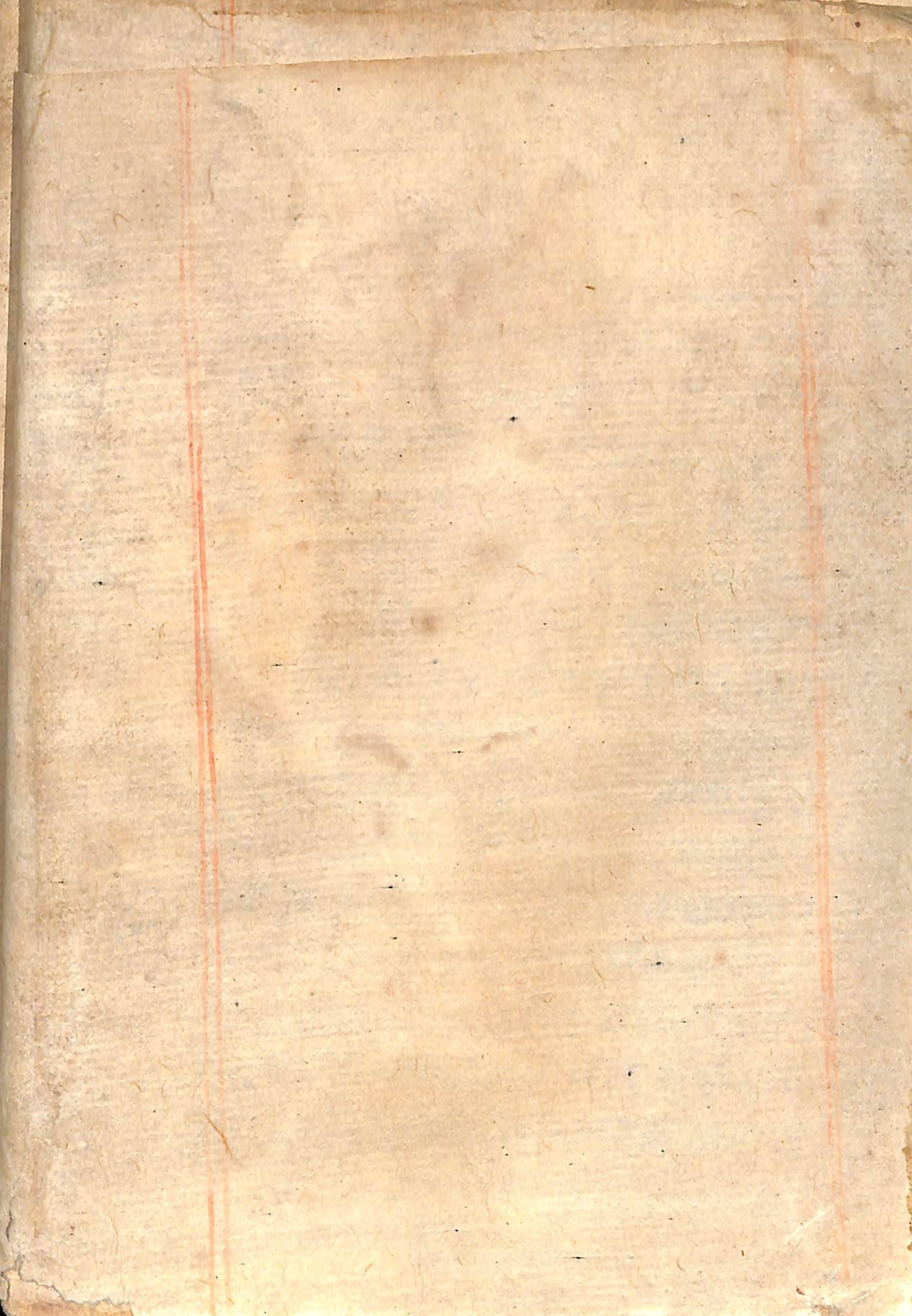












काव्यरसापूर्ण

देवदत्त कृत

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथकाव्यप्रकाशलिष्यते॥ तत्र छायाकाव्यरसायनलिष्यते॥ दोहा॥ इंदुकलितसुंदरवदन मनमथमदनविनोद गोवरधनगिरिजावनविहरनगोपतिगोद १ देवचरितगुरुदेवकी महिमाकहिजगभोनः अघअजगरलीलनतरु जियतनिकासेकौन २ श्रीगुरुदेवकृपालुकी कृपांसुबुद्धिप्रवीनसमीप तिमिरमिटैप्रगटैहृदयमंदिरअनुभवदीप ३ ऊंचनीचतनुकर्मबस चल्यौजातसंसार रहतुभव्यभगवंतजसुनव्यकाव्यसुषसार ४ रहततनधरबबामधनतरुवरसरवरकूप जसुसरीरजगमेंअमरुभव्यकाव्यरसरूप ५ सबदजीवतिहिअरथमनुरससमयसुजससरीर चलतुचहूंजुगछंदगतिअलंकारगंभीर ६ हरिजसरसकीरसिकतासकलरसायनसा

काव्य॰
१

रजहानकरतुकदर्पनायह[illegible]र्थसंसा
र॥७॥कवित्त॥जानियैनजा[illegible]पहिचानि
येन[illegible]आनत[illegible]तीतैंदिन[illegible]नियैनकी
सोपहिंजानुहै[illegible]
[illegible]अर्थानह[illegible]दराकेन[illegible]
त[illegible]जानुहै[illegible]
बलूलाकोईवालीदीत[illegible]
जानुहै॥८॥प्रथमशब्दार्थनिर्णय॥
सबसुमनिम[illegible]तैंकहेलै
अर्थ[illegible]भावभूषन
काव्यसमर्थ॥९॥तातैंपहि[illegible]
कीजेअर्थविचार॥सुनह[illegible]सार
वकविकाव्यसुश्रुतिसुपसार॥१०॥अ
र्थभेद॥सबदबचनतैंअर्थकहि
येंदेसीमुहैंचित्त हेदोउवाचकवाच्य
हेअभिधावृत्तिनिमित्त ११ [illegible]
कछुप्रयोजनअर्थसामुहैंभूल तिहि
लटयगहैलीक्षनिकलक्ष्यलक्षनीमू

रामः
१

ल १२ समझैं कहैन फेर सो हलके औरै इं
गप हू [illegible]ंजना धुनि लिये दोऊ व्यंजक
वंश १३ तिहू सब्द के अर्थ परती न्यो ह
[illegible]म तिनहू तान्यो हत्ति पर धुनि
[illegible]रजिन्न १४ जैसें भुवक आष
[illegible]गंभीर ते २ नै
[illegible]तत पद सहजैपौं कीर १५
[illegible]हीसब्द जैसें वाचक व्यंजक
[illegible]र्थ के अर्थ हू तीन्यौं करत
[illegible]पर्यचौ घो अरु यत्ति हू
[illegible]केवीय अधिक मध्य लघु वाच्य धु
[illegible]मनीव १७ निज निज का
रत सब्द इक तीनि अर्थ तिहू भाँति देव
प्रकासत चित्त गति अपनी अपनी पाँ
ति १८ कामधेनु सो काव्य है सब्दार्थ रस
दूध सु[illegible]माबनुभोगत सुमति वचन
सुधानिधि सुध १९ सज्जन सदेह रसा वा
व्यब सज जग जग जीवत धीर कालसर्प

काव्य.
२

मुख्य अर्थ ही वाति सपालिसरी. ॥ २० ॥ अ
थ त्रिविध शब्दार्थ वृत्ति इ[illegible] लक्षणा ॥ वा
चक शब्द वाच्य अर्थ जथा ॥ कवित्त ॥
ईजु ल गृखंड खंड सीत ऐंस ह[illegible]
डल चवारी चंद्र मंडल की [illegible]
तरह लाल लनके जाल ल[illegible]
वाहि रजु झाई जगी जोति [illegible] की
बरनति वानी [illegible]
जो सरमा रानी गदी रमन की ओर
देव दिगपालन की देवी सुदा [illegible]
ग कुराइनि के पाइनि पलोटती ॥ २१ ॥ दो
हा ॥ श्री राधा श्री कृष्ण का प्रभु [illegible]
केत । वाच्य वाचक वचन के [illegible]
केत ॥ २२ ॥ अभिधा यथा ॥ यां मख्रिनु पां
उडे परे रैं भुर यो रिलगि धाम धाम धु ध
निके धूम धुनियत है कस्तूरी अलरस
रचो याम सघन सार दीपक हजार नि
के अधावलु नियत है मयूर मृदंग । रा

राम:
२

गरंग कैत संग निमैरुं प्रअंग गगो पिजु के
गुन गुनियत है। देव सुख साज महाराज
ब्रज राज आजु राधा जू के सदन सिधारे
सु[illegible]है। २२॥ दोहा॥ ईहा वाच्य वा
स[illegible]लक्ष सभि मुख गर्व। व्यंग
से[illegible]मिवाक्य। अभिधा तहां अपर्व
२४। [illegible]के अर्थ येनी न्यो अमोल प्रात
ये[illegible]क [illegible]तजा कोअधिक अदो
[illegible]॥ अथवा॥ कवित्त॥ केलीनन।
[illegible]लन धूं ईन्ह ही गुन आगरि सौंई
नगो नैं। दे[illegible]कोचव[illegible]मोचनि क्यो मृग
[illegible]चज कै [illegible]ल चोनैं। पीकौंप।
[illegible]भिरु कू बले हू बल सु पत याम
थमोलैं। मानके मं द्वि रूप स गुरु रंद
रसील सलोनैं। २६॥ इति वाचक शब्द
वाच्य अर्थ अभिधा वृत्ति॥ अथ लक्ष
ना॥ दोहा॥ रूढि लक्षना व्यंग्य विनु ए
क प्रकार बखानि। द्विविध प्रयोजन लक्ष

ना पुष्ट मिलित पइचानि ॥ २ ॥ अथ लक्ष
णालक्षणाभेद ॥ वाच्य अ[illegible]तौ टि लक्ष्य
ताही लक्षनिकसे । रूढि [illegible] ज [illegible] यत स
न: [illegible] नि: सुविकसै । रूढि एक विनु व्यंग
प्रयोजन सुष्ट मिलित [illegible] अजहत जह
ता बोध स: [illegible] ष्य
[illegible]सानक[illegible]चा [illegible] रै
वं [illegible] अष्टनि [illegible]
यपहु ॥ ३ ॥ दोहा ॥ उप[illegible]
अजहत जहत सुभाउ । सारोपा अध्यवसा
नकि विरोउ है है भाउ ॥ ३४ ॥ लक्षणालक्ष
ण दोहा ॥ आप जनावै औरको कहै औरि
कै हेक हि भाउ उपादानलक्षन उदै
अजहत जहत सुभाउ ॥ ३ ॥ सा[illegible]पावि
षयी विषय निकसत उदै निदान वि
षयी के भीतर विषय जहाँ सु अध्यव
सान ॥ ३ ॥ सुषभेद चारयो कहै मिलित
कहौ षै भेद व्यंग सुगूढ अगूढ षट दु

गुनहोत[illegible]मेद ।३२। इहीविधिबारहअंग
जुतएकरूदिगभव्यंग । तेरहभेदसलक्षना
रूदिग[illegible] [illegible]संगम ।३३। उदाहरनरूदि
यथा ॥ कवित्त ॥ दोरीफिरैघरत[illegible]रहू
[illegible] [illegible]लालखुलागे । रीलय
[illegible] [illegible]मिलिअंगनिकेरंग
[illegible] [illegible] [illegible]नुहोसग
[illegible] [illegible]मुजानैं । स[illegible]
[illegible] [illegible]सुदियानवरैकहूका
रकेआगे ।३४॥ दोहा ॥ कालआलसनमु
खदिया[illegible]नवात[illegible]सिद्ध । ताममवरन्यो
[illegible]मुलक्षितुप्रेमसमिद्ध ।३५॥ इति
रूढलक्षनाकवित्त ॥ दीपसमीपनसूकै
कहुनसुनैसमुझैनकितोसमुझाऊं
प्यासमरैङ्गनीरभरैनंहिनीदपरैंउंज
गेनजगाऊं नारीगहैकिनिकाजनैक
कहैकिनिऔषदिग्याखिवहाऊं बेदन
आइनिवेदनदेवरहेदिनरैनिसुवेदन

काव्य.
४

पार्त ३५ ॥ दोहा ॥ जदपि रूदिनारी गहोत
रुदि श्रय [illegible] ॥ अवल [illegible] पी
[illegible] मोह [illegible] रिसं [illegible] ॥ अथ
अजलक्षना के चारि भेद ॥ तिनमें प्रथम
शलक्षना अजहत स्वभाव यथा क
वित्त ॥ भेरभई हरि आउ तें [illegible] कए स
भे आली नैं के [illegible] ॥ [illegible]
ला रस के लि अकोली ये के लि के भोन
नवेलि कै पाइ कै भो [illegible]
तरा इक छु कसिसा [illegible] कै
ये च परी दई दो [illegible] व
सरोज [illegible] ॥ दोहा ॥ [illegible]
कमलनि [illegible] मलमी जे [illegible] ॥
अगर अयो जन प्रियमिलन [illegible] ।
जके पाज ३९ ॥ लक्षन लक्षना जहत
स्वभाव यथा कवित्त ॥ जानि परयो जाव
नु ज्ञना यो है मनो जज कजग [illegible] जोति
अंगवा दति नितै नितै ह्वैं हसि हेरि हेरि

४
राम:

नैनी [illegible]त्तसोहत्तोहत्तै । साखीदिनचारिक
तें । [illegible]जिध्या[illegible]चाहे । [illegible]
देषतिजौं[illegible]तै । [illegible]नभोलनि[illegible]
[illegible]सरोजनिकीतरलतनाइयातितोरन
तितैतितै ।४०। दोहा ॥ नीलजलजतोरन
बरनि । श्रमसईद्रुगपाँति । कौतिकरारअ
[illegible]तालजीक[illegible]लैमिजः काँति ४१ । [illegible]
[illegible]लक्षनायथा ॥ कवित्त ॥ कौ
[illegible]चपलासुरचापजुग[illegible]
[illegible]के । [illegible]रबडेवरसै[illegible]स[illegible]हि
रहै[illegible] इयहि जादौ । देवसमी[illegible]
[illegible]दुजियेधुनि[illegible]के[illegible]
[illegible]कादौ । तारेकुलैनघिरीबरुनीघन
[illegible]भएदोउसावनभादौ । ४२ ॥ दोहा
विषयीपावसकेविषयरोपेनैननिमा
ह । अर्थमिल्योहहिनिकटही । लपनुम
योजनदाह । ४३ ॥ अथ[illegible]साध्यवस
न लक्षनायथाकवित्त ॥ देवमैसीस
वसायोसनेहूकेभालमृगमदविंदुरो

येपाक्षसके विभय विभ्रईनेननि माहकेभा
ष्यो। कंचुकी मे चुय स्यो कस्यि चो या लगा ई
लियै उरसौं अभिलाष्यो। ते मध्य नलग्
है ... स मूरति मनासिग रूकै चाष्यो।
सावरेलाल को साईरा रूप मे नैनानि को
कजरा करि राष्यो। ७७। दोहा। अजना
दि विष थिति नियि थ्या वि दै ... ष्या अष्यो विक
ष। लस्सल्तिन्मय ता। निकै ... ष्योवस।
नासुष। ७५। इति श्रुद्ध प्रयोजन ल्द
नामेद। अथ मिलित प्रयोजन ल[illegible]
नाभिभेदय था। मि[illegible]। क
वित। श्री प्रम ध्व पहरी। नस जो ...
पञ्चालनि सो परिवेवी। देवत ...
हूपि उप अ ... पम हूप मिले न हू ... दे
व उरायै हू जो ति सो हो ति अभि ...
गन आगि अगोवी। ७६। दोहा। जे व उप
हरी सद्दस गुन। कान्ति कपु न्धो शक्तिः।
विरह निवेदन प्रयोजन विषयी विषय
मिलाति। ७७। अथ मिलित साध्यवसा

॥ यथा ॥ कवित्त ॥ रूप रस रूप समुद्र मथो
मथ मथ ऊद्र सुरासुर रूलरवाउं । केर हो या लिप
सारथ [illegible] सचो सतु मैं हं कवि सौ रत्नाउं
देवा दृगा [illegible] नि सो [illegible] जिग [illegible] पर
लैपचतां ई । स्यौ बनु था [illegible] था [illegible] सु
धाधर मा [illegible] सुधा अववोई ॥ अथ दोहा ॥
विष [illegible] । विषयी [illegible]
न [illegible] तिन अर्थो लट हीं [illegible] योज
न सुप्रीवीन ४९ ॥ यथा वा ॥ कवित्त ॥ [illegible]
[illegible] जालक हू स्तुति सा [illegible] देव
सुना [illegible] । माधुरी सिधु [illegible] माधुरी सा
[illegible] सा सुधा धरी सपे । उपम
[illegible] निरूप निता गे अहू पलके
[illegible] । मे बंधे वेल पत्ते सिंपलो । सुषपो
[illegible] री सबिपे सापि परूपे । ५० ॥ दोहा ॥
। विषय अमित्र गुन रूपले । विषयी अम्ह
तबीलीन । मिलत अपंजन सराहृत्ति
अर्थ वरानारिकीन ॥ ५१ ॥ इति मिलित
लक्षन ॥ द्विभेद ॥ अथ शुद्ध मिलित भे

लक्षण दोहा ॥ न्यारो निश्चित पदारथ एक भा
व मे आनि । कहियै काव्य प्रयोजन सो उप
चार बखानि । ५२ । शुद्ध प्रयोजन आदि वि
धि । तिर्य्यप चारि निभिन्न: । कुविधा मेलि उ
पचार मिलि अर्थ समर्थ अभिन्न । ५३ ।
अविषयी अरु जे विषय ते अरु औरो
उपचार । एक भाइ अप्रात उपचार ग्ध मिलि
त अधिकार । ५४ ॥ इति लक्षण निरूप
जना ॥ अथ अगूढ व्यंग्य लक्षना यथा
कवित्त ॥ मैं सुनी काल्हि परोस लगि सासु रे
साचेहू जैहो: कहौ सखि सो उ: । देखन है कि
हि भाँति मिलै अब को जानै काहि कहां क
ब कौउ: । चलि तौ लै हूं भट संग स्याम के
आप की निसि आए हैं वोउ: । द्वैं अपने घ
र दति हौं घर धाइ के धाइ हूं रौ तुम दोउ:
५५ ॥ दोहा ॥ मुख्य अर्थ इक पूछनो । लक्ष्य
क पटतर मेल । अगूढ व्यंग्य में नेंन लनउहू
त्तीय न संमेलु । ५६ ॥ अथ गूढ व्यंग्य य
था कवित्त ॥ शत्ति भई न अथै दिन सूरज

पछिमतें उडि पूरब वर्तमै। घाम घनो घर रवा
हि सघरा बस्यो जोग जुगल कैं अंग्यो।
भाषे भयकारि चहूं दिन नैगा सुचके। दे
को वनकै मन चूंग्यो। चक्र निरे वचि ते
विधि चक्र निरो पहिदे भिउ भेसु पसं ग्यो
॥५८॥ दोहा॥ मिलित लक्षना सब्द सावि
धि कहैं मनि हुधोस। विरह भये जो व्यंग
सुलन सहै जो सु ॥५७॥ इति लक्ष
इति॥ अथ व्यंजना॥ कवित॥ चोर मिही
चनी कौ भसमोहन मोहीन पावो फिरे व
सुधाके। रेखे जो देव कुल निमे मिलि हू
लान मे ले रहो वह हथा को। केसरि चंदन
दन मे मनि कुंदन मेतन नमे नउ धाके
कै मकरंद हू रहे अरविंद मे इंदु के बिंदु
मंदिर विंदु धाके ॥५९॥ दोहा॥ वाच्य कौ
लक्ष्य लघु मान व्यंग्य सुप पर्व। ल
हा व्यंग्य सुकुमार ताप्रेम रूप कोगवें ॥६०
अथ लक्षना व्यंजना के सकल भे
संकर उदाहरन कवित॥ किच केवि

सु

फिरि दै चुरि। आंकु लसी उमीदि तुलसी वनु
ल्हौ।। दृवसिढी जमुना सिदि व दिदीन्यौ।
मनोरथ को हम चून्यौ। बीच पगै पगकं
टक के सुतो कंटक इनहि आवन तउ औ:
पाईनी चाउ चिते चित्त की गति रहहू के
उपजै सु पढ़नौ ८३।।दोहा।। सकल भेद
लक्षना के औरव्यंजन। के भेद। तातप
र्ज प्रगट तुलहौं उपके उत्तम सुखदेव देः
इति श्री सब्दरसायने देवदत्त कृते सब्द
अंग विवेचन तात्पर्य वृत्ति निरूपन नाम
प्रकासः।।९।।दोहा।। शुद्ध भेद तातहू वृत्ति के
शब्द अर्थ समुझाइ। अब संकीरन भेद ते
हू वरनन वृत्ति बनाइ।१।।कवित्त।। शुद्ध
अभिधा है अभिधा मै अभिधा मै अभिधा
है अभिधा मै लक्षना है अभिधा मै विंजना
लहै शुद्ध लक्षना है लक्षना मै लक्षना है
लक्षना मै विंजना है लक्षना मै अभिधा
कहै शुद्ध विंजना है विंजना मै विंजना
है विंजना मै अभिधा है विंजना मै लक्ष

नागहैं।तातपरजारथ्यमिलितभेदलगरह
र्थपरा... ।...नंतसबदारथ्य... गहैं।
२॥सुधअभिधायथा॥देषिदेकोदुरिदौ
... ...कीपैनितेदोलिरिआ
...।...देवैंपरैंचित्तचैननिनै...नि
...जघनिधिआवति।जोपियरैंमि
...निग्रै...बभेत्तभेक्रिपरैंदिरिआव
ति।...नेकपिओगगरोगह
दादगिरागिरिआवति।३॥दोहा॥पि
छितायोलक्षतुकहूविजनुहेअभेला
म।वाचकशब्दसमर्थताबाच्यअर्थहै
भाष।४॥अभिधामेअभिधायथाक
वित्त॥लाजनिमितनिमित्तगुनोनि
तानिर्मलचित्तसुचित्तनिहारोप्यारी
नप्यारीउजारीज्यौंचंदत्तदेवजूसोच
निकोपचिहारो।अंतरहैनाहिनेहनि
रंतरअंतरबाहिरकूपनिहारो।दर्पन
दूसरादेबिबेहीकोपदेषो।दूहूंदिसि
देषनहारो।५॥दोहा॥अभिधावाक्य

काव्य. सषीकोग्याभासंकेतनहानि [illegible] रसमन
८ र [illegible] वचरिशाई [illegible] ॥ अभिसाम
आलंबना॥कवित्त॥साहेतैंफूलनिसेज
बनाई फूलनिफूलनिकेलिबिलो
[illegible] केलियेहोसुघसे
जकेपा [illegible]
[illegible] मिला [illegible]
हि [illegible] ॥ द [illegible]
[illegible] हूलेचु [illegible] ॥
दोहा॥ अभिसाला कासु [illegible]
कोप्र [illegible] सु॥ अति [illegible] ॥
त्रियस [illegible] ॥ अभिसामप्र
विंजना॥कवित्त॥जेतीनडीनैं [illegible]
सी [illegible] हनिरूछमणमनसछमसीहैं॥ दे
[illegible] बातनिहीसोहितैतिसीसौं [illegible]
सुचीतोतिनिरीछें॥ लाजकीग्राचनिपा
[illegible] राचनिनाचनचाईहोनेहनछौ
[illegible] हभईफिरोयाचितमेरवीछाहभईफि
रे. नाहकेपीछैं॥ ६॥ दोहा॥ अभिसाग्री ८

पुरीग्र[illegible]सोकहहतिनाहकोनेह ।बिंज
नबिरहग्रलापमु[illegible]विवसनस [illegible]
तिदेह १० ॥इतिसंकीरनग्रभिधा[illegible]
ग्रथसंकीरनलक्षनाहूति॥[illegible]
[illegible]॥कवित॥[illegible]तीव्रघंरौ[illegible]
री[illegible]नेतर हे[illegible]भगँ हे
मेम[illegible]कीकें दि[illegible]ने
[illegible]वीर[illegible]
वीन[illegible]सिकमा[illegible]
ले[illegible]भई है ग्रकेलीतजीचे
ली[illegible]यां ।[illegible]सुरंगकीजि
येसजोगिनिमुद्रा ।न[illegible]केवेगीये
[illegible]निकीग्रखियां ॥११॥दोहा॥ग्रा
[illegible]केसंयोगमैकहेजोगकेसाज ॥
[illegible]लक्षनासोलखैदरसनविनाग्र
काज ॥१२॥ सिरग्रांसूग्रंजनविना[illegible]
टककोएवल ।तालपयेंग्रगटैविना[illegible]
[illegible]बृथाबिरत्त ॥१३॥यथा॥कवित॥मी
छेतिरीछेकराछनुसोंइलवेचित्तबेदीत

लालललचौहैं। चौगुनेचिनु [illegible] केचि
लचा [illegible] बदेहैंदवा [illegible] चौहैं। [illegible] भो
मोलपावुलग्योक [illegible] हि [illegible] ।
गनिसौहैं। जीसेल [illegible] गेजोजैयेजिनव
ति [illegible] [illegible] [illegible] ।
दोहा। [illegible] [illegible]
कहेसुनाइ। श्रु [illegible]
[illegible] पललागै॥ ५॥ [illegible]
[illegible]॥ कवित्त॥ [illegible]
[illegible] जरिहारी पाइ [illegible]
नकीझीलेर [illegible] ललनवी [illegible]
वपलनलगाएलवयौं [illegible] लनदीनालेव
लनउछलनहार। एसेनिरमोहीसोस
नेहवाधिहोबधाईआपुवीबेवूडो [illegible]
धिबाधासंधुनिराधार। एतेमनमेतें
मनेवेदबदीने अबएकवारदेकैलोहि
[illegible] दिमायोएकवार। २६॥ दोहा॥ चक्ष
रादिपदमहिकैंनासाअर्थनियोग
लक्षालमनकोमारिवोमातपर्यहृद

षोन ॥२७॥ हिन्दि षिली वोहृतिमैतातपर्य
... सार ॥ ... मे
... ॥२८॥ ...
... ॥ कबित ॥ कै ... भातिक ...
...
... ॥ केलिकलवेलीवनवेली
...
हूसौनकियोत्तै ॥ ...
... अधिकअधीरकैअध
... दैवसबहीको ...
... कोकरिकैकेपतिमीबोप
... रसुलीयोतैं ॥२९॥ दोहा ॥ ...
... लक्षनुसबासहृद्य ... करिभो
... चातुर ... विंजनाताहिजताच
... ॥३०॥ अथ ... नाम ...
धा ॥ कबित ॥ वारैकौटिइंदुरसविंदुअ
रविंदुपरमानैननमलिंदविंदुसमकै
सुधासरो मलैसद्धिमालतीकदंब

काव्य· १०

कचजारचंपाचपेटू...सेतवेननिहचै

निहचै... ...

दकोपरमवउदेवअनुकूल्यौ॥ ओरू॥

सौतोकहासरो॥ ससरिसरासरोसज्ञा

...

घ्योनिसव...

...

...

...

ना॥कवित्त॥ ...

येनबातीजोर्ईसा...

२.भहोलोफिर तौ॥ ...सी...

रीजोनहोतीतौकिसोरीसौंकु...

कसीभांतिजीततौ॥ देवज्...राहिटै...

मारोह्याउन्याई कम्ब्ना...हित...चै

तक...लोजचीततौ॥ कोकिलाकेटेरत

जि...लोजीई...तिह...गुनवनत

ईधेतनवीततौ॥ २८॥ दोहा॥ नभ...

[illegible]गामध्यतिअंग[illegible]मोरडेसार। ताह
मेल[illegible]तमुचैर्गौ[illegible]पि[illegible]स। २३
इति सं[illegible]रनलक्षना॥ अथ संचारिन वि
जना: सुद्धअंजनाधया॥ कवित्त॥ हित
[illegible]समु[illegible]थे आ[illegible]मु
[illegible]हा[illegible]नौ। ल
[illegible]सवा। तैं
[illegible]मौ। रे
वज्रत[illegible]विनु[illegible]रसिखै स्यौं ही[illegible]गलसि
[illegible]री[illegible]मभारजो। पतिहित
[illegible]सी आ[illegible]यनीयेश्रात
[illegible]भेपि[illegible]आपार[illegible]धार नौ। २४।
दोहा॥ [illegible]दरधीरा[illegible] चलमैं अंजनु को।
[illegible]कास। सुधकेमिसङ्ग आपनौ।
धुनि मैं कहत[illegible]दास। २५॥ अथ अंज
नामध्य अभिधा॥ कवित्त॥ केलकी के
हतकी ने[illegible]सिक कौतुक तु मधे[illegible]परि
[illegible]गए हो गाडि गात ही मिले[illegible]हिम

म

काव्य॰
११

वह्नितुलदंगसंगहिलेतुं इताडिदाडिमीनुपीले
पाडरकीघाततही।कीनीरसकेलिसांझचूमत
चमेलीबांझदेवसेवती।निमाजभूलेभहरा
ई।हीगोदंलेकुमोदिनीविनोदमाल्योचहूं।को
हकपरछिपैहौपइमिनिकेप्रभातही।२६॥
दोहा॥सापराधपत्तियेपियेकैवीरावीराना
रि॥व्यंग्यवचनसाहजपधुनिसुधीवातनि
गारि॥२७॥अथव्यंजनामध्यलक्षणा॥कवि
त॥प्रानकीसंपतिप्रानपती॥अलिरोइतती
विनतीकरिचूकयो।जोवनुजालसुआयेंन
केरिअरीविरवारिपैरेकितमूको।वेचजरमा
निनिमाजुतजेनसुजानिविहूनकुमानिके
लूकयो।भीकमिलिभहराईगरोघहराईकहो
पियकुकूराकूकयो।२८॥दोहा॥पीउमईउप
देसमिसव्यंजलहितकीवात।तुमचतुरसुपल
क्षनुतहांवोलिविहूसप्रात।२९॥अथव्यंज
नामध्यविंजना॥कवित्त॥वानरवीरवसाये
अटोरनमंदिरमेसुकसारचोविरेया ओर ११

लोईबिलभी[illegible]या इनि दानन कोईकिवारभिरे
या । कौलौंधिरैंघनभेरहैंदेवछ्यौविछुरैकहि
कौं[illegible]धिरैंरमा । मूलेनवागसभूलेनिमूलेईमूले
धरेईनफूलेफिरेया । २० ॥ दोहा ॥ गुसाद्रिकव
हभेदयेनजिकूलमत्तिप्रचलेय नामसमान
क्रियाभियोईदाहरनसंक्षेप । २१ ॥ ताततपर्जयथा
कवित्त ॥ व[illegible]तिचूभिह्वेनवाबिक्रेनाकित्तदे
वहूमिकेहूकूलनिमैंघूमिकेघटिगयो । कौंरे
[illegible]कमतकरैकुचकंउकनिबेलिबेलिको
म[illegible]ल[illegible]रिगयो । ३१ ॥ दोहा ॥ जितपा
[illegible]तिनरे[illegible]लैहुहोर[illegible]कलिगेन । यातें
[illegible]मस्योतातपर्जकछुहैंन । ३२ ॥ इ
तिचतुरविधसंकीरन ॥ अथवृत्तिमूलभेदा
कारनिरूपनं ॥ दोहा ॥ सब्दअर्थतिऊवृत्तिके
च्य.रिव्याभिश्रसेक । मूलभेदऔरौंवऊतमा
तेकहेअनेक । २३ ॥ अथअभिधामूलदोहा
जातिक्रियागुणयदृच्छाव्यासयौंअभिधामूल
येईवाचकरावृकेवाच्यअर्थअनुकूल २४

वाचककोइचहूँमेंसाक्षातसंकेत अर्थवाच्य
सनमुषकैवचनकुअभिलाहेरा २५ ॥जाति
उदाहरन॥कवित॥ मायनुसोमन. २ ।
जावनुहेंद्यितेंअविवेकोउरहीं जो.छावेआगें
छपावकरूछाछिसमेतसुधावसुधा.सवसी
वी नेननिनेउनुवेकाहृदेवबुगावतवेनवि
योगअगीवी एसीयवोलीआहियिअहेकहोवेगों
नलगेंमनमोहनेसीवी २६ रोला जद्यपिल
क्षना चहूरीअनितलावंगपअधिकार. तद
पिजातिपनप्रकृतिमवअभिलाजुरिनवल
र २७ क्रियाउदाहरन कवित गाऊँ. त्रिया
केरूपराधेकोंवनाइल.ईंगोपीमधुरातेंम
धुवनकीलतानिमें रसिकहोकानासोंचलौ
होकंसवाहेंतुमकाकेकहेंलूटतसुनेलाद
धिदानिमें संगकेनजानेगाउगरिउँरानै
देवसामुससवानेसपकरिकेरपानिमें
कटिगयोछलुछेलबालकीविलोकनि
मेंटीलीभईभोंहैंवालजीलीमुसकानिमें

३८ अथ गुनउदाहरन कवित सषीनुकोसु
षुमुनैंसोतिनु केमहाउ महोलु गुरूजनन
[illegible]कोगरूरुहै देवकहैलाषलाषभा
लिअभिलाषपूरिबी केउठेमगनुमन
सपूरूरुहै व्यालमुषविषुज्यौंपीउ पज्यौंप
पीहमुषसीपिमुषमोतीकदलीमुषकपूरू
है ३९ दोहा है विधगुनवरनतसुमतिका
वशास्त्रसेवादि काव्यविद्याचातुरीसमासा
स्वरूपरसादि ४० शास्त्रकथितरूपादिव
था कवित धीधरोघनेरोलाँबीलटैलटेलां
कपरकौंकरेजीसारीमुलीअधषुलीटांउ
वहमोरीगजगौनीदिनउनीउलिहैनीके
लाउवह चंचलचितौनिचितउभीचितवो
रवारीमोरवारीवेशरिसुकेसरिकीआउ
वह ४१ यहसाउदाहरनकवित मोउततेत
सविजान्योनहींवहमोउततेयरआयोहमा
रे पीतपटीकादेमैंलपिटीअरुसांउरोसुंद
रस्वरूपसमारे देवअभैलाषगिआंषिनतैंव
हवांकोसरूपदेरेनाहिंटारे सुपनेमैंचितवो

सिलियोउँहिचौवरीमोवपरषोवनवारे ४१ दो
हा [illegible] तिअहिरीकि [illegible] तिहार गजमुकत
वानि चोर [illegible] दभावऊविधि [illegible] आमूल
चपाति ४२ पतिवतुर्भे [illegible] मूल अ
थलक्षण .मूलभेद दोहा कार्यकारणमहि
शताविदरीसआक्षेप चारि [illegible]
येभेदांतरसंक्षेप ४३ कार्यकारणउदाहर
ण कवित्त सुधाधरसेमुख [illegible] मुख [illegible]
कानिसुधाबरसैरद्दपाति [illegible] पांति
मृनालभुजांकहिदेवलला [illegible] कों
ति नदी [illegible] लीकदलीजुग [illegible] से
नैंनरहेरसपांति छिनैंमें [illegible] वि
छुरेकातियांसिय [illegible] हैकिहि [illegible] ४४
सदसातावदाहरन कवित्त देवपुरेंनिकेला
ननिचानतैंजगचक्रसिवानगहरी: चि
तकेचंगुलमेंअरिकेकरसाइलघाइलहे
निवहेरी: मीजिकेमंजुदलीकदलीलखि
केहरिकुंजरलुंजालहेरी हेरीसिकारवहे
रीकहूव्रजराजअहेरीकेआजुअहेरी ४५ १२

अथवैपरीतल कवित्त भावेहैभ्विसराईभ
रेग्रुकभामिनभांमिनकेमनभाए भागुत्र
डोर्हिहिभामानिकोजिहिभामतेलैरगभौन
वसाए भेगुभलोईभलीविधिसोंकमिष्ठि
परेकिधौकाहूभला:ए लालभलेहैभलोसु
गुनैभलीभईग्याजुभलेवनिग्राए ४६
ग्रालेपउदाहरन कवित्त देवजोवाहीरहीवी
हरैतौसमीरअमीरसविंडुलेजेहै मितर
भौनवरसैंवसुधाकेसुधासुघसुधिकनिंडुले
जैहै जेपैकहूहलिविगुविंदकेइस्मुषी
लषीरंडुलेजेहै राधिहाजोअरविंदहूमे
म[illegible]ंडुमिलैतोमरिंडुलेजेहै ४७ दोहा
क्योसिमईविनसीत्तमिधिसुरतसमान
सिकार गुनमिसग्रोगुनकटत्तअसुवि
रहिनिकरतप्रकार ४८ इतिचतुर्विधल
क्षणामूलभेद अथव्यंजनामूलभेद: दोहा
वचनक्रियास्वरचेष्टाईनमैंजहांदिकार
व्याधिव्यंजनामूलयेभेदंतरधुनिसार ४९
वाच्यलक्ष्यवचाइके गुप्तवाततवैइंगप धुनि

काव्य· निकसेश्रीरेजहाँहृत्तिकिंजनाश्रंरप ५० दव
१७ नविकारउरस्वन क [illegible] त रावरेणाईं [illegible] गो
टलैसेपगगुनरीट [illegible] महावछारैं [illegible] मारी
श्रसतानि[illegible]की हल केछलते [illegible]
मधु [illegible] श्राऊजश्राऊउसऊलभो [illegible]
वज्रचंदुउरनश्रध्यारे रे [illegible] केन [illegible] है
लहि [illegible] पारीतरीछैहसेवरुयो [illegible] ॥
क्रियाविकारउदाहरन क [illegible] मितै
वऊतेरिनभांउतेभेटलभेट [illegible] गो
यभुजभ [illegible] भुजनोधिभु [illegible]
श्रचैचषचाबो लीजीयेलालऊ [illegible] नी
पइकीजियऊजियजाश्रभिलाषौः देव
हमैतुम्हेश्रंतरपारल [illegible] ताविरि [illegible] धरि
राषौः ५२ चेष्टाविकार आ [illegible] मिलि
भेटकयोलगिफूलधरैंश्रनुकूलउदारै के
शवजानितुम्हेंसुहागिलिश्रोवाउलेस
मसांमुषडारैं कीनीसनाथहौंनाथश्रया
व [illegible] रिमोबिनुकोईलनीजुविचारैं होईश्र रामः
सोकुसुपीतमलोंश्रवलातनकोंश्रवला २४

तनुमारे ५२ सरविकारउदाहरन ॥ न
देषतनु मै चितवादियैन ऊतो नेंडु निवाहि
ये देऊ भरे पवरे ज्यों समुकाइ सुका र्ने रा
[illegible] सै पगुधोधैं वस्योम नीकेमें
[illegible] के भासै भरे शोकल उचीछे [illegible] रो
वैं भकैपि मवदेरु पपिये अविस्या
[illegible] सुभ स्यो उवस्यो सुदस्योप ५३
दोल हेषा होवचन निक्रियापियहियल
रु उवादि वै शलातन सोकल जस्व रवि
[illegible] हे [illegible] रि ५५ इति विविति नोंदनि
के भेदंतरस्त्र सेक च्यारि च्यारि संक्षेपनि
थि वरनत सुमति अनेक ५६ तात्पर्य उ
दाहरन पारे शीसे सवडी चतुरैहो वडे गुन
दे वबडी यैं बनाई सुंदरेहो सुघरेहो सलों
नीहो सील भरी रसरूपसनाई राजवह
वलि राजकुमारि अहो सुकुमारिन मा
नों मनाई नेसिकनाइकेने लविनावद
मूरिघेज रु ऐसे बेविकनाई ५६ सिक्षति
सूधे अर्थ सौं वाच्य वचन अपूर्व तातप

र्थपरवाक्यकोप्रियसोंकरज्ञनगर्व ५०
इतिश्रीवाल्मायकेदेवदत्तकविविरचि
तेश[illegible]मूलभेद[illegible]रकार[illegible]र्थोविनि[illegible]
पननिर्णयप्रकासः २ अथ[illegible]रसनिर्नय
दोहा सरससर्वधनस्य मरजान [illegible]
अर्थअसोध नव्यकाव्यहरिभ[illegible]गुह
रत[illegible]नघअघओघ १ चलत[illegible] [illegible]त
गिपरछिद्रेसव्अर्थहतछंद: [illegible]ल
गिलगिवरसनुनलीहरिजस[illegible]मंद
द २ बिनुनरहत्तविनुहीजतन[illegible]
उदपिवहूमोल गुननिगुहेनिधुनजिहि
अविहरतयोरसबोल ३ भावनिकेरस
रसलसत बिलसतसरसकवित कवि
तावसशब्दार्थपदजिहिबससबजगचि
त ४ काव्यसारशब्दार्थकोरसुतिहिका
काव्यहिसार सोरसुरससतुभावबसअ
लंकारअधिकार ५ तातेकाव्यसुमुख्य
रसुजामहिरससतभाव अलंकारश
दार्थकेबंदअनेकसुभाव ६ अथरस

लक्षन दोहा चितुधापितथितुबीजुविधि
होतअंकुरितभाव चितुबरलिदलिफूलि
फ[illegible] बरस[illegible]रससुभाव ७ खेतबीज
अंकुरसलिलसाखादलफलफूल था
[illegible]रस थमरतरुपूबलअमिरसम
ल [illegible]खेतपात्रआरथविधिबीनसुअं
[illegible] सलिलनेहभावसुविटपपहं
[illegible]परिभोग ९ अलंकारशब्दार्थ
केफलफूलनिआमोद मधुरसुजसर
[illegible]भरलरुभमरअमीरसमोद १०
अथरसभेद दोहा रससिंगारहास्य
अरु करुनारुद्रवीरभयानककहिये
बीभत्सोअद्भुतअरुशान्तकाव्यमतये
नवरसलहिये नाटकमतआठैविनुशा
न्तसमेसमैभावनितेनिकसे भाव
निसहितकाव्यनाटकमेकबिसुभन
रचेथाभेविकसे ११ अथरसभावनी
रूप्य रसअंकुरथाईबिभावरसके
उपजावन रसअनुभवअनुभाव

सात्विकरसहललकावन छिनछिननाना
रूपरसनिसंचारीउहलवे येहोतपु[illegible]
रसंयोगहावरसरंगसमुहहवे येहोत
नाइकादिकनिमेवस्यादिकरसभावय
हुः उपजावतश्रृंगारादिरसगावतनोत्र
तसुकविनतु १२ अथरसांकुरथाईभा
वनाम दोहा रतिहासी[illegible]करु[illegible]का[illegible]त
भरूउछाहभयजानु निंदाविस्मय शा
न्तिये नोतिथिभावबखानि १३ ईनते
रसकीउतपति दोहा रति[illegible]दिहोईसिं
गाररसु हांसीवढिकेहास करूनसो
कवढिरौद्ररसु रसवढिकरुतुप्रकास
१४ वढिउछाहतेवीररस वढेभयानक
भाति निंदावढिबीभत्सबढिविस्मय
अद्भुतरीति १५ शान्तिवढेंशान्तरसुमि
लि मिलिविभावअनुभाव शांतिकसं
चारीनुले हलकततनवौरसुभाव १६
जिनजिनतेजोरसवढें प्रगटेजिनहि
प्रभाव तेतेतातारसविषेंहेविभावत्र

नुभाव १७ सात्विकनाम तंमसहरोमेमं
व अरुवेपथुअरुसुरभंग विवरनता
अंासमलयथेशानुकारसंग १८ संचारी
नाम श्रम १ कहोनिर्वेद ग्लानि २ संका ३
असूयाध कहमद ५ अरुश्रम ६ आलस्य ७
दीनता ८ चिंता ९ अरनहूमोह १० सुमृति
धृति १२ लाजा १३ चपलताध हर्ष १५ व
धा मह १६ जना १६ दुख १७ आवेगरु गर्व १९
उतकंठा २० आनहू अरुनीद २१ अपसम
ति २२ सुपुति २३ अवबोध २४ क्रोध २५ अ
वहित्थं २६ मति २७ उग्रत्व २८ व्याधि २९ उ
न्माद ३० अरुमरन ३१ त्रास ३२ अरुतर्क ३३
नाति ४९ सानुकूअरु संचारि कोरसकोक
रतप्रकास सवकेलक्षनउदाहरन वर
ननभावविलास २० नोरससवसंसा
रमय नौरसमयसंसार नौरससारसिं
गाररस जुगलसारसिंगार २१ जाको
सर्वसुनाइका नाइकजुगलसरूपः
जोवनुसर्वसुजुगलको जोवनप्रेमअ

काव्य·
९

नृप २२ कैविभावअनुभावबहिसात्विक
संचारीजू सोसिंगाररसुरतकुजमे थ्रेमंकू
ररतिबीज २३ तिनिमुष्यनौइरसानिदै
देप्रथमनिलीन प्रथममुष्यतिनतिहू
मेरोद्रतिहिआधीन २४ हास्यभयसिं
गाररसँगरुद्रकरुनसंगवीर अद्भुअ
रुभौबीभत्ससँगशान्तवरनतधीर २५
उदाहरनकवित्त देवजूदेषिहसैंबिनहाँ
सीत्रसोसमसवाईस्तूलागिनिकैकैयां रस
तीआउअहूसतीहोमुपरानिवढीबडभा
गिनिकेकैयां रोकिरहोरुचिचौकिरूऐ
सुविषपानगहोअनुरागिकेकैयां छाह
उछाहसोपैवतीसाहिनवैगँतीवीरबि
रागिनीकैकैयां २६ दोहा ३: तेद्वोउति
नहूँहुतवीरशांतओआय संगहोत
शृंगारकेतातैंसोरसराय २७ उदाहरन
कवित्त उपलपलनिवाककलनिकीवो
रनिसौंजनकोजीवनमनुकीनोमारिहु
हुसौं साचेतियकामआगिआँचैसी।।

राम:
९

सुहातीलागिग्राछेग्रापुहसतिउरालपा
तग्रहुसो सोकभर्योरोवनुरिसानुधीरव
रतुघनीपैधिनिभानतुचकितचितनू
हुसो वामवसदेवामदेव केसकामकेन
कीलिनैनमीलिलालिवेग्रीकालकूत
सो २८ दोहा निर्मलसुद्धसिंगाररसु दे
वग्रकासग्रनंत उडिउडियगडेपोग्रोर
रस दिवसनपावतग्रंत २९ ग्रथपूर्ण
शंगार कवित जबतेंकुग्ररकांकराव
रीकलानिधानकांनपगिवाकेंकहूंसु
जसकहानीसी तबहितेंदेवदेखोसवता
सीहसतिसबीहतिसीरीझतिसीकुस
तिरीसानीसी छोहीसीछलीसीछाडि
लीनीसीछकीसीछीनजकीसीदकी
सीलागीथकिथहरानीसी विधिसीब
धीसीविभचूडावमोहतसीवैवीवरुव
कतिविलोकतविकानीसी ३० दोहा
संचारीसबरसनिकेग्रगटदिषाईदेत
लहिपिहारमिलिग्रोतपुंनिगनःरसासें

गारकेहेत ३१ यथावा कवित्त वारकवार
तुम्हेलषिकेसषिलालकेलो इनलोलर
हेतुभि आजु इतैपरभेटभईयहरा है वही
कहिदेवषोरषुभि तैमियैनोंह तयो र
सिकेसवरेहुछकिलेननिकी छविसोछवि
नेहभरी ख्यातिप्यारीनिहारी तिषिकीचि
तोनिरहिचितमेंतुभि ३३ अथसिंगार
स्थायीरतिलक्षणा दोहा नेकजुप्रियज
नसोंसुनि आनभावविनुहोइ अतिको
विदपतिकविनुके सुमतिकहलरतिसो
इ ३४ यथा कवित्त देवश्रवानभईपहि
चानिनिहारतस्यामसुजानकेसोंहैं ला
लचुंलालचितैतिलग्योललचावललोच
नसोचलगोहै प्रेमपुरानेकोबीजउंग्यो
जमीछीजियसीजियेहूलसोहैं लाजक
सीउकसीनउँतेऊलसीककनी विलसी
कछुभोहैं ३५ श्रृंगारकेविभावयथा क
वित्त दोरई — —रोरईफूलनिहोरई
हाथिवयारिकीफोकैं कोरईलैंविषको

रईली----हीडोरकडोरहियोकेभोर
ईसोरईसाहूपरीउररोरईदवकुकेनहि
रोकेश्रोरस्सीभईवारालोंश्रावलवौर
रसावदीवोराविलोके ३६ श्रृंगारकेअ
नु.।यथा कवित भोरभईहजगंमंडल
मेगिरीपूजनकोजनकोसुषभावो देव
संयोभालेसोहैंभएरोउराधेस्तेउलनंद
दुलारो नैनकिसैनसयानीसषीनुस्ते
उनकोमनगुनेकनिवारो भोहेंहसाइहि
येऊलसाइवलेविहसाइमिलेदृगचा
रो ३७ श्रृंगारकेसात्विकभावयथा क
वित षेलिवेकोछलुकेछिपिछोहरीराधे
कोलेगईवागलमासें देवकहाकहिये
उतलेअंकवारिनलाइहेबुधिविलासें
भजीसीनीरपरीरषसीजीसीभजीसी
मंजरीछीजीछमासैं श्रृंगपरेषरकेफू
रकेटरकेअरुवासरकेउस्सासे ३८ श्रृं
गारकेसंचारीयथा कवित वैरागिनि
किधोंअनरागिनिसुहागिनिलूंदेवबड

काव्य·
१९

भागिनिलज्जातेओलरतिकेयौं सोवतिजग
तिअरसमति [illegible] यलिअनयालिविलआति
उपुमानतिउरतिवैयौं वोवकिचकति ई
चकतिओचकतिविथकतिओथकति
ध्यानधीरजधरतिवैयौं मोहतिमूरछि [illegible] ति
गतिइलरातिसाहचरजमराहे [illegible] च
रजमरतिकेयौं ६० याहि कविदवे.र.ना
रीविचरन ग्रंथे वेनागिनिनिर्वेद [illegible] कना
हेअनुरागिनि गर्वसुलपि [illegible] निभाग
मस्तेवडभागिनि लज्जालजातिअमर्ल
रतिसोवतिनिशालहि वोधजगतिआल
स्यअलसहर्षतिमुहर्षगहि अनवाति
असूयाग्लानिश्रमविलपडपिलउपदी
नता संकल्पेरातिचौकतित्रसतिचकति
अपमुमृतिलीनता ध.र उंचकचपलआ
वेगव्याधिसोंविथकजुपीरति जउताथ
कतिसुध्यानचितसुमिरनधरधीराति
मोहमोहिअवहिध्यमुरतिसतरातिउग्र
गति इसैवोउन्मादसाहचरजेसराहम

राम:
१९

ति अरुनमाहवर्यवऊलर्के कढिमरनतुलसम्
रक्षिपरलि कहिदेव देवतेली सहसंवारनि
त्रियसंचराति ॥४२ अथभाईकानुविवेश्रृंगा
रवेशालाव: कवित: प्यारेकैवेषविलास
[illegible]सवसाविनमभोहनिजोहनिजोउ रू
पकै[illegible]धरेलगुभूषन ओवीपरीनहसीं
विनिकोउ भेरसवोसहसीरिसहूंरसुर
वृ[illegible]सुषेसमहोउ तोदिमहूबनिआ
वतहै[illegible]आवसंभावमैहावरसोउ ॥४३
इतिश्रीमदरसायनेदेवदत्तकृतेश्रृंगार
रसषटुभाववर्ननंनामतृतीयप्रकास:
३ अथहास्यरसादिवर्णनं दोहा भावा
भूषनभेषजहरउलटेईकारिभूल हसीसु
उत्तममध्यमअधमत्रिविधहास्यरसमूल
१ हसीयथा कवित सोतिकोसेडरुलागैमा
लिलारपिलारगालहियवोलिमिषिलोहैं
देवहसिसषियांअषियांनिसजानिसु
जानिगएसकुवोहैं सोहैंकैरेंअरसोहैं
रसोहैंसुसोहैं कैरेनाहिंमेंनहसोहैं ॥

काव्य·
२०

तनिकीदुतिश्रोगरचा रहीचुपच्याइलचा
इबैसौंहैं ॥ हास्यकेतीभावतुभाव होहा
लीत देकतेभेयअकदवचन हाँवि ॥
तीर. अधिकअधअमध्यिमअध ॥ उत्तम
हसततविनीत ॥ उत्तमहास्ययथा कवित
सोहैसलोनीसुहागभरीसुकुमारी सषी
नुस्माजमडीसी देवजूसोतनैश्राएल
लीमुषमाहमहासषमाद्युमडीसी
रीवीपीककपोलमैपीकैंविलो
नहसीउमडीसी सोचनसोहै लोचन
होतसकोचनसंसुहृजातिगुडीसी ॥
मध्यमहास्य कवित ओडीनजाति
निगोडीअनीतीनछोडीपरैउविहूजनु
आई सीपीसधाईभईअनसीवीपसी
नतीपीचीलोंनिहूत्ताई देवदियेयनि
केउरसौंलीयेभूलीनवाहचनाईकीवा
ई ओढ़ीओडोलनिएउसांझेलाउनिवो
लनिहांसीकपोलनियाई ॥ अधम
हास्ययथा कवित कलिकदिसिगरो

राम:
२०

निसि — — — तलैंसु गीयहराइके आम
दे. वीरकेआवैवधुयहिरोयहुपीत यु:
यहराइ [illegible] गाधिलईकरिसींव [illegible] माल
[illegible] किसिवा. लईउहराइ [illegible] [illegible]
वीरसयंगकीदीपतिसंगकीहंसहसी
हराइकें ६ इतिविसिभसयरस ग्र
थकरुनायरस दोहा लिनगेइ [illegible] नीव
[illegible] लमेउपजनुसोग आमा [illegible]
[illegible] करु [illegible] वषानललोग २ साग
यथ [illegible] धित केलिकैजलमेमिलि
वा [illegible] गुयाललहीनहयोयनघेरैं चाहि
सवे [illegible] वाइ [illegible] वाईकैदेहसितैदोमिवबा
गुकोंफेरैं [illegible] रहेंहृदियमेंतिय
वीमध्यरैनकोरइकरहैं राधिकागोरी
[illegible] हरिकेमुषओरहसेअरु हे
रैं ५ दोहा करुनअतिकरुनअरुम
हाकरुनलघुकरुनहोत एककहत्त
हपावयोजुनमेंसुषहिसमोत ९ क
रुनयथा कवित्त वेईससिमुरजत

वतनि॰तुघोसुवही॰ अतसकुऊहलकतु
न[illegible]मोसे॰ वेई हेवदीपव[illegible]मीपथमि
हैपवहीहूने॰ कमिहेधोवेल [illegible] गोपकोर्ड अ
गोस[illegible]रवनवागनि॰ विलोकेसी [illegible]
लव[illegible]कमानिमे॰। निकछुलागतुन[illegible]
मे॰। वलिचंदमुखीकी। वामंद[illegible]
विनुजानिपरयौसवजगु अधिक[illegible]
रोसो ॥६॥ अलिकक[illegible]लियप[illegible]
विकरालनशंनतुरवा[illegible]कि दु
ईरधकेअंधकेउवेरलहिजाकीवधाग॰
कैतरुयोंगिन्नु साधनीकीकनकासि
तुमैंफलिजाइकसेर्ठकसेनकहूछिनु [illegible]
हजनाथसनाथकरोहमहोतीहैनाथअ
नाथतुम्हेविनु २२ मत्तकरुनयथा क
वित लसऊलासहियेकेलियेसुनिरा
मर्ईसासहमैदाएदोए हेवनुम्योसुभ
रूपनिकोवनुयामनमोविषबीजसेवो
ए व्यासनिगोडिरहीगडिनेननअंजल
सोनिचुरैनितकोए आपनोजानिको

सोपिहमैअवनीहस्मारीयांलैसुषसोए
१२ लघुक[illegible]न कवित [illegible]रिधसो[illegible]जुगही
[illegible]मिधीरध सोसुग्रीवमनहि मु
[illegible]भयें [illegible]मानीरमुएकैसमी[illegible]लेषो
[illegible]है तबै[illegible]मगोद्वलीबीरललै[illegible]धीर
[illegible]कविताहि लेदतिभी[illegible]हीबन
वी[illegible]जकीवरचीकरीबाहि १३ दोहा
[illegible]रन[illegible]नगिरवरगीविधवला
स[illegible]थकधकीयकीनभुजक
ऊवाल १४ सुषकुलनयपा कवित भाग
कीभूमिसुरलावोभयनुराजसि[illegible]
[illegible]धिलाजनिवास आइयमेरीऊंकुल
दीपराधन्यपतिहृतयेमयुगास लंकले
आयनिसंकलियेसुभसर्वसुवारतिको
सिलासास पाईनिधेतैडवाथसियेहिय
लायवलाईलेयोद्धतिआंसं १५ इति[illegible]
नारस अथरोद्रस दोहा विविध्रसाधु
अपराधकरि उपजावतजियक्रोध होलको
भवदिरोद्रस जहांबजवारविरोध १६

काव्य॰
२२

कोधदशा कवित्त॥ सेजसुधाकिरिसवाविरसवेउं
गन्धा गनकेसमाभेपगशोपें यंदकोरा रचि
लोतमई निसिनाहको चारुचंदनिवे चोपे मा
रही भीत त्तमक्रुपा एकहुवसिंदचकाहिं ... धरे हला
विसेष्में प्यारी केपी कमसेष्य सगा ... तैं उंठी ... मौ
कंपतकोपकीतोपें १७ दोहा ... करे ...
ईरषा कटुबचननि समसंप ... मैड प्र
स्नमुषहगआमुंतनकंप १८ ... यथा
कवित्त पीकभरिपलकें हलनकें पलकें गु
डी सुलसेमुजपोजकी ... हइरहीं ... लित
कीछाती में छापबनिक ... होउ योजकी
ताहिचिते नवडी अंदिया निलती की चिते
निचली प्रतिप्रजकी वालमधेनविलो
किकेवालदई मनोयेचिमनालसरोजकी
१९ इतिरोद्ररसः॥ अथवीररसदोहा स्नवैरी
सनमुषउषी भिक्षकआए द्वार सुदहया
पुरुषानहितहोत उद्धाहउदार २० उत्सा
हयथा कवित्त धाई पोरिषोपिलैं नधाईप
यआगमकी सुनेकोरिकोविसुषभावनि २२

भरत्ति है मोरिमोरि बरत्तु निहारति बिहारभू
मि घोरि घोरि आनंद घरी सी उँघरत्ति है दे
व करजोरि जोरि बंदति सुरनिलघु लोमानि
के नोरि नोरि पाइनि परति है तोरि तोरि मा
लनु मोतिन के चौक हि निछावरि कैं कोरि
कोरि भूषन धरति है २१ वीररस के भावानु
भाव होत अंगपुलक सुख अस्तुह गर्व उत्सा
ह महीउं वितेंद्रा हसम मे होत त्रिविध
सुवीर २२ यथा अंबिका वरनन कवित्त
देखमर सुंदरि त्रिलोक सुंदरी के हग हंस
दकवंद सिदैनं हारउहा रहोत लागत व
दन सरनागासनरग अनुराग तअरुनरू
पउपमा अपार होत देखि देखि दीनउपि हो
त व सुधा विपन सुधाधिपतिउ पर सुधा सह
अधार होत एक ओर कुटिल कटाक्ष ही की
कोर कोरि कोटि लक्ष रक्ष सम पक्ष जेरखा
र होत २३ इति त्रिविध वीर अथ भयानक
रस दोहा घोर सत्त देखें सुनें करि अपराध
अनीति मिलें सत्रु भूत ताहियह सुमसेउप

काव्य॰ ज्ञतिभीति २४ भीतिलवैरसभयानकहयु
२३ जल ... युभंग चकितचित ... गावपल
... नतासुलभंग २५ भी ... कांत
आ ... लज्वालवधू संगनूलनिकं ... त
सेनिसि ... गारहेलुजेजा ...
पेपीरीपर ... रहालिसि ...
जुथुलेजह ओ ... जरे ...
वोलतवालल्जात ... ल ...
चितौतवहूदिसि २६ भयान ...
त श्रीवृषभानसुतामिलिकेनंदनाजके
लिकौहलिनुआनि रोमवली नचलीकहि
देवसुसोनेसेगातश्रकालसुलानी ...
अचानकवोलिउठेउदवाल केआलचधू
परानी धाएकेधाएगहीसखवाईउहकं
रहारतिअंगसयानी। २७ इतिभयान
करस अथवीभत्सरसः दोहा वस्तुधि
नौनीदेखिसुनि घिनिउपजेजियमाह
घिनिवादेवीभत्सरसुचितकीरुचिमिटि
जाहि २८ निंघकर्मकिनिंघगतिसुने २३ रामः

किदैवेकोइ ताननसकोचमनसंभ्रमनकुवि

धजुगुप्सा[illegible]ई २९ जुगुप्सायथा कवित्त ग्रा

नऊतैंपनप्यासोछिमाधनुसाधुजि[illegible]ह

[illegible]हाती: देवजूदैवोढिपनि[illegible]केकहूना

[illegible]मेकोविसाती राकस रंकनिग्रं

[illegible]कपयोधिकीपंकउंडाती:

[illegible]कुलकोपलमेपरलोकगत्तीकर

[illegible]जाती: ३० दोहा ससमीलसीता

[illegible]गातमातुसुचिरूप छुतिरासस

छुवतहूंहोभुनछिमाअनूप ३१ इतियजु

गुप्सायथा कवित्त पालिलियेदधि[illegible]धम

हींतिनउंधमहीतिनहूंसोतिनानैं साथी

मनाहयहाथीभुजंगवछाहयमातुलमा

मिविनानैं कूवरीकूवरीजातिनउंवरीउंव

रीवातसुसाचीकिनानैं ग्यानगहीसिनि

सौंरुचिमानिअहिदिनिसौंधनस्यामसुधि

नानैं ३२ अथवीभत्स कवित्त रेनिजगर

सवैनपगेउंमगेकरसेननिनैनलगोहैं

अंगाहीअंगकियेसुपसंगअंगलरंगानि

[illegible]मोहैं प्यारीकेंप्रीतमप्यारा[illegible]भालक
छूमतहमतघूम[illegible]मोहैं देव[illegible] [illegible]दार
तिठीरसुमोवतिनाकमरोवतिभे[illegible] [illegible]२३
पतिविनत[illegible] अथ अद्भुतरसः [illegible] [illegible]
[illegible]ज[illegible] [illegible]सुदै[illegible] स्थयवा[illegible] [illegible]
[illegible]तरसुविस्मयवे[illegible] अचल[illegible]मकि[illegible]
मित २४ वीस्मययथा कवित्तः [illegible]ती
अकवावननाईनि[illegible]लिनौंद[illegible] [illegible]
भाइनि कंचुकीकोरी[illegible] [illegible]
लियेवर[illegible]धसुभाईनि देव[illegible] [illegible]रति
निहार[illegible]ईतसीस[illegible]री [illegible]
कै[illegible]हीगरहीवाटीदगी सीहसैक[illegible] [illegible]
[illegible]कुराइनि २५ [illegible]यथा कवि[illegible]
[illegible]केन्मोतिबुलाइवेकोव[illegible]नेनौं हैं [illegible]
ईनदयानि हप[illegible]नकीसंपतिदेखि[illegible]की
[illegible]मति [illegible]तिवानि [illegible]लिपरीमनि
मंद[illegible]तिबिंबनिदेबिबिसेषिभुला
नी चारिघरीलौंचितौतनचितौतमनोंकादि
वंदमुखीपहिचानी २६ यथावाकवित्त

आईवरसानेलेवुलाई वृषभानसुता [illegible]
[illegible] भानकी पैठे गई तोकवकवा
निवे [illegible] काए वकवोदिनु सांचो कतवकोर
[illegible] सोवकेगई नंदनंदनके नंदनके
[illegible] भई [illegible] नंदनके [illegible] निवंदन
[illegible] गई [illegible] विकलितवई कुं [illegible]
[illegible] कुलकी गलिन नलिन भई केग
[illegible] तिज्ञ तन [illegible] अथ सांतरसः दोहा
[illegible] कहि [illegible] जे शांतबुधि शां
[illegible] बुद्धिवहियहित्ताते मनशु
[illegible] बुधि [illegible] कविल मोहक्रो
[illegible] चित्त गर्व नतेकभिमान सोंता
[illegible] लिय स्यंतवतो मम मदिरसुंदरता
[illegible] जोवनभालो मुक्तिपरी कविदेवसवै
[illegible] निदस्योसिगरे जगुजांतो लेसि
कमोमजो होतो सयानतो होतो कहा हरि
सोहितुहोतो ३९ सांतयथा [illegible] दीन
हे राजा धनजीवनु रीम धेपदि लोईजुपे
मरिवेन सवेजगुजानतु देवसुहागकीसं

काव्य॰
२५

पतिरौन रहीभरिवेल कलाकियों नैतिकला
... .हुलसौंपियलोभर.उलसिंहेज नमसि
सलि कुंकं...तीकाविवेलकछु...कवकेहि
रहीकाविवेल ४० रोहा ... ...
गलित्यारोजोदस.होन तेसाटसिंग.
लवनेजेमुनरउरोज ४। इति श्री...
दनेदवइलम्हारे.तवर...निका...
चतुर्थप्रकासः ४ अथ...
हास्यास्ताबले...कर...जान ...
अद्भुत हो... ...यान २ ...
मित्रहिन... ...न.केगाय मित्र...
उतनिउंदासह...मुनाय ३ ...
रिलि...समिता रकोग्ररभ...
अनुतरिपुरोहककनला...गुर...
मित्रसमुकेनु क्रमतेउदाहरनमंगारस
यथा कावित्त केलिकेभौं... केली...वन
वलानिहारिनवलीभुलानी लालकोदेखि
उतैनदवालपरीनयजानरसालभुलानी
वीजतिछीजतिअंगनपसीजती देवथकीसी

राम॰
२५

वकी[illegible]पानी द्यौसहिहैसिहूगंवलनंवत
थं चलैरसिसमैं मुसिकानी ४ अघ[illegible]
[illegible] वनित [illegible]सिक[illegible] सहीय [illegible]सिमसु
[illegible]सकेविसभोई: के[illegible]की[illegible]जतेस
[illegible]वेविजाईईकंलगवे लियेसोई सौं
[illegible]अपनेपियाकिसुनिवाकुललाईग
[illegible]ोई धाईकेपा[illegible] हेग्मकुलाईसिं
[illegible]ंव[illegible]ोमाहिरोई ५ वीरअद्भुतरस:
[illegible]मविसंघायिक[illegible]दन[illegible]दयका[illegible]रिकेग
[illegible]नि देवकी[illegible]हि[illegible]ोगिनिहे
[illegible]ंं द्उजुवे.उनि [illegible]हारपग
[illegible]केचितचित्तनिमित्तसवैगुनि थं
[illegible]जसमेवा जउवंससुवानै [illegible]सोमति
[illegible]कथासुनि ६ वीभत्सरस[illegible]क[illegible]चित
[illegible]याहुजसूपरस[illegible]गायोकंसभूपमहाभ्रज
ग[illegible]रहे[illegible]माद्गमेंलूकिकै ईलतेभुपा
लवछलनकेपछपालदैकैकरताखवेचलाए
लिसचूकिकै: जाने[illegible]ई फसे मह्यिाके: हरि
हसेष्मापुरीतवंधुघसेल्यायेफारिफनकू

काव्य॰
२६

किकै विषमाविद्धकि द्रुकिपातग्रानमकिम्
किव्यालमुबध्रकिगाबालकूकिकूकिकै
७ इतिसमभित्रः अथरतसनु सिंगारबी
भूत्त कवित लैस्तुधसीधुसुधाकमसैतति
कैश्रातद्दत्तरुचिभ्रागसमीकीः सोइति
संकलभरिअंक मयंकमुखीसुसंकि
जीकी जानिगईपहिचानिसुगंधक
धिनिमानिभईमयकीकी
गोकिअगोछिनिपाछतिपीककपोल
निपीकी: ८ अथवीरभयानक कवित
आएहोबलनकागुहलैआरुओककीओ
रउतउमहोक्यों जानतिहोरसलालबी
लालकिनावसद्धैरस गंगलहोक्यों साथ
मेचाहत्तहाथबलायोपेहाथगहेबलिसा
थुगतेक्यों वीरवडेबलवीर अधीरके
कंपतगातउरात केहोक्यों ९ रौद्रअद्भु
तरसः कवित लोपुकरौद्रजमडलकोक
पिकोपुचदोजुगअतस्योंस्मली योनत्र
वंडघमंडमहाघनधारअवंडपरैप्रति

फूली हाथअसेगिगिगोकुलनाथजूके कुल
कीसुधसिंधेसमूली ऐसेविलासवही [illegible] पु
केलखिबासबकीसबकीसुधिभूली १० हा
स्य [illegible] कवित्त आएसुनेमथुराजाइबी
[illegible] ननभीरसदेजगुजोवे गंजिम [illegible]
[illegible] लमिभेजिसवै अनुरंजि अभेवलुधोवे
कंसुन संमुइतैपैवकैसवकेजियजानिमसा
नभेसौ [illegible] कालकोभोजनजानिपरोजनभो
जनविंद्रहसेअकरोवे ११ अथरससोषव
र्नन होहाः सरसनिरससमुझहि पच
सपरनिसुभहिवानि मीतअमित [illegible] स
वितईवितसुवितवषानि १२ कजस्वानि
सपरनिस्वकऊकहूसत्रुकहूमित्र कहूँउदा
ससमुझविभुपरबहुविचारविचित्र १३
पहिचाननश्रुतिसाधुसबजोजारसकीरी
ति सुनिकवित्तनिर्दोषरसबदलवतुरचि
तप्रीति १४ सरसयथा कवित्त हेरीमैआ
जुभिजैरगगोरीकेआपनप्यैपपनेवसके
लैः योकहिदेवसखिगहिगोरीकोल्याईहे

गोकुल॰गाँईकीगैले लाजकिमारिमुनीकवहू
नमुगावनुलोगुलगावनुछैहै॰ बेल॰नफागुन
ईउल॰हीर्ड्वरआसुनिलीलिर्डसारनिलेले
२५ अथधनिवसः वेसविसवासिनिविसारी
विसरेनजहीजीमेवसिवेकोनिसुवासरे॰जी
विदई अनजानेजानहारजोयन[illegible]गुन
मंतर्ईनकंतननननकनडीविदई मकनाई
मेरेर्वेरकरकनानआइदेवतेहिलजैं[illegible]
हिर्देवनजिईविदई अपरेनिलजर्जे॰वतेरजी
वतहीमेरेजीवनेसमोहियीविदई २६ अ
थगदासरसः कवित वेतोवहूनाईकमुवी
ननिकेधानमारेप्रेमरसलीनमनुमोरेन
थिरहूहै उनसोमनहूसदानचलोकिसोमि
नुसोंगुनमंतामोमिनुसोगुनमोगिरहूहै
उनपरकोपिकामुवेधनसरनिमोहिहोनो
हियामोलेईनपाहिसोजिरहूहै वालमकीव
ह॰तिथामनकीयहमतिहानजानोमाईमो
हिकोतुमोचिरहूहै २७ अथविसभेद दो
हा देसकालअरुवर्नेविधि पात्रअरुसं

धानि अकरस भाव विरुद्ध के आगनि स्यामहि वा
नि १८ रस कहन विधि दीजो धी यथा कवित्त रा
धिका मैं जप का धिका का न्ह सौं चाहति है भज वा
लि चलायो भाद्दी कुहू निसि जा दौवधू कियो
कै [illegible] गकाति कथा तिसु हायो: वाकुल कोध
न [illegible] केपन छाडि कै गोपन को पन थ्या
यो मंदिर ले कहि सुंदर स्याम विलोहे यत्ती है गि
रिधर आयो १९ दोहा भाव विरोध उदास रस
समं विरोध रस सत्रु संधि विरोधी प्रनमिल
न विवर्ण्य तक कवि न पत्तु २० इति रस भेदः अ
थ रस अनुभवः कवित्तः ज्यौं चकरहि प्रचयो
भमिलाचन वाय स के वस के बुकि वारिये मोहू
कों मोहू मैं होंन हा सुरुति बुहति स्याम घनेन
सघ गिये आनंद के मद के नद मैं मनु बूड़ि गयो
हर मैं न हि हरिये केउ लश्री सबु लोग लगे कि
धों रेव करी उं लरी मति मेरिये २१ यथा वा
राधिका का न्ह को ध्यानु धरै तब कान्ह के रा
धिका को गुन गावै सौं अम्रु वा वरसै वरसा
नेकौं पाती लिखे लिखि राधे कों ध्यावै राधे

कैजाइघरीकमैंदेत्न मुजैमकीपातीलेकानी
लगावै: आपुतेआपुहीमैउरम[illegible]मुकेबिरु
कैर मुकेसमुझावै २२ अथ [illegible]
काहूकीकोईकहावतिहोनर [illegible]
तिन्हजातेयसांगी मेरिबिसामुकलोतिमि
लै गुहैंकोकविदेवजूक [illegible]
कुलचंदकीचेरीचकोरीहै [illegible]
रुपसांगी मेरिनवानबकोंनलि[illegible]
वारियेवैव्रजवीरवसांगी [illegible]
निसकवित्त मूरतिजोमनमोहनकीम
नमोहनीकैथिरुकैथिरकी [illegible] देवगुपाल
कोबोलसुनैंसियरानिसुधा [illegible] अछि
रकीसी नीकेहरोधौंकैहांकिर [illegible]
नैननिलाईजघराछिरकीसी पू[illegible]
[illegible]हियैंहरिकीथिरकीथिरकीनुकीयेकी
रकीसी २३ अथपरनिस्रा कवित्त सखी
नुनैसुरुसुनेसोतिनिकेमनाउपुहैलगु
रुजनानिकेगनलोगकरुतै देवकहैला

यलावभातिअभिलाषमुखिपीकेभरउम

गनु श्रंगाररसपूरुहै: तेयोकलवोलुभाविनिकेसा
निव्रहत हैं ताइपरेत हैं तैसियेसम् रु है या
लमुक्तनि [illegible] पीउँय ज्यौं पपीहा मुक्तनिवि
मुथमोती कहलीमुथकपूरुहै २५ दोहा मेव
रनीसिंगाररसश्रीहरिराधाप्रीति जोहूरसुजा
नहृचतुर [illegible] अपनी बीति २६ थाई भाव
[illegible] ति [illegible] हूरसनो भाँति एकएकप्रति
[illegible] मालुकपाँति २७ श्रृंगारादिक
रस [illegible] लोसंचारीत जहाँ जहाँ जेसंग्रा
रजानैति हैं प्रवीनु २८ अथश्रृंगाररसंचारी
[illegible] संकासूयाभयग्लानिधृतिस्मृतिनी
दगति चिं [illegible] विस्मयव्याधिहर्षउत्कंगाजडग
ति [illegible] वादउन्मादलाजअवहित्थाजान
हु सा [illegible] न्यमतसंजोगमैंसकलभावकाम
करहु आलस्यउग्रताभावकेसहितजुगसा
परिहरउ २९ अथहास्यसंचारी दोहा श्र
मचापलअवहित्थअरुनिंदास्वप्नग्लानि
संकासूया हास्यरससंचारीयेजानि ३०
अथकरुनरससंचारी दोहा करुनरसे

वि

गादीनता स्मृति ग्लानि चिंता निर्वेद। चापल
स्रमउछाह हर्ष गौरव वेग गर्व अमर्ष॥३१॥ अथ वी
रसंचारी। श्रम स्वास्थ तितर्क स्मृति। मोह गर्व
[illegible] क्रोध। रोमहर्ष उग्रता रस। चापल वेग अव
धि॥३२॥ अथ भयानक बीभत्स संचारी॥ त्रा[illegible]
ने ये भयानक अरु बीभत्स दिवाद। भय मद
व्याधि वितर्क मति। अपसमाज उन्माद॥३३॥
अथ अद्भुत शांत संचारी॥ मोह हर्ष ऐ आवेग
मति जड उत्ता विस्मय जानि। ये [illegible] सां
तमें धृति निर्वेद बखानि॥३४॥ इति नवरस
संचारी॥ अथ नवरस चतुर्वृत्ति निरूपन॥ वृत्ति
कैसिकी आरभटि भारति सात्वती ज्ञ॥ चारि
भांति बरनहु सुकवि तितनी निरसवा॥ जु
३५॥ कैसिकी लछन उदाहरन॥ हास्य करु
ना सिंगार मय नृत्य कीर्त्तन गान। सुखद वे
ध रति मधुर पद वृत्ति कैसिकी जानि॥३६॥
यथा कवित्त सुरसरि सारदी विलास हास
सा रससि नि मिटत अलेपेउ तिदेपेडुपडुंद
रिउ हित उदार पद्विजन कुमुदाकर निसी

चतिसुधाकरसुधाविसदविंदरि छहविछुर
रिउँगैघदिकीलहरिअंगअंगनिअगाक्षगु
नगतवसमुंदरी देवहूजनचंदनकीचंद्रिका
अमंदहू[illegible]विकीदेवीहूजतंध[illegible]मंद
री ३१ अथआरभटीलक्षनउदाहरनदोहा
गै[illegible]यदीभत्समयगुजेनभ्रमसंकोच गो
जअवंधसुआरभटीकोपनकंपअरोच ३८
कवित्त सुंद[illegible]बरनबानिआईनंदमांदरवुला
ईस्यामसंदरकीसोभाअवरेषिकै लीनेप
रजं[illegible]कंअंककुचलीवावषपंक
मुषनैल्योसुविसेषिकैं जोरुकरिहरिषयपा
नमिसआनुपियो[illegible]कैधिनोनीधोरमरि
षधिपेषिकैं देषेदेवकीकोदेवकीकोनउया
ईसवकीकोहूअमंडलुवकीकोरूपदेषिकैं
३९ सात्वतीलक्षन उदाहरनदोहा वीररौद्र
अद्भुतमयीजहांसांतसंविति अर्थक्रोध
अविरजछिमाअगटसात्वतीहृत्ति ४०
कवित्त: दिवीमषराषनअषेधनुषमा
ईकनिपाईकअसुरसुरनाईकसुभकर
न तारनअहल्याउरसल्यअरिसूदनिके

काव्य· ३०

तोरनपिनाकभृगुपतिनिरहंकरन बंधन
पयोधिदसकंधरिपुदीनबंधु ऋधमउधा
रनभयंकरनभयंकरन पावककेअंक
सोधिसियकलंकआइलंकरनजीतिर
घुकुलकेअलंकरन ४२ अथअभावलीलष
नउदाहरन दोहा लीला... जि
वऊवकोक्तिगर्व उदारताग्रचितहर कि
हतभारतीसर्व ४२ कवित हाकनजुदय
धुधसुरासुरउडतवीरविकटउरमे म
रासिसोमनिरामु इतेउतराननधीरघुसंधर
धारमें कोमलभुजभुजमोहनीवीसभुजा
इससीसाविहारमे नाचतकंदपिकेरनमंड
लमंडहसेहरकेहियरामे ४३ दोहा जोहू
रसकीअवस्थानिवारेयोसूचनिहारि कवि
नकहीअसेकरसलीजोहतिसम्हारि ४४
इहिविधिनीरससुरसवरसअरुनवरसके
भाव वारिहूतिनवरसनिकीवरनीसवरसमु
भाव ४५ इतिश्रीशब्दरसायनेदेवकविवि
रचितेगुणदोषरसभावचतुरद्वतिनिरूपन
नामपंचमप्रकाशः अथनवरसनिरूपणं ३०

गाररसवर्णन॥छप्पय॥नाट्यमतनरसआगकाव्य
मतनौरसकहियत सांतरहितआरुसहितवेव
रवमननविधिलहियत एकएकप्रतिपांचपां
चरनकेअधिकारी थितिविभावअनुभावसा
त्विकग्यकसंचारी नवरसनिमुख्यशृंगारज
हांआलंबनमिरससकलवस ज्योंसूक्ष्मथू
लकारनजगतज्ञेतमहाकारनविवस १ दोहा
सबैसबैशृंगारमैरमैसुभावसमीति नौहूर
सनिविचित्रज्यौहोतिविचित्रितभीति २ प्रकृ
तिपुरुषशृंगारमैनवरसकोसंचार जैसेमग
आकासमैघटआकासप्रकार ३ जगतमुख्य
शृंगारमैनवरसहूलकअजल ज्यौंकंचनमनि
कनककोताहीमैनवरत्न ४ बाहिरभीतरभा
वजेरसनिकरतसंचार सोहीरसभावनिस
हितसंचारीशृंगार ५॥छप्पय॥संयोगवि
योगभेदशृंगारदुविधवरु हास्यवीरअद्भुत
संयोगकेसंगअंगलहू अरुरोद्रकरुनाभया
नकतीन्यौवियोगअंग रसवीभत्सरुसांत
होतदोउदुहूनिसंग यहसूक्ष्मरीतिजाननतर

काव्य· ३१

सिकजिनकैअनुभवसवरसनि नौहूसुभाव भावनिसहितरहतमधश्रृंगारतनि ६ अथ संयोगश्रृंगारकेअंगीहास्य वीरअद्भुतय थाकवित्त दलुसाजैंरुकुमीअकेलोरुकुमि नीपतिरोकिवेकोरावनिसाकगुनगाएहै मूअखंडआवंडलधापंडअचंडनिपेचंडकर मंडलज्योकोदंडतनाएहै साछोभकछिलोक शिविजेकरिवेवापसौविलासअद्भुतहा ससाहसजनाएहे देववरदाथवासलाइक हमारेपंचसाइकतुम्हारेदशसाइकवना एहे ७ अथवियोगश्रृंगारकेअंगीरौद्रक रुनभयानकजथा कवित्त आयोछलीछि पिधामछपाचररामभूरतिलेरनछीजी देष तहीमूरछाईधरीसियकुंजरमंजुज्योंमंजरी मीजी देवजूदेवीसोदानवमायावताईदईई त्रिजटीसुपसीजी रावनसोअरुनाननदै तनकंपिउठीकरुनारससभीजी ८ अथसंयो गवियोगकेअंगीवीभत्सशांतकोउदाहर नकवित्त जंबुवतीपतिसोससिभामिनिका ३१

मनिसा कहूँ ना कमरोरी ॥ जानि हसे लखि मा
नि मनो हरज्यो हुँचितो करियो लखितोरी ॥
आति मरामर से उठि अंत निरंतर अंजरत्ता
प अकोरी ॥ आयनो आपु घनो घिनि मा
निनि मानि रही सुषहुथी किसोरी ॥ ८ ॥ दो
हा ॥ [illegible] शृंगार में सब रस रहे समाय
जो निर्मल [illegible] आया रूप रमाइ ॥ १० ॥
वरनि कहे जे तिनु सहित सब अर्थे रस भा
व ॥ अलंकार जिनके कहत याचनु सहि
त सुभाव ॥ ११ ॥ अथ सब अर्थे रस भाव
पात्र ॥ दो० ॥ सब अर्थे नवरस जु के ना
यका भेद ॥ नवरसमय शृंगार के वर
न आषिल अभेद ॥ १२ ॥ है नायक अरु
नायका पात्र रस शृंगार ॥ ता हू सरस [illegible]
रीति कहत विशेष प्रकार ॥ १३ ॥ सुद्ध
स्वभावा स्वकीया वाचक को आधार ।

का० पति अनुकूलसषीगुरुविद्यासित्यवि।
५२ चार १४ पीठमर्द्दनर्म्मनिसचिवदूती।
गुरुजनधाई उपदेशीकुलधर्मकीवा
अभ्यसेससुहाई १५ इतिवाच्यवाच
कपात्र अथलक्षलाक्षनिकपात्र ग
र्भस्वभावास्वकीयाअरुपतिदक्षिन।
जानि अतिपरिचयधष्टासषीनर्म्म।
सचिवविटमानि १६ मालिनीनाईनि
दूतिकाप्रियवसकरनउपाई उपदेसी
येलाक्षनिकपात्रलक्ष्लवाई १७
अथव्यंगव्यंजकपात्र सुद्धपरकिया
नाईकाअरुनाइकसठधष्ट स्वभाव।
जेउपपतिकहेनासादिगुनस्व १८
नर्मसचिवविटविदूषकदूतीपुरजन
नीच निधकसंउपदेसिकाव्यंजकपा
समीच १९ सवअर्थ्यंतोव्योजधपि

परत्तसवन्नसैदेषि न्यारेयाचत्तिहूंके।
तीन्योत्तदपिविशेषि २० अथवाच।
कादिउदाहरनयाव शुद्धस्वभावास्व
कीयायथा मानसौमानयत्तीसैनि
रंत्तर अंतर अंत्तरयारत्तहेरी देवक
हाकहौवाहिरहूघरवाहिरहुरहोनोह
त्तरी। लाजनलागत्तिलाज अहेतु।
हिजानसि आजु अकाजिनिोरी दे
षनदेहरिकोभरि डीठीघरी। किनिराक
सारी किनीमेरी २१ यीछेयीछेडोल
त्तहैसासुहैदेवोलत्तहेषोलत्तहे घंघ
टुसुमाननियुयोषत्तहे पगयेगमग
मेविछाइप्रेमपाइडेसेधोवेहूनमू
लेदेषादेषीसेदुषात्तहै देवसेषीवो
निकीसिराइअषियानिदेषिदेषिनि
सुदिनु मनदेषनिदुषात्तहै इंदुवद।

का० ३३

नीकेनाकेइंदुसेवदनसरसविंदुनिगुविंदु अरविंदुनिसुषेजेहै २२ विद्यागुरुसषीयथा गोकुलगांउमेकोकुलनारि। नसोहैसुरूपसुसीलसुभाइनि येजग। दीसतिहारेईसीससुहागअसीसदईसु षदाइन एतीयेवैसमेएतीवडीदुतिदेवजेदेषेयरतिपाइनि ऐसीकहाइरहोगुनुपाईनकीजैगुपालसोगवेगु। साइनि २३ पीठमर्द्दनसषीयथा चेटकसोपढीनितचितसेचटीयेरहोरटी दिनरातिमदीमनमेसुरतीसो अंगअंगउमगितिहारेरगारगोसगमगयोजगमग्योनेहुगाढौगूढगतिसो ताशोठकुराइनि इतैयेरूठि आजुपीठियछितायोतातेरष्ठतिया नतिसो हियोनमरसिआयोइवतनहूयि आयोकैसरसिआयेतुम्हेंरासमानयतिसो २४ कुलधर्म

उपदेसीयष्या एकुलतीकुलत्तीकको
बंधनुजासोवधेगुरुवंधनरौटै छप्त
हैमनसानिकसेगुनरटतभाईकनोह
असेटै प्यारेसोमेसनयोनितंतेसुनि
वाहियैछैमछिमाडरयेटै देवसुसील
सुलायनिद्धकेसुलाबनिहीलहियै
घरवेटै २५ हतीयष्या लेहूलत्ती
उठिल्याईहोतालकोलोककोलाज
हूसोलरिराखो केरिइन्हेसयनेहूनये
पतुलेअपनेडरसेधरिराखो देवल
लाअवलानवलायहचंद्रकलाकुदु
लाकरिराखो आठहूसिद्धिनवोनि
धिलेघरवाहिरभीतरहूभरिराखो २६
अप्यलाज्ञानिकपाजारिकनुकेउदाह
रन गर्वेस्वभावास्वकीयायष्या को
मलवानिवडेनुर्कोकानिहरे:मुसुक्या

कं० निसनेहसनीकी सीलसलोनिसचि
३७ त्तचितोनिचितेतलचौनिसुभाइवनीकी
सेजयैसोतिकरेजिनसालुमनोज्ञकेअ्री
जमजेजसनीके देवजूआयनोजो
वनरूपधोहरिसीधनराधेधनीकी
२७ दीझेननाइकयथा कैयोनभांति
कवधोअनेकनिसोराकवारसरस्या
यरसयरस्यानवियोत्तें केतिकनवेली
वनवेलिनुसोकेलीकरीसंगसुखकेर
लीकरिकाहूसोनकियोतें भरिनरिभा
ऊीनि छाडेरिद्दै भोरवीरअधिकअधी
रहैअधरअमीपियोतें देवसवहीको
सनमानुकरिनीकोअतिहेकेयतिनी
कोरसुलियोत्तें २८ अतिसंगाधघ्रास
बीयथा वारेईवैसवडीचतुरेहोवडेगु
नदेववडीयैवनाई सुंदरैहोसुघरैहो
सलौनीहोसीलभरिरसरूयसनाई

राजवहूवल्लि राजकुमारि ग्रहो सुकुमा
रिनमानो ममाई नैसिकनाहकेने हवि
नाचकचलहूं जैहैसवैविकनाई २९
विटनमेसविवयया वैठीकहाथ
रिमोनुभटरागमौनुत्तुम्हे विनुंनागत्त
स्ल्यो चात्तकलौतुमहीरारिदेवचको
हमयोचित्तगीकरिचल्यो साकसुहाग
कीसाकडदोकरिमौत्तिसराजनिकोव
नुलल्यो पाउसत्तडठिकीजियेचेतु
ग्ससाउसत्तडठिकीजियेचल्यो ३०
परिजनवधदत्तीयया कुंजनिकेको
रेसनुकेलिरसवोरलालत्तालनिकेघो
रेवात्तभावतिहैत्तित्तकोग्रसखनिचोरे
कलवोलत्तमिहोरैनेकसखिनकेडोरे
देवडोलेजित्तजित्तको च्योरच्योरेजो
वनविच्योरदेत्तिरूपरासिगोरेमुखमो
रेहसिजोरलेत्तहिलको तोरलेत्तिर

त्ति दुत्तिमोरे लेत्तिमत्तिगात्तिछ्योरे लेजलो।
कलाजचोरेलेत्तचित्तको ३१ वसीक
रनउपैसीयथा हासीविनुहासअप
पनोईउपहासअरुरिसविनुरोसुदो
सुऔगुनकौगोतुहे घस्मप्रवीनत्ता
कुलीनत्तासौलीनमनुपुन्यरसघीन
पनुपत्तिवत्तपोतुहे सरसरसाईननि
रारसदरसदेवआदरउदारत्ताप्रमोद
कोउदोतुहै प्रेमत्तेप्रीतीत्तिहैप्रत्तीत्त
हीत्तेप्रीतिहोत्तप्रीतिहित्तेप्रीत्तमप्रिया
केवसहोतुहे ३२ इतिलाक्षनिक।
पात्र अथव्यंजकपात्र शुद्धपरको
याथथा देषेअनदेषेसुषदाईभयो
सुषदानिरखतनआसमुषसोईवो
हरेपस्योयानीयाते भोजनसुजन।
गुरुजनस्लेदेवदुरजनलोगलरत्त
वरेपलो लाग्योकोनुयामुपलराको

नयरंतिकलहूरिगयोगेहुनयोनेहुनिय
रोयस्यो होत्तोजो अजानतौनजानतौ।
इत्तेकविधामेरेजियजानित्तरेजा।निबो
गरेयस्यो ३३ सठस्वभावउपपतिय।
थ्या तेरो अलिकासुकरहां तेचलिका
मुकहा आयोकलिकासुबुनिहारिनी
दुपरीको चंपातेचुराई चंपिचमीत्ते।
चमेलीकंपिफीनेरसकंपिकेधिल्योन।
घरघरीको भारेभारेभोरहीसरोजनि
केषोजलेत्तफाकत्तनसाफत्तेपुरेनिरे
न्निचरीको देवकेसेपियातेकपोलस
धकरीकोनछीछेमधकरक्योनय
छेमधकरीको ३४ विधानासगुरु
सषीयथ्या नात्तोकहातुमसोतुमको
होजुदेवछुवोकछुअंगनवाको क्यों।
छुवैअंगुपदेषत्तहेजजराउत्तस्योनसे
रूपरगाको कोनैकयोहोविजाइछावा

का० धनयोगि दिजातोनडोलरुवाको ला
३६ लपटेललडवावरीवातेहो दंड्ढानोगीन
नंदववाको ३५ नमेसविचविह्रयक
ऊकसाब्बैरहिहे मने इंदुनिहारतन्रमिय
घमिणिरोगी तीरसोमीरोसमीरलगे
तेसरीरमैयारघनीयेघिरोगी मेरोक
ह्योकिनिमानतीमानिनि भ्रापुहितेः
उत्तकोउनिरोगी मौनके मौनरही न्रमि
मौरीलीवीरी लोनेकमैदोरिफिरोगी
३६ पुरजनदूतीयथा रावेरुपलला
ललवानीयेजानीन्नकाहूविकानीयोरा
सी हैसतहांनसत्तोइतेतोतुमसंगतितेउ
तरीउतजेसी स्याउनिवेरोजहांघहनेह
कोदेवदुरीनतुमेहमजसी देषिवेही
कौभरैसिसकीतिनसोरिसकोचस्वा
कहाकसी २ निंघंउपदेसीयथाः

देषित्तिकहाहैसुषदानिसुषुत्तेरोदेषैदे
षि॰अनदेषनिकोछातीछोभछीजिमा
रु ३८ जनपावै॰अलीफूलीनोलक
लीदेषिकुमुदिनिकोलकुलभलीवि
धिसीजिमारु जीछनयहैसदेवघोस
क्योसहैहरीरैनिमधूपमंदधकोसुगं
धकोसुगंधगुनगोजिमारु तेजननि
हारेसीतयीतसकरैजिनलतेजनकरे
जिनमजेजनहीसीजिमारु ३६ दो॰
सब्दार्थनिहूमेदकैयोजेपाव॰आधार
करनिकेइसैहोयहीकेवलरससिंगार
३९ नौरसपाव॰अनगनित्त॰अरुनाई।
को॰सनंत ॰अरुसातुकसंचारियोउदा
हरोमतिमंमत ४० जदपिविविधस
ब्दार्थमनकह्योविविधसिंगार जदपि
तिहूपलविविधगतिएकैरति॰आधार

का० ३७

४१ सुधस्वभावास्वकीयावाचकवा।
अभेद संचारीप्रगटजतहालज्जाध्य
तिनिर्वेद ४२ मतिचिंतासुमिरनमर
ननीदसुपनअवबोध आसस्वेद
क्विरणतायसात्तुकअनुरोध ४३
वीणारववानोसकरप्रेमवचनमृदु
भाव पुहपगंधरवगानयेविभावअ
रुअनुभाव ४४ उत्तमहसित्तसलज्जा
द्राअधरफरित्तलघुवैन प्रियजन
आदरभावप्रियवाचैकवाआरोन ४५
यथा प्यारेपरवीनकरलैकैवरवीन
सुरसधानवीनतानगाईमृदुवानीहै
सुनतयसीजीछविछाजीअसुवैनी
भीजीसुमरिसचिंतमतिमंतसुरझा।
नीहै सोवतिजातिउजगतिअनुरा
गिनिविरागिनिहूँदेववडभागिनलज्जा
नीहै सत्नजलजनैनीसरलसुवै

नीजीकीयीसुषदेनीयिकवैनीयहिवा
नीहै ४७ दोहा हसेउयहसेसषिन
संषैगवंकविलोकनिदीठ देहउरह्लो
हृत्तियठवैनिकटवसीठ ४८ ग्ला।
निअसरयामोहस्वमअपसुमाररस।
वाद मलेपुलकसुरभंगआत्तिहर्षअ
मर्षविषाद ४९ यथा मधपमदंध
वंधरसुरससुगंधसहिमालतीमलैज
परिमलैमिलिंगीकैयोदेवमनिरत्तनक
नकजोतिजतनअतनजोगमवन
विशेषनेषललक्यो गदगदवोलनि
अडोलस्वमसुदमदआनदपुलक
मोहिमरषिठुकलक्यो अलीज्योगु
विंदअदभुतगुनगावेत्योउदितइंदुमु
दितसुषारविंदफूलक्यो ५० अथ
सुद्धपरकीयाकेरसभाव दोहा

का
२०

सुद्धपरकीयागुप्तात्रिअंजनकअंगयस
चेत्त नयउत्सवनिसिव्याधिमिसिमि
स्रत्तगुप्तसंकेत्त ५१ स्वसामुद्दीदृष्टि
पिरलोकभयंचनिविष्ट अंगअंग
करअंगुलीमर्दअधररदपिष्ट ५२
तंभकंयत्तनदीनत्तामदभयचायलत्त
र्कें उत्कंठाअवहित्थ्यरुजअतिउन
मादउदर्के ५३ यथा ब्रजकेवधूज
नएजनमिलिआगराजिकातिककु
हूकीअर्धिमधीतमभंजीसी देवसरि
सरजमिलेहीमेरुआसपासदंपति।
पावकपरदहिनानुरंभेजीसी गिरि
कीगलिनअलिनलिनकमलकोक
आलोकतकेसरिकुरंगसारंगजीसी।
तरुनतमालतरुमंजुलप्रवालमीक्षि
मंजरीरसालवालभंजीसालभंजी
सी ५४ इतिस्वीयादिरसभाव अ

यस्वरूयासुद्धस्वभावस्वीयायथा कुं
दनसे अंगनवजोवनसुरंगाउठेदुरजउ
तुंगधन्यप्यारोयरसतुहै सोहतकिना
रीवारीतनसुवसारीदेवसीससीसफू
लग्रधपुल्योदरसतुहै वंदिश्राजराउ
वडेमोतिनुसोनीकीनप्यहसततननि
नसे। रूसुमरसतुहै गोरीगजगोनी
लोनीनवलदुलहियाकेभागभेसुह
पेसुहागुवरसतुहै ५५ स्तीस्वभावस्वी
या गोरेसुघगोलहेरेहसतकपोलवडे
लोईनविलोलवोललोनेलीनलाज
पर सोभालागेलालल्लषिसोभाकवि
देवद्दविगोभासेउठतरूयसोभाकेस
माजयर वादलाकीसारीदरदाउन।
किनारीजगमगीजरतारीफीनीफालरि
केसाजपर मोतीगुहेकोरनिचसक

का
३९

चहूँ ओर निज्योतो रत्नतरै यनिकी ता
नीं दुपँजराजपर ४६ सुद्धस्वभावप
रकीया स्वरूपा ओमित्तहै आईहु कि
ऊरूकी फरो या रूयफरसोफलकिगईफ
लकनि फ्राई की पैनि अनिआरे कै
सहजकजरारे दृगचोटसी चलाई चित
वनि चंचलाई की क्यौंन जानैको ही।
उडिलागी डीठी मोही डरर है अवरोही
देवनिधिहीनि काई की अवलगी आ
षिनकी पुतरी कसौरि नुमै लागी रहैली
कवाकी सोनो सीगुराई की ५० दोहा
अमिधा उत्तमकाव्यहै मध्यलक्षना।
लीन अधमव्यंजनारसकुटिलउल
टीकहतनवीन अध० स्वीयमुग्ध
नरतिसुधा ओट सिता यचपसित्त पर।
कीयाककेसस्मिता मारिचयस्चिपनि।

तिक्त ५९ परकीयाजद्यपिसरसकुन
गुन लैगौरवहीन कामुककर्कसकुटि।
लरसत्तिहीपरसत्तसत्तहीन ६० अ
पनाइकाभेदसवी तेरहविधिवय
भेद अरुकहत अवस्था आठ स्वी
यापरकीयादुविधसब अर्थेतिहिया
ठ ६१ रसयाचरसभाववसकहेस
वतिहु अर्थे अलंकार अरुरीति
रसछंदनसुनहुसमर्थे ६२ इति
श्रीसबरसायनेदेवदत्तकविविरचिते
रसादिवर्णनषष्ठप्रकास॥ ६॥ अ
थसरीति॥ सबजीवतिहि अर्थेस
का मुंवयसुसरससरीर चलतुरीतिसों
छंदगति अलंकारगंभीर १ तातेय
हिलेवरनियेकाव्यद्वादसरीति अ
लंकारसव्यार्थकेछंदकहौक्रमवी
ति २ कहतचहाउलहत्तहियोसु

का०
४०

नातुनत्तचित्तभीति सब्द॰ग्रथेभा
षासुरसवसकाव्यदसरीति ३ ग्र
नुप्रास॰ग्ररुजमकजुत॰ग्रद्भुतवारह
भारहभांति हे॰ग्रछितनीकीलगे
ग्रलंकारकीपांति ४ रसोरीतियेदु
द्वैविधिनागर॰ग्ररुग्रामीन नागरगु
न॰ग्रागरद्युति॰ग्ररससागसुचिहीन
५ नागरगुन॰ग्रासरद्युतिग्रामीनगा
तिसमुरुत्तयरसप्रवीन कामुकहा
त्तिनकोजुसठकामुकहृदयमलीन
६ सुंदरसरससरोवरीहंसवामल्ताजे
हिवीच तहांगरजिरजपुंजगजयेठि
उठावत्तकीच नागरग्रास॰ग्रंतरु ७
तोमालतिमृदुमकरंद तजिवेयाके
पानचटीमानत्तु॰ग्रलिन॰ग्रनंद ८
जोलैयावैयावैयदम।नी।स्वासससी
रनमोद मधकोकि।विरकुंनयर

करतुनविवुधविनोद ९ अथका
वरीतिनाम अर्थश्लेषप्रसादस
मसधुरभावसुकुमार अर्थव्यक्ति
समाधिअरुकांति ओजउदार १०
सव अर्थदसभावमिलिनिकसैयेद
सरीति अनुप्रासजमकोत्तहासव
चित्रकरिप्रीति ११ अथअर्थश्लेष
एकवाच्यपदमेजहानिकसैअर्थअ
नेक असिथिलअक्षरवंधजहअर्थ
श्लेषविवेक १२ उदाहन मतिको
यकरैपत्तिसोंकवहूमतिकोयकरेय
तिसोनिवहै कहिदेवनमानवधार
तहैसवभावत्तमानवधरजहै अव
लोनकहू अवलोकत्तुमैअवलोक
त्तुमैसुखदेत्तरहै किनिनासुकहोहम
सोतिनकोहमसोतिनकोकिहिभाति।

का० ५१

कहै १३ इतिनागरश्लेषनागररीति लच्छन अनरसरसु अनरथ अरथु सुवचनकुवचनमाइ वैरप्रीतिप्रनु। चित्तअचित्तनागर अनचहचाह १४ अथग्रामीनश्लेष मोवरेहीसनार ग्योउमुनैवरवीरनिमोनलगहै देव मनोमनोत्सईहियमोहनसोमहं सफ्कोहै होतनदीनदयालहरीवहि रीगहिवरसाउनगहै धमघनीधुरवा चढ्ढ़ओरचितेचपलोघरवरिहै १५ ग्रामीनरीतिलच्छन रसमेअनरसुअ रथमेअनरथवोलुकुवोल जोगय। दनिअजोगयताप्रगटग्रामगतिलोल १६ अथप्रसार सब्दअरथसुंदरज हावर्णनवर्णप्रसिद्ध वचनसप्रसन्नप्र सादमैभव्यकाव्यरससिद्ध १७ नागरप्र सारयथा मूरतिजोमनमोहनकोमन

मोहनी के थिर हूं थिर कीसी देवगुपा
लकौ बोल सुनें सियरानि सुधा छवि
पाथिर कीसी नीके करो बाहूं फा किस
के नहिं नैनन निलाज घराधिर कीसी
घरन प्रीति हिये हिर कौ। धिरकी थि।
रकीनु फिरौ फिरि कीसी १८ ग्राम्य
न अमाद गूजरी ऊजरे जोबन को क
छु मोल कहा दधि कौ तब देहो देव अ
हो इतराहु न हो इन ही सदु बोलनि मो
ल बिकैहौ मोल कहा अनमोल बि
का हुगी रौ चिजवे अधरा रसु लैहो
कैसो कही फिरि तौ कहो कान्ह अनेक
सु हैहू कका की सौ कैहो १९ इति
ग्राम्य प्रमाद अथ ससता जहां भाव यदव
एौ सम अनुप्रास अनुसार विषम।
न अक्षर एक सगा सो समका सुढार
२० यथा कामकी कुमारी सी परम।

का० ६२

सुकुमारीयहजाकोहेकुमारीमहाभाग
वाजनकके सलज्जसुसीलसुलुना
ईकीसलाकासेलसुतातेसलोनीवे
नवीनाकेननकके रवी॰अवहीतेव
नदेवीरासीदेवीदेवदेवीतें॰अगनगुन
गनेहेगनकके कनकवनकत्तनुतन
कतनकतनुफनकमनककरकंकन।
कनकके २१ इतिनागरसमता ॰अ
प्यग्रामीनसमता नाजकोनाजुकन्यो
जुकइनिजुकेविजुकावनजोकछुजी
को फूटकोफाटकुफाटकीफेरसुवंदु
॰औफंदुयरेवकोफाको परवयोनुप
नारेकोपानी॰औघापकोपुंनुवुटायनो
यीको नेहुनिहोरेकोनाहकहीकोनना
स्कहीकोनहिकछुनीको २२ इतिस
मता ॰अप्यमाधुर्य रसनिचुरत॰अ।
तरनितेमधुर॰अर्थेसुखदानि सुंदर
॰अर्थेसमुंदयदसोमाधुर्यवषानि २३

नागरमाधुर्य रसनिचुरत अछरनि
तेमधुर अर्थसुषदानि ॥ आईहुती अ
न्हवाउनना इनिसो धोलियेवहसधे
सुभावनि कंचुकीछोरीउतेउवटैवेको
ईगुरसे अंगकीसुषदायनि देवसु
रूपकीरासिनि हारतियाइतेसीसते
सीसतेयाईहनि ह्वैरहीठौरहीठाटीठ
गीसीहसैकरठोरीधरैठकुराइनि २६
ग्रामीनमाधुर्य रूपकेलालचीला।
लचितौन चितैसुषुचीकनोचकैन।
चाहे घेलमेंवैपासकुचावतचंचल
अंचलराविउचावतवाहे देवकहा
कहौ ऊने अघानके स्वावती सूनेन
छ्वावतीछाहे नेहनरानिहिचित्तसु
जानतिनाहींभाग अवमाहे २७ अ
यसुकुमारता सरसवचनरचना
ललितकोमलपदसकु अर्थ सुनि

क्रा० तसकर्भमिथिलसदयसुकुमारतास
९३ मयें रहे नागरसुकुमारता लागत
समीरसंकुलतहकेसमलर्भगफूलसे
ह्रकूलनिसुगंधविथुरेयोपरे इंदुसोव
दनमंदहासीसुधाविंदुभरविंदुज्योसु
रितमकरंदनिमुरेयोपरे ललितलिला
रसमलकभलकभारमगमेधरतप
गजावकुचुरेयोपरे देवमनिनपरपद
मपदऊपरहूंसरपरभनरपरगारघुनिचु
रेयोपरे २७ ग्रामीनसुकुमारता ॡप
दघ्वीलेधोवपीवतसदीवरसलंपट
निपटप्रीतिकपटटेरयरत मांभयम
धभर्भगहुलतावुलतसासमदुलचरन
चारुधरनधोरेपरत देवसधकारटक
टकतसधकधोवेसाधवीसधरसधा
लालचलरेपरत दुहपरजैसेजलरु
हपरसतरहामुहपरमाईपरेसुहपरु

रेयरत २० यथावा मंजुलमंजरी
यंजरीसीहैमनोजके मंजसम्हारति
वीरन रबनच्यासननीदयरैयरी।
प्रेम मजीरनकेजुरजीरन देवघरी
पलजातिघुरी मसुवानिकेनीरउसा
ससमीरल माहनजाति महीरम
हेतुमैकान्हकहाकेहोकाहूकीबीरन
२९ चोरमिहीचनीकेमिसमोहन।
मोहिनयावेफिरैवसुधाहूँ देखोजौंद
वकुलनिमेमिलिकुलनिमैहोरहो
वहुधाहूँ केसरिचंदनवंदनमेमि।
लिकुंदनमेतनसेनदुधाहू हूमक
रंदुरहो अरविंदमेइंदिकेमंदिरविंदु
सुधाहू ३० इतिसुकुमारता अर्थ
व्यक्तिदोहा अर्थ्यकदेसवहीतसमु
नसुनतहीजाहि आनन आवेप्रा
निवे अर्थव्यक्तिकहिजाहि ३१ उदा

का० ९९

हरन सधेहैनंदजसोमत्ति तौ ॥ प्रति
सधीचलाव्रज ॥ औरचह्नी दैयाक
न्हैयाकीवात्तकहाकहौसर्गोयत्ताल
पठावत्तह्ती देवज्जुकात्हिनयास
ग ॥ आवैगी ॥ आजुजौजाहिगीलाज
सज्जती छाछि ॥ दावत्तछोहरीजा
नत्तछैलछुवोजनिछात ॥ अछैती
३२ धामीन ॥ अर्थोयत्ति गोकुलग्वा
रनिछारन्हिलैव्रजधारनिधारनि
दोसचाई कुंजनिमैयसुघुंजनि
मैपिकपुंजनिमैवनवैनुवजाई
कंसनहीजदुवंसनदेवजठनित्तठी
कचकीठकुराई कान्ह ॥ महोकंहौगा
ईकहाकिनतूंह्नी चित्तकीचातुराई
३३ इति ॥ अर्थोयत्ति ॥ प्रपयसमाधि
॥ औरवस्तकोसारलेधरै ॥ औरहीठा
र लोकसीगुडनघे ॥ अरप्युसमाधि

विधिसिरमोर ३४ नागरसमाधि देव
मैंसी सवसाथोसने हुकैनालखागमंद
विंदुकैभाथ्यो कंचुकीसैंचुयरयोकरि।
चोवालगाइलियोउरसोंअमिलाथ्यो।
लेमधनलगुहूगहूनेरसमरतिमंतसि
गारुकचाथ्यो साडेरलालकोसाडेरा
रूयमैनैननिकोकजराकदिराथ्यो ३५
अथयामीनसमाधि षंजनमीनम
गीनिकोछवि निशांचलचंचलतानिसि
षाकी। देवमयंककेअंककीयंकनिसं
कलैकजलली कलिथाकी। वानीवसी
अखियानिविसेविसपूरतिवीसैवि।
सेविसिषाकी दीपतिमैनमहीपसि।
षाईसमीपसिषागहिंदीपसिषाकी।
३६ इतिसमाधिअष्टकानि अथ।
कलोकमर्जादतेसुनतपरमसुखदो
जाहि चाटुवचनराकान्तहविकानि

का०
२५

ववानदूनाहि ३२ यथा गोकुलगा
उमैकोकिलनारिनसौहैसुरूपसुसी
लसुभावनि पैजगादीसजिहारेईसी
ससुहागश्रसीसदईसुखदाइनि ए
तीयेवैसमैगातीवडीदुजिदेवजोदेवैय
केरानियाइनि एसीकहाइत्तोगुनुय
श्गाहोगुरुतागुनगोविगुसाईनि ३८
ईगुरुसोगुराइनुवीचनरीश्रगुरीश्र
त्तिकोमलत्ताइनि चंदनविंदुमनोदम
केनयदेवचुनीचमकेज्योसुनाईनि
वंदत्तनंदकुमारुजिहारयेराधेवहूव्रज
कीठकुराइनि नूपुरसिंजितमंजुमनो
हरजावकरंजितकंजसेयाइनि ३९
श्रथग्राम्यकानि वारेईवैसवडीच
तुरैहौवडेगुनदेववडीयेवनाई सुंदर
हौसुघरेहौसलोनीहोसीलभरीरसरू
पसनाई राजवहूबलिराजकुमारि

अहो सुकुमारि नैननोमन नाई नैसि
कनाहके नेह विनाचकचूरि हैं जैहैं स
वे चिकनाई ४० इति कांति अथ ओ
ज गघर चनागोस्वगुनानि अर्थ सव
अतिधीर दीहवंध अक्षर सुमिल ओ
जउज्यासगभीर ४१ यथा अनोध
नऊ परमंडित मनिन्हपुरज्यो अपर
परसरोजु कोजु पंदनु जुहारे जिन्हे
इन्द्रानी सुजसु वरने वानी कहानी जि
नकी कहीक है सुकोन नंदनु विरंचि
औ महेसु उमहेसु जिन्हे ध्यावत गाने
सुगुन गावत सुरेस सेस छंदनु त्रिलो
कठकुरानी महाराज राज रानी सीजा
नकनंदनी के हो सुंदर पद वंदनु ४२
अथ प्रसादन ओज ईहरस वातनिव
सीठवसकरिवि केठी टमधकारचपचा
वतचोर ऊवल तुटाऊवर यान वपाऊ

का० पहुलंपरलुटाऊनछकपर माखनचोर
१६ गोयनिगोहनमेमगुनयोहनखेमोहन
भन्नयरूप हविकेराषनचोर दूध
चोरदधिचोर अंबर अवधिचोरचित
हितचोरचितचोररेमाषनचोर ५३
यथावा कंपतुहूयोनहियोकंपतुहमा
रोकोहू सीतुसे अनोयोनेकसीतमे
ससनदेहू अंबरहोयाहरि अंबलडु।
ज्योरोहोतुहरिकेहसीनकोऊहसेतो
हसनदेहू देवद्युतियेयिवेको।लोइनमे
लागरहे लोइनमेलाजलागेलोइन
लसनदेहू हमारेवसनदेहदेवत्तहमा
रीकान्ह अबकुवसनदेहव्रजमेवस
नदेहू ५४ इति भाज अथ्यडुदारत्ता
दोहा जाहिसुनत्तही ओरकोडुरिहो
तुडत्तकर्व कोहियत्ताहिडदारत्तासुन
त्तसुनत्तहियहर्षु ५५ यथा कूरि

किसिल्लानिसोसुधास्योसुधासंदिर
उदधिराधिकोसो आधिकाइदुमगोय
संदु वाहिरतिभीतरतोभीतिनादेवे।
येदेवदूधकोसोफेनुफेल्यो आगानय
रसवंदु तारसोतरुनीतासेठाठीकि
लिमिलिहोतमोतिनकोज्योतिमिल्यो
मल्लिकाकोमकरंदु आरसीसे अंव
रमे आभासीउजारीलागोप्यारीराधि
काकोप्रतिविंवसोलगतुचंदु ४६ प
द्या ज्योतिनकेजूहनिदुरासदहुरू।
हनिप्रकासकेसरूहनिडेज्यासनिके
आकारनिफटिकअटनिमहारत्ज
नकूटनिमुकुतमनिजूटनिसमेरत्त
नाकरनि छूटिरहीजोन्हजगुल्हटि
छुतिदेवकमलाकरनिफूटिफूटिदीय
तिदिवाकरनि नमसुधासिंधुगोद
परनप्रमोदससीसामोदविनोदवहू

का०
५७

कोरकुसुदाकरनि ४७ ग्रामीनउदा
रतायथा आईहौं देषिवधूइकदेव
सुदेषतअलीसवैसुधिमेरी राष्यो।
नरूसुकछूविधिकेघरल्याइहेंनटित्तु
नाईकोयेरो रावोअवैवहरोवेहैंवेस
मेरोगीमहाविषुधरिघनेरी जेजग।
नीगुनआगरीनागरिहूहैंतेवाकीचि।
तोतहींचेरी ४८ इतिउदारता अथ्थे
सरसुंदरसरसअगटभावरसप्रीति
उत्तमकाव्यसवगुननिआगरनागर
रीति ४९ असमवंधअमअथदर।
सअसत्यसलीन अगटग्रामयकवि
ताअधमममधमाधमविधियीन ५०
अनुप्रासअरुजमजेकहेकविनव
भांति तेचित्रालंकारमैवरनतुवर्णप
विसंति ५१ इतिश्रीसरस्साईने
देवदत्तकृतेकाव्यनागरग्रामपदसरी

त्रिवर्णन सप्तमः प्रकास ७ अथस
ब्दालंकारचित्रकाव्यवर्णनंदोहा।
अलंकारजेसब्दकेतेकहिकाव्यसु
चित्र अर्थ्यसमर्थनयाइयत्तअक्ष
रवचनविचित्र १ अधमकाव्यताते
कहतकविप्राचीननवीन सुंदरछं
दअमंदरसहोतप्रसन्नप्रवीन २
अतिहिरचित्रविचित्तादरसतुरसु।
दिनसेषि ज्याननुसीतनधानकी
कनिकतनिकदुषदेषि ३ जिनहि
नअनुभवअर्थ्यकोभावतुनहिरस
भोगु चित्रकहतुतिन्हेतुकछुभिन्न
भिन्नरुचिलोगु ४ अनुप्रासअरु
यमकयेचित्रकाव्यकोमूल इनही
केअनुसारसौसकलचित्रअनुकू
ल ५ अथअनुप्रासलछन यरर
रवैयद्राकसेआवैअर्थ्यअहूर अ

का०
९८

त्तरलपिटेसंगालेअनुप्रासरसपर
है यथा पीछेत्तरीछेकुचाछेनिसो।
त्तावेचित्तवैरीत्तलाल्लचोहै चोगु।
नोचेतुववाइनकेचित्तचाइवटैहैचवा
रैमचोहै जोवनुआयोनयापुल्तग्यो।
कहिदेवरहैगुरुलोगरिसोहै जीमेत्त
जैयेजोजयेजित्तेतिषत्तयेयेकलंकु।
चितयेजुसोहै ७ इतिअनुप्रासअ
थयमकालछन वैइयदवैठनउठन
फिरिफिरिअरथअनंत आदिअं
तमध्यहुसकलजमकवषानत्तसं।
त ८ यथा निसिवासर रसात्त
लत्तोसरसातघनेघनवंधनुना।
थ्यो व्रजगोकुलऊब्रजगोकुलरूप
रज्योंघरज्योघरलोमुषभाष्यो। करु
नाकरकोवरसैत्तलियेकरुनाकर
कोवरसेअभिलाष्यो। मुरकोनक

हसुरकोरिपुरी अगुरीनसुरयो अगुरीप
रगाथ्यो ९ अनुप्रास अरुयमकक
रिहेसनाथ्यकविरीति यातेह्वादसरीति
रसकोकवरनत्तकरिप्रीति १० सर
सनाम ककरिजमककेवरनतभेद प्र
नेत छंदबंधसुंदरसरसजह्रा आदि
मधिअंत ११ छुटेकुटेलपिरिपुरे अ
सकलसकलकवित्त चलेजातइक
एकसेगहत्ततजत्तयदमित्त १२ फल
केसुषकोलसेफूलिरहेसुसुक्यानि
मनोसितकिंजलके छलकैछविनी
लसरोजसेनेनलसे अलिआवलि
सी भलके पलकैनलगेपुरलोगनि
कीगुरुलोगनिको अधिआललके
वलकेविनयसतपछरोहेभरपतियाए
जेपुन्यनिकेफलके १३ फुलेमहे

सुहागदिनुत्तलैहैतिहारेत्तिनत्तलैहैनि
हारेसे। अयानहीकीनलहै नल
हैनभागकीप्रवाहुसोद्रुकूललहैदुकू
लहैउजारोदेवप्यारोअनुकूलहै कू
लहैनदीकोप्रतिकूलहैगुमानुरोआदू
लहैसुजौनजोनजोवनअद्दूलहै दू
लहैहियेमाहियइलहैनचैबनेरीविह्री।
रूपलद्दूलहैनिहारूपलद्दूलहै १४ सा
सुनिकेसुनिकेकटुवोलनिवोलीनया
ककहीदसत्तेसी। जानकीनाथकेसा।
यचलीजिसिमंदिरसुंदरत्पोलसत्तेसी
मारपहारनिहारनिहारिरहीउत्तहीउ
त्तहीवसत्तेसी वेनीगहीवनिकेवरही
लपिटीवरहीहसत्तेसी १५ अंतरकै
नाहिंअंतरकैमिलिअंतहूकेसुनिरंत
रधारे उयरवाहिरउयवाहितकूप।

रवाहिरकीगतिवारै वातनहारित्तवा
तनहारतिहारत्तिजीमनवात्तनहारै दे
वरगीसुरत्योसुरत्योमनुदेवरकीसुर
त्योनविसारै १६ केसीघोएकहित्तव।
निम्प्राईसुकेसीघोएकहित्तवनिम्प्राई
निर्मलमानसहंसनिकाईसोनिर्मल
मानसहंसनिकाई जोवनजोतिनकी
मधराईसोजोवनजोतिनकीमधराई
सोधनसोधनकोनसुधाईसोसोधनसो
धनकोनसुधाई ७ अथगहार्थेवि
वयथा सोनत्तवारुषरेषनकोप्रवि
यानिलियेसुषसोकलहेज सोतिन
केदुषदूषनदेवसुसोतिनकेसुषसोक
लहेज सोमुषसीमुषसोमिलईसु
षसोरसनासुषसोकलहेज वात्तक
लोरविसातिरहीनरिसात्तिरहीसुषसो

का
५०

कलहज १८ अथयार्थेविव राधेराधे
हरिहरिविहरैलेवचनवाचअवननिवे
दधनिवंसीजोसुरसरी भावनाहिहजो
करोभावनाभमरमोहिमात्योभाततेरे
पदपंजकसुरसरी देवकविकीजेपद
सेवकुवनाअव्रजदेविनिरवारिमोहमा
याकीसुरसरी व्रंदावनुवासकोविला
सकोकेलासुहजैमनकोतरनिमुतात
नकोसुरसरी १९ अथयेराग्यरसवि
व तोनिकेगुननिडारहैनिरगुनदेव
सेवसरगुनवरगुनहीवकतहै सोव
तहजगातनसोवतजगातजगातयति
वुनीईजगातयतितकलहै वाहिरहभीत
रअवाहिरअभीतरहैसुषीसुषसोन
दुषदूषिनयकतहै आसकतछाडेता
सुनासकतहनजासएसेआसकतछि

तुच्छुरिनासकत्तहै २० जगमगज्योति
जगमगज्योतिनहितलजोतिनहितल
ताहीमगडमगेफिरै सवहित्तजत्तवि
त्तसवहित्तजत्तवित्तअभ्यासजत्तनल
भ्यअभ्यासजगेफिरै कामनाकरत्तनि
हकामनाकरत्तहूजेनाकरत्तडूतेकरत्त
हूजेभगेफिरै अस्तुतिवेदपारगअपा
रेगअपारगातिजारःगनहूजोरगत्ता।
रगरगेफिरै २१ रूपहिनदेषत्तनिरू
पहिनगंधरसस्तुनेसवदेनसवदेनही
करत्तहै आपुरसआपुनायरसकरै
दूसरेकोइंद्रियनिजीतेमनजीतेजिव
रत्तहै मानन्नकोमानुकेअपानपोनु
रावैवेविमानायासभोजनभयोजन
धरत्तहै ओरवेजमीत्तनअहंजमीत
नंकनहीद्वगकंजमीत्तरत्तसंजमीत्तर
त्तहै २२ आगेकेसुक्षतवत्तआगेके

का० ५१

सुकृतव्रतकरतहूकरतनकरतनतारनी।
करनीकरतकरकैरनीकरततातेधरम।
निरातेमनरातेधारधरनी नानाकरम।
निकरिनानाकर्मनकैसोकविनुवरनी।
तिसोकविनुवरनी करुनाकरतकरुना
करतदीनकरुनाकरतकरुना करतक
रनी २३ वरनतवुद्धिअनवरतवरतव
रतरतकरतानननकरतकरतनमातहै
देषतसुनैनहीसुनैनहीविषैनिकोसुनै
नहीनहूजेकोअरूजेरूपमातहै वचन
वचैनमनवचनवचैनजगजोगुनगु
नतगुनगानतेगमातहै अनुभैअ।
भीजेदेवअनुभैअभीजेसुषसागरस
हूसोसुषसागरसमातहै २८ सावोत
रजनीदिननाचोतरजनिहोतजातम
रिजनजेतेमरजनभोमेहै देवसुनिस
रजनसरजनसोरहैतीनिकालजीव

जालकालमुषहोमेहे जाकोएकरोत्त
एकरोत्तछितिछोमननहीएकाएकरोम
प्रतिपात्तकरोमेहे जोमेकरौजोमेत्तो
मेरोकहम्मोमेकहैत्तोमैत्तजत्तोमेत्तो
तोमेतेजत्तोमेहे २५ इतिवैराग्यम्सरस
भेद सरसवाक्यपदअर्थत्तजिसवु॥
चित्तसमुहात्त दधिइजमधपायसत्तज
त्तवायसचासुचवात्त २६ अयनीअ
यनीरीतिकेकाव्यअरुकाविरीत्ति सव
चित्तघघिसधररसरसभावमसुघ्री।
ति २७ सजककाव्यविनुअर्थकेक।
ठिनअर्थकेप्रेत्त सरसभावरसकाव
सुनितुयजत्तहरिसोहेत २८ पर्वत्तहा
रकपाटधनुकमलआदिविहुबंध का
मधेनुअरुसर्वत्तोभद्रादिकरसांध
२९ एकदुअक्षरआदिविहुअरुअनु
लोमविलोम अंतरलापयहेलिका

का० ललितवरनरसहोम ३० कहतुजप्पा
५२ रयन्यायकरिकरतुनही अवलोय स
हतुनखिसारुयंथकोकघोचाहिसंदेय
३१ अथकामधेनुकाव्यप्रथ्ये दानज
पजयज्ञाननयान्यदाउसवेलहु नय
नवयनसववसङ्ग आराधेहरहु व्यास
पाठधववधामवसावोवसरभवनकन
ध्यावोहितिध्यानकधिसजननतामेम
न तनव्यायामेनस्वरहननतदारारसाल
रावकघर वासनानंदचाचहितिरस।
नाकवासमदलविमदर ३२ सरलस
रसारमतुमाकामरसगमकभावकनि
आराधोनिजवस्तुलहोजनयहोम।
तोसमनि रतजन्मनिजहितहियेतुहि
नयननिनिजलज नयनसरसर।
सलगलनरनहियाहिकरकवटवज
दासहुवध्यानरचहुरवजनिनिजव
रदचरनध्यावहुसदा जानहुवकन

रससरनिमतुतुमनिरससरनकवहू
नजा॥३३॥ साहिवमरारुविकारमो
नमेदानंतुलयाकतिरा॥इतिचतुर्दे
तुन्यष्टपावान॥ ॥ अथसतोनद्र॥
अावतहैनितततिनिकोदुवदाऽकतु
ननिकेवितहीके भावतहैमतिसंत
निकोसुषगाऽकवीननिकेमितहीके
धावतहैरतिकंतनिकोजुवयाऽकपी

दा	न	जो	स	ज	प्रा	त	न	खा	मा	मा	न	प	दा
उ	स	व	लं	हु	न	प	न	व	प	प	न	स	व
व	स	हू	ग	हू	भा	रा	धे	हू	र	र	हु	आ	स
पा	र	धं	व	धा	म	व	सा	मौ	व	व	स	र	म
व	न	क	न	ध्या	यो	हि	वि	ध्या	न	न	कु	षि	स
जे	न	ता	मे	म	न	ते	न	का	या	या	मे	न	स्व
र	ह	न	तु	दा	ग	र	सा	ल	रा		कु	घ	र
वा	स	मा	ने	द	च	र	व	ट	ति		र	स	ना
क	बा	स	म	द	रु	वि	म	द	र		स	र	ल
स	र	स	र	म	तु	मा	का	म	र		स	ग	न
क	भा	व	क	नि	श्र	रा	धौ	मि	ज		व	स्क	ल
हो	ज	न	प	हो	म	तो	म	नि	र		त्व	ज	म
मि	जा	हि	त	हि	ये	तु	हि	म	य		न	नि	मि

का० ननिकेचित्तहीके भावत्तहै प्रीतिसंतन।
१३ कोसुखदास्कदीननिहिहीके ३३ ॥
कालादिकाव्या भालमलेमिलिमा
लिलुभमलिमृलमुललुमलामभली
लै बोलीचलचलचोलचलेलचिलो
चिचलाचलचालचलीलै कालीके
कूलकलोलकुलाकुलकेलिकलालि
कोकोलकलीलै लालिलोलोललल।
लालुललीललुलैलुलिलैललिला
लिललीलै ३४ आवत्तहैनातित्तत्त।
निकोदुखघास्कछीननिकेचित्तहीके
गावत्तहैमतिमंतनिकोमुखगास्कवी
ननीकेनिताहीके धावत्तहैरतिकंतन
कोजुखपास्कपीननिकेचितहीके धा
भावत्तहै प्रीतिसंतनिकोसुखदास्कदी
ननिकेहित्तहीके ३५ नवमोदुखके
नवदेवरद्यालवसोन्नताभमजहोन
कलो नवरोगसुचेतननाविहुरेकव

हुकलवाहियरैनयलो नवमोविनमा
नितवानीतहीनितसोवसचाविवार
मलो नवलोवितचैननहीविलचो
परमारसोललतलानहलो ३६ अनु
लोमविलोम लोहनलाललोसरमा
रयचोरुचिहीननचैजविलोचन लोन
स्याविरचासवसोतनिहीतनिवातनि
मानविमोचन लोयनरपहिवालक
हवकरेछुवितोनतवेसुवरोचन लो
कनहोजेमजातनसोवलजादवदेकन
केदुवमोचन ३७ इतिअनुलोमविलो
मद्वंद अथगतागत सुरोयसरासन
वारकनेततनेकरवानसरासयरोसु
सुरोनरमातसवेवनसेललसैनववे
नुम्हारनरोसु सुरोपनभाषविषेवसवा
ससवासवसेविषभानपरोसु सुरोक
ललानहमोमनमोनेनमोनयमोह

का
४६

चलास्तकरोसु ३८ अथअंतरला।
पिकादोहा रमनीअरधनलेयतनवाह
नथानानिसगो संगयवगोअंगयाव
ऊ देवदत्तअयवगो ४९ स्मारस्मायत्ति
गुलनयतिसेवोधनहिंसेव समाधा
नसत्तअसत्तजनरंजनश्रीहरिदेव ५०
छंदे चारिवरनपदाकसकलयर।
यहिसुनहिसजि अथमहोनसंक।
लयकलयकलयराकदोहाजि दा
नतिचारयोईठसमगनसदाराकविनु
दातनिस्समनिचहूतिहूविनुहाहिरैनि
दिसु विपरीतयलेकसंमहित यलस
सयद्धुफेरिभा कहिदेवकसंलकस
ठलाटियलवकससुनयहेरिभा ५२
इतिप्रहेलिकाचित्र सव्वरसायनना
मयहसव्वरर्थरससार चित्रकहो
संक्षेपतेहैविचित्रविस्तार ५३ स

द्र अलंकारौ सु विधरूप चित्र जाति छंद
अर्थ्य अलंकार निवरनिक हि होछंद
असंद इति सद्रसायनेदेवदत्तके
विविरचित्ते सब्दलंकार चित्रकाव्यव।
र्णन अष्टमप्रकास ८ अथ अर्थ्या
लंकारनिरूपनं दोहा। कविताकामिनि
सुषदसुवरनसरसुसुजाति अलं
कारपहिरे अधिक अद्भुतरूपलषाति
१ अलंकाररस अर्थ्य के सो हासुवर्ण
रूप अंग अंगनमनिके भेरथ्थेव्र
जभूप २ मुष्यगोनविधिभेदकरि है
अर्थ्यालंकार मुष्य कहो चालीसवि
धिगोन सुतीसप्रकार ३ मुष्यगोन
के भेद मिलि मिश्रित होत अनंत गु
नअगरसबकाव्यमें ससुगत है मतिसं
त ४ अलंकार में सुष्य है सोउपमा
और सुभाव सकल अलंकार निविषै

का० घरसत्त ग्रात्रभाव ५ अथ स्वभावोक्ति
५५ अलंकार केवलजहास्वभावविधि
दरसतरस- प्रासन्न सोभावजासो
सवैसमुक्तसुनत्तप्रसन्न ६ उदाह
रन्न इंदिराकेमंदिरसेसुंदरवदनवेम
दनसदेविहसेरदनछविछानिछानि
ऊन्मेडरडरडरजिहोजसीजेगातनि
मेगात्तअगिरातसुजभानिमानि ही
हीतेदोरियोरिटुरिटुरियोरिहीत्तिमुरिमु
रिजात्तीदेवदासोसकिमानिमानि पी
तमुखभाषिआयीतसुजानिनिजगे
लायिटत्तजात्तप्रात्तपीतपटुत्तनितानि
७ आवोक्योरराडठीफारोबाभाकिदे
बोदेवदेविवेकोदाउकिरिदूजेघासना
हिने लहलहेअंगरंगमहलकेअंग
नमेठाढीवहवालत्नालपगानिडयाहे
ने सोनेमुषलचीनिनचानिने नकौ

नकीडुरतिनओरटोरसुरनिसराहि
वामकरबारहारअंचरसम्हारेकरैके
योंछद्दकंदुकउछारेकरदाहिने ८ प
प्यावा देषीनयरनिदेवदेषिवेकीयरी
वानिदेषिदेषिहूनीदिवसाधउपज।
तिहे सरदउदितइंदुविंदुसोल्लगतुल
षेमुदितसुधाविंदुइंदिरालजतीहे
अमुतरुषसीपिरुषसीमधरुवानी।
सुनिसुनिरवननिम्रषसीभजतिहे
मंदीकरयोसेनयरतंत्रीकस्योवेनानि
केविनातारतंत्रीजीभजंत्रीसीवजति
हे २ जगमगेजोवनजराऊतरिव
नेकानओटनिअनठोरसुहासीहु
संडेपरत कंचुकीसेकसेंग्रावेउकसे
उरोजविंदुवंदनलिलारवडेवारघुस
उपरत गोरेसुवसेतसारीकंचनकि

नारीदारदेवमनिकुमकालमाकिहुमदे
परत वडेवडेनैकजरारेवडेमोतीन
पवडीवलमीनुहोडाह्योडिडमडेयरत
१० इतिभ्रमावलि अथउपमाल
त्तनदोहा गुनऔगुनसमतोलिकै
जहाएकसमऔर सोउपमाकीहवा
कयपदसकलअर्थलघुठौर ११ उप
मायोपस्थल वैरप्रीतिमदईरखाकी
डावचनविसाल स्तुतिनिंदाकरुनार
याहर्षत्रासउपहास १२ सुन्यतिसां
तिसंदेहसुयनिश्चयतर्कविवार ३
धर्मआदरअनादरमानप्रमानप्रसा
द १३ विनतीछोभनछिमायनआ
भायनअपमान अंगीकारउदारवा
अहंकारअनुमान १४ उपमासं
भवअसंभवअनुगुनसंगअसंग
तात्पर्यधुनिव्यापहवाच्यलन्यसमं

१५ एकदेसअसकलसकलवाक्य
पदलवअंग सकलअलंकारनुवि।
वैउपमाअंगाउपंग १६ सकलवाचो
पमायथा हृषिकेसहलधरेअगार।
उदारद्वारकफरोकरोषामदेवालचिकरा
तीमे ऊधअधमललरलपटनिलये
टेपाटपटलसुगंधसेजसुषरसुहाती
मे सिसिरकेसीतभियाप्रीतिमसने
हदिनछिनसेविहातदेवरातिनियरा
तसैक के सरिकुरंगसारंगसेलिय
तदोऊहूहूमेदियतओछिपतजात
छातीमे १७ यथावा वालसविर
हुजिनजान्योनजनमभरिवरिवरि
उठैज्योज्योवरसैवरफराति वीजन
डुलावततसबीजनसौ सीतहूमेसोति
केसरायनननतापनितरफराति दे
वकहैसासिनिहीअसुवासुषातमुष

का
५२

निकसेनवानरासीससकोसरफराति
लोटिलौटियरतिकेरोठघडुवाटीलैलै
सखेजलसफरीज्योंसेजयेफरफराति
१८ सर्वांगोपमा छीरकोसीलहरिछ
हरिगईछितिमाह जामिनिकोजोतिभा
मिनीकोमानुराठोहे ठौरठौरछूपजपु हा
रेसानोसोतिनुकोदेववनुयाकोमनुका
कोनमसेठोहे सुधाकोसरोवरसोऽम
वरउदितससिमुदितमरालुमानो यशिवि
कोयेठोहे वेलिकेविमलफूलफूलत।
समरलमनोगगमनते डोडुडरगानगानुव
ठोहे १८ मध्यस्वभावोपमा सबकि
सकोचगुरुसोचमध्यलोचनिरिसानीपि
यसोजुउननेकुहसिछुवोगात्तु देखवेसु
माईमुसुकयाईउठिगाताइहिसिसिकिसि
सिकिसिसिखाईरसइपायोमातु कोजा
नरीवीरविनुविरहीविरहविथ्याहाइहा

रुकरियाछिजाइनकछुसुहातु वडेवडे
नेननितेंप्रासनरिनरिदरिगोरेगोरे
मुषआजुओरोसोविलानोजातु २२
अथ्यसंकीर्णभावोपमा जवतेंकुंअर
कान्हरावरीकलानिधानकानयरीवा
केकेहूमुजसकहानीसी नवहीजेदे
वदेषौदेवतासीहसतिसीषीमतिसीरी
भतिसीलसतिरिसानीसी छोहीसी
छलीसीछिडिलीनीसीछकीसीछीन
जकीसीरुकीसीलागीथकीथहरा
नीसी वीधीसीवधीसीविषवडीसी
विमोहितसीवेठीवहवकतिविलोक
तिविकानीसी २३ संकीर्णोपमा
सोघनकेसंगदामिनिसीलसेघनके
संगदामिनीतोसी सोजुरहेथिरतास
तासोथिरतोहमतासमतानिरजोसी
तोसीतुहीकोईओरनहूसरीदेवजूहे

का०
५८

नमईकहोसीकंजवीमंजिमकुंदनकी
दुतितर्षनिईदुपि ऊ षनियासी। २४ इति
उपमेयोपमा अथितोपमा अनन्वयो
पमानिश्चितोपमा राधेरहे हरिकेहि
यमेमनोरा राधेकेहीमेरहे हरिप्यारोई
राधेसुराधेकिधौहरिसोहरिऊपरप्रेम
प्रकारयत्यारोई सार्डुरोअंगुकिधोपट
संगुकिसोउरोपीरोसोओजउज्यारोई
राधेकिधौहरिकीप्रीतिस्वरतिराधेकि
धौप्रीतिस्वरतिप्यारोई २५ इतिस्मृति
निश्चयभ्रमसंदेहोपमा सुंदरइंदु
कीसुंदरआननुआननहीउपमा
उपमावे दूषनदेषिपिऊषमयूषनै
तोसुषकीसुषमानहिपावे अंकुसो
मोहनिरंकुसनैनसुधाधरपैनसुधाध
रुठोधावे छिनदिवाकविकाहविना
वरीवावरीतोहिवरावरिगावे २६ ६।

तिनियमोपमानकोपमा ॥ अधिकोप
मा इंद्रज्योराजुकुवेरज्योसंयतिस्या
ईगदीयतिलाजघरेरी वालकवानदे
वेरीकयानदे ॥ अंजनसानदेक्योनद
रेरी गोकुलमैकुलुरकुलमैसोही
उजास्तोसेसुभाइभरेरी इंदुमे ॥ आ।
शिषिरुषमेज्योविधुदेवघातोसुखवात
करेरी इतितुल्ययोगोपमा ॥ आहेपोप
मामालोपमा ॥ असंनवोपमा कंज
सो ॥ आननवंजनसेद्गगयामनरंजन
मलैनवो ३ तामरसोनलिनोसरसो
॥ अलिहोहिनहीतवसोवियसो ३ ए
रनइंदुमनोजसरोवितत्तेविसरोउस
राउनदो ३ देवजू ॥ प्रायकिधो ॥ अपमा
नु ॥ अरे उपमानकरोकविको ३ २८
इति ॥ अपमानोपमा कोजुसरोजुकरे
सरितोजुमनोजुमनोजकी ॥ ओजज।

का०
५६

मासी। प्रीतमप्रीतहितनिकोसीतल
सोतिनिजोतिउदोतिदमासी। तकुलने
ममवाहज्योप्रेमकोहेमकी। वेलिज्योछ
मछिछमासी। देवतिहूपरऊपरअयर
तपरमावधिरूपरमासी। २९ रूपके
मंदिरयोसुखसेमनिदीपकसेङ्गादेप्र
उकूलेदर्पनमेमनमीनसलीलसुधा
सरनीलसरोजसेफूले देवजस्रसु
बीरसुफूलमेभीतरभौरमनोभ्रमभू
ले अंबुजपंकजकेदल अंकजपंक
जमेमनोपंकजफूले ३० इंदुकेफंद
फदेविविधंजन इंदुउवेमुरडारनिर
पर तेसुरडारफलेविविसीफलसी।
फलकंचनवेलितरूपर जोतुवआ
ननैननिभौरभुजानिडरोजनिऊ
रुनिहूपर देवकहोउपमाइनकीन
तौतोसीसुरासुरलोकनऊपर ३१

दोहा इहिविधि ऽ और ऽ अनेकविधवै
र ऽ आदिसबमाहि सकल ऽ अलंका
रनिविषै उपमा ऽ अंगलषाहि ३२
चीय अरुथसुषदानिकोसुषदमु
षचंदविबकंदवैर प्रीतिकैअमादुरी
उपमानमावौषेलुईरषावचतुरावो
निंदतसराहिइंदुकलनादयादुरी ह
रषनहासुउपहासुकेसुमतिनासु
संदेहनसुषुसाचेतरुकाविवादुरी
उपम ऽ आदर ऽ अनादरमानप्रमान
नविनतीअमादछिनाछोभरसवा
दुरी ३३ देवब्रजचंदजकोचंदस
म ऽ आनाविकरत ऽ अपमान ऽ अंगी
कारनउदातुरी उपमा ऽ असंभवसं
भव ऽ अनुमानुकरै ऽ अ॥ लुगुनसंग
त ऽ असंग ऽ अहंकारुरी नोतपजेथ

का०
९०

निर्विंगपसृधे हूलघोसमंगपराएकदेसअ
सकलसकलनिहारूरी। वाकपदलव
अंगअंगअौउपंगरासिवोलवलवोरप
रकैरौवालिहारूरी ३४ इतिसर्वोपमा
वेरआदिसवअथ्थेसेउपमाहै प्रत्येक
मुख्यगौनभेदनिविधै अंतरभेदअने
क ३५ इत्युपमाचक्रसं अथरूपका
दिनिरूपनं उपमा अरु उपमेयमेरू
पकभेदनजाहि सोसमस्तअसमस्त
कहिहै व्यस्तसमस्तोजाहि ३६ अवस
मस्तोरूपक मंदहासचंद्रिकाकोमंदि
रवदनचंदसुंदरमधुरवानिसुधास
रसातिहे इंदराकोएननैन इंदीवर
फूलिरहे विद्रुमअधरदंतमोतीनकी
पांतिहे अमोअद्भुतरूपभावतोको
देषोदेषजाकेविनुदेषेछिनछात्तीन
सिरातिहे रसिककन्हाइवलिरूप

नहीं॰ प्राइतु मैंहोसी प्यारी याईकेसैम्या
री राधी जानिहि ३० सुधाधर॰ आनन
वानि सुधा मुसुक्यानि सुधा वरसैरद
पांति मवाल सुपानि मनात तनु जा।
कहि देव लता तनु कोमल कांति नदी
त्रिवली कदली जुग जानु सरोजमैनै
नरहैं समानि जुपै विकुरैं छिनु रासी।
ति या छवि तिया सिय राइ कहौ किहि भांति
३७ ॰मय समस्त वस्त रूपक रतन।
प्रेम सुधा वसुधा वसु धा स्मरै वसुधा
धरैषी जीवनिया व्रज जीवनि की।
व्रजजीवन जीवन मूरि विसेषी रूपर
मावधि रूपरमा परमानंद कौ परमा
नंद पेषी नेह भरी नयनै सिय देव सु
देह धरै मासि मूरति देषी ३८ ॰ग्रास
पास रतन प्रकास के पगार ॠंमैं व नन
॰आगार डीठि गलीं ॰ मौ निवरते पारावा

र
रचार अपारदसोदिसि सडौ चंद्रवरस्
उडत रातु विधिवरतै सरदजुन्हाई ज
नु जाइधारसहससुधाइ सौनासिं
धुन अमुत्र गिरिवरतै उमडयौपरतु
जोतिमंडल अखंड सुधामंडलमही
मैविधुमंडलविवरतै २० प्रेमसु
धासागरविसदवसुधाविनोदव्रजज
नसाआमोदकुमुदमुदमकरंद सोहन
समाजव्रजराजहंसवनदेवमुषदेव
तविमुषहोत सुषदंद जमुनापुलि
नधरनीतलविमलसेजवीजनपव
नवनसीतलसुगंधमंद जोवनउ
जारीप्यारीराधारातिकातिककीपूर
न अमनरूपनयरवदनचंद २१
स्वाससुगंधसरोजसुषीद्रगमीरनि
पीनसुधाधरदली वीचफलीकुंच
कंचनसीफलसंगलिये ललितामन

दुमस्वी जंगम अंगनि रंगरंगी वृषभा
नकै मैनलसै सुरवल्ली ४२ इतिस
कलजातिरूपक अथदीपक अथु
कैसाके क्रियाजहां आदिमध्यिअंतः
अथवाजहअनिपदक्रियादीपककह
तसुसंत ४३ माला अरुएकावली
आवृत्ति अरुपरिवृत्ति कारनमाल।
समुच्चयोदीपकभेदसुवृत्ति ४४ प
ध्या संजोगिनुकी वहरै उरपीरवियो।
गिनुकेसु धरेउरधीर कलौनबुलाइ
करै मधुपानगलीनुमैसमधुपान।
कीमोर नचै मिलिवधनि अचैरसु
रवनगावतु आधि अधीर तिहुन
देषियेदोषमतौ अरेसीतलमंदसुगं।
धसमीर ४५ नाचतमोरनगावत
गावतकगावत दादुर आसुमरीसे को
किलकोकिलकारसुनैबिरहीवपुरे

काव्य
१८२

रविथघरघटीमे अंबरनीलघनीघ
नमालिनिनरमिवनीवनमालिनदीमे
साउरेयीरमिलेफलकैघनदामिनिमे
घनस्यामपटीमे ७६ अरुनउदोतस
करुनहूअरुननेननारुनीतरुनतनु।
रमतफिरतहै कुंजकुंजकेलिकेनवे
लीबालवेलिनुसे — इकपवनवनन्ह।
मतफिरतहै आवकुलवकुलससी
डिघीडियाडरनिमल्लिकानिमीडिघने
घमनफिरतहै द्रुमनद्रुमदलहूमतम
धूपदेवसुमनसुमनमुपवसनफि
रतहै ७७ सारसनीसारसनेसार
सनीसारहंससारसनुसारगुनिसार
गुनयतहै पंचसरकेसरसदासरके
सरप्रकासकासनिर्मलप्रकाकास
चुनियतहै मालतीमिलियमिलेजु
मलेजमले देवदेवधूनिकेप्रवाहघ

नियतहै विसदविसंकद्वै विसंकुरुचर
नकुरुचनिके सुरवसुरवहसुनियत
है ४८ इतिदीपक ॥ अथ ॥ आवृति
वलि ॥ आवतपदयाटरषसोकहियेआ
वृति पद ॥ अर्थनिकोलौटिवोसोके।
हियेयरिवृति ४९ मोहनीसहैकनि
वौरिवाटवैटककरोटिकूटिकोटिको
टिकैंसकीतवनिके इर्षेनुदेषनसुव
॥ अपुनहूरहेइंदुकंदर्पवधकेरूपदर्प
तिवनिके रवदुतिकंदुकेहसतहेन।
सीफलसुधीफलउरोजहमोहितहित
वनिके प्रानकेपयोजनिविरोजनम
नोजसरसरहसरोजनैनचारुवितव
निके ५० परिवृति इन्योमकासुउ
दौडकसारकै ॥ आसहृयासवसाटअम

का० उस दगाविंतजसोउविचारसुले
६६ गान्नीदकुदावलजाउस हैउज्ञदेव।
वसंतसदाइज्ञहेउतहेहियकंपमस।
उस लैसिसिवैनिसिदैदिनथीघम
प्राविनिराघिगराविनुयाउस ५१
मय भाहेय कहुतकरतकछुवस्त
कोवरजनहे भाहेय जहांमगटकु
लवलविपुलप्रेमरूपमचलेय ५२
हेवदुवीचदवेरसलालवलामलव
लोजन्निवालि आहृठनि नाहनहे
यहन्याइनहोइनिहोरकेनेहतेनी।
कीयेरूठनि चाहतमासुखसंसुक्कि
यो प्रठिलाजडहोंकिनिडठमजठनि
प्रोठनिल्पायेउठाइकेअंजनुभ्रा।
घितुठानिजिठानीकोजठनि देग।

संयोगसहैा गीवियोगनबुद्धिविचार।
विष्यानसत्तावै लोचनमेरेलुकंज
नलीकदैलालचलोचलिवोचित्तम
वै याजमजाईजुन्हाईकिजागत।
जैमिनिजोगजुयेजसुभावै मीचु
लियेसगवीचहीवीचतेगोहिनभ्रो
हैफिरेमोहिनयावै ४६ आछुम
नैमुघरीउघरीसुनकाजनिमित्तसु
चित्तचलाकिनि वाहजनाहकच्चाप
रदेसकोनाहकनाहिकहोअवल्ला
किनि देवसंजोगउठीसगुनेकहि
कामिनिदामिनिसोनसलाकिनि
हमिरहीवनमालिनिन्हमियघमिर
हीवनमालवत्राकिनि ४७ लाल
चलेधनदेहूनोलीजियेतेसमुझीस

का० मुग्धत्ततैसी नाहसौ जानकहौ सुध
९६ जीकेकहीतुमहीसुकहौ अवरौसी।
आजु अनेकवसोकहियै इत आउन
हो इधरीसुनजैसी ह्यनिकरै असुवा
निकैरड्गदेषियेदेवदसा।किनिकैसी।
४६ आपु अनंग लिये अवलादल
फूलकेवाननिसौजगुजीते योकहि
देवजुवयोकहियैविधिचाहविचित्र
करैसुजुचीते गोकुलगावकोगोप
कुमारुसुकोकहैकोककलानि अ
धीते कामविपायपरासिंहकीप्याय
रतापरशकियेजापरवीते ४७ इति
अर्थांतराहेय अथ अर्थांतरन्या।
स कहो अर्थेहटकरनको और अ
र्थअस्ताव कीयेवाही धनिलिये अ

पंतरसुवत्ताव ५० सेवत्तदेवप्रदे
यसवत्तपुजाकोत्तिहूपुरदीयनदीये
नोलवध्रनिकेनेननिकेवरचैनम
हाविहिमेनमहीये कनालकोनस
लज्जविनौनिगरजनतिसोनहिकोन
केजीये बेसेहीवानधेसकिरिसान।
सुन्यानविसासीत्तिनेविसलीये ५९
देवसुन्योसवनाटकचेटकचाटडचा
टनमेंचुप्रतंतको पेत्तरुनीवियके
द्रगकोरत्तेप्रोरुनहीवित्तचोरुवमं
कको घघटप्रोटकीप्राधिकवो
टकोसलमहारेकोमलुकलंकको
वीछीछुक्कीनछीछीविघावहनो
विसुकिसवसीकरवंकको ६० ५
त्तिनिदर्शनाप्यंतर वरनिवसत्तविधि

का० समकै हेरक विशेषवितिरेक अतिवि
९५ सेषविभावनाविनुफलवीजविवेक
है२ बिनुकारनकारजफलैसो बिना
वनाहोइ कपनहूकारजुनजहिविसे
षोक्तिकहिसोई ६४ व्यतिरेकयथा
फूलीफलीकोमलविमलपरिमलमि
लीदेवतरुसाखासुखमाखाजोसुहति
यो अंगनितरंगनितरंगनिरथंगकु
चविमलविहंगगति गंगजलजाति
यो त्रिभुवनसाररूपभरयत्रमनरय
ग्रजरूपपदकमलनिकमलाधिरा
तियो राकारजनीसमुखीप्यारीराधि
कासीहोतीकातिककीराति जो उजारी
दिनरातियो ६३ विभावनायथा
न वासवासनिवासवसातउसाससुधा

सनिहीरहनेसे लागतसंगहुयेमेनत
रंगसुगंधनिछ्नकछ्कहनेसे दे
वसभागसुहागकीसंपत्तिभागवडे।
सुखकेलहनेसे रंगभरेतेरेअंगवह्
विलसैविनुभोगहनेगहनेसे ५ वि
सेषोक्तियथा नषसिषवुंवतिनतु
ह्यीफलदेषियत्तसोफलजुगलसो।
नामध्यछविछीनीसी तंत्रीनविसा
लकंठमालमैमुकुनमालकोमलमृ
नालअंगअंगनिरगीनसी देवद
रसतदरसतसुरागमईसुनिसुख।
ग्राममुषमर रछ्नहीनसी यार
लपुरानीवी।निवोलतिनवीनवानी।
प्यारीपरवीनपियउरपरवीनसी ६५
इतिव्यतिरेकविभावना विशेषोक्ति

अ॰ ९६

॰अथ समासोक्ति समासोक्ति कछु
वस्तु लखि कहियेजासम॰ और यथा
योक्ति चाहि कछु॰ और कहै कछु॰ और ९६
समासोक्ति यथा देवसुधारससाग
रि॰मापुउजागरि॰आगरूपर है है:
छीनताटीकाटहीनतरंग चितै वित्तव
कव हूअसहै है छीनताटीकटिहीनत
रंग चितै वित्त चकचहूं डसहै है ९७ प
र्यायोक्ति यथा नैनन रीतनि ह्यांविवे
कौनित॰ आदरसौं तिनकै तन ईहै मी
तहिरसिमिलियास्तजैनाहिसंयतिहौ।
ति अमीसनईहै सोधि सुधारिके।
हिमहिमानहू चंद्रकलानुउपसीमन
ईहै होरहुजोईस्वयाचटिकेपरिवार
जनीपिपहूजनईहै ९८ श्लेषयथा

सोरही॰ अतुलतुलाकोटिकनिनद
सोषै चलतवधाईसीसुकुतकह्न
पकी। बीनकरीसोह्नोनदेषी॰ अव
लाजलषीजायरवचीनसषीगाहि
गुनगाथकी लीनेस्वामीधसपन।
जीतैत्रिभुवनजनलूटीसुवरनग
सिरूपसमरथकी हैवरवारनगति
रहैनविपत्तिपतिवनी॰ अतिचारसोभै
गवसरमनमथकी ७० चक्रोक्ति
गाहुकरोसोकरोवहियेनाहिनाहुक
रोसोकरोचहियेई तोहितसोचित
चैननहीइत्ततौहितसोचितचैनाहि
येई वासर॰ औरत्तियाकहियेकिहि
वासर॰ औरत्तियाकहियेई ७१ जग
सीउत्त॰ अधिकविधिवानै॰ अतिसैउ

का
१२

कि अमेताकछु औरकौतकैभो।
रेयुक्ति ७२ आंतसयोक्ति स्यर
कमलयुगऊपरकनकथंभद्वय।
कोसीगतिमध्यसक्षमनमिंदीव
र तापरश्मन्यरूपकूपकोतरंग
तहांसीफलयुगलमालमिलित।
मिलिंदीवर देवतत्वस्त्रीविविउ
लतीसयछवप्रकासयुंजतामे
जगमगीजोतिविंदीवर इंदिराके
मंदिरमे उदितभ्रमंदइंदुआननउ
दितइंदुमंदरमेइंदीवर ७३ उमेहा
कोमलताईललताईसोलोनीतेफूल
निफूलनिहीकोसुहाई कोकिल
कीकलबोलनिनाहिविलोकनि
वालताीनुवताई वालिमराल

निरखी खी यह नवतनेपियहंमध्यकी
मधुराई जानतिहौ वृजमधुपरमा
हसवेसपिहरूपकी संपतियाई ७६
ताके निविवत भांतिवहुके वहुतकवि
सेय लयो किवहुतनि भांतिवहुता
हिकहौउल्लेख ७८ उल्लेखयथा
तसुनगौरिगिरागहवेगुनराजसिरी
सुरधारनरेंन साधनिसुधसुधानि
धिसोधी प्रसाधनिआपिनछारध
हेत आनंदकेतिसहेलीनुकौको
हैसोतिनुकौविषवेलिवरेंत औसु
षदेनत्रिनेननिकौ सुषपरकपर
कपूरमरेंत ७६ हेतुसहेतुसमेस
हजभावसहोतिजानि सफलमहे
तमवेषालेसघुलताछिपिजानि ७०

का
१९९

हेतुयप्यो फूलीवेलिवालिकासीक
हलीमनालिकासीतेरीभुजजानु
मध्यहैनाहींक्रमससमेत एन्योइंदुसु
दरुवदनदुतिकोसदनदारुवीजरदन
अधरविंवकेनकेत मानिनितिहारे
सगरंगभरे अंगमदुताकेति नसंगाहि
योकठिनसुकोनहेत देवकरपल्ल
ववरनकोलहासीजोन्हमयधरवच
नकुवसीफलकहेहीदेत ७८ स।
श्लोक देवषुलेकुमुदाकरदेषिगए।
षुलिसोचनलोचनआगे आसु
निधारलेजोन्हछुरीसंगसोतिनके
सुखमेदुषदागै आमानिनवेलिले
वेलकयीमृदुमंद अमंदसमीरनला
गे इंदुउदोठदयोडरधामुसुकाम।

जग्योसंगजामिनिजागे सहोक्ति

माला अंगनिसंगलैलजनिमी

जनमेसब अंगलैकोमलताई:

कोमलतामिलिदेवमिलीमदुवी

उनिडोलनिसुधसुधाई येसब।

औरकेपैयहवीचतेटरीविनौनि।

औविनदिहाई कालिहीनीठिक

ठोरडेठेकुचईठनिसोहनिकैनिठु

राई ८० स्त्रम देषतिदेवसषी

निकेमाफहूंसुंदरिसाफसमैनितकै

के आरसीकीसुदरीकरमैलषि।

लाजनिसौभरमैचितकैके छ्वा

रकुचैसकुचैजियमेहसिहापुधौरै

हियमेहितकैकै प्रीतमकेमुखकी

सुधीकेप्रतिविंवताकैप्रतिविंवतकै

का० प्रतिबिंवतकैके ६१ ॥ लैस ॥ आव
६६ तु अंगनिमैडसग्योसुजड ग्योवि
षमजत्त रदुत्तोतुजोको ॥ आसुनि
भीजियसीजिह्यिोछविछोननिधी
जिभयोमुबुफोको काईहलेनन्व
लैसगयाइउठे अती भयेमतयेत।
त्तुतीको कंपतहैकरज्यो भयसीत
सुसीत ॥ प्रमानभयोसवहीको ६२
दोहा ॥ क्रमतेक्रमप्रियप्रेय ॥ प्रतिर
सवतरसनिउदात ॥ अतिसंपति
महडरजस ॥ अहंकार ॥ अधिकात
६३ ॥ क्रमयथा ॥ चंद्रमुषितेरच।
बविजैचकिचेतिचषिचितचोरि
चलेरचिसोचनिडुलतहे सुंद
रसुमंदसविनोददेकसामोदसरो

वसंचरततहांसीलाजविलुलततहे
हरिनवकोरमीननचंचरीकमैनवा
नषंजनकुमुदकंजपुंजनतुलत
हे चोकतचकतडवकत औछ
कतवलेजातकलोलतसंकल
तमुकुलततहे ॥ प्रेय प्यारोहूंतिहा
रोहोंकिहास्योहैतिहारेहाव्यगुननि
तिहारेहैं रूपरूतुफिरतुहे देवसुनी
देषिजिनकेजियजियततुमतिहे
तुमहूतेनिजुरूतुफिरतुहे देषो
नसुहातसविपनिदनभावियनि
वेरीमनहूकोवेरीरूतुफिरतुहै
सुनियोसंदेसजीविनेसहूयजीव
संवदेसहीसोभाहोजामजरुतु

का० फिरतुहै ६५ रसवत भागासुहा।
१० गभरी॰अनुरागिनि॰आनद॰आपुन
॰आयभमानी। संगासलोकवसीव
न॰शोकहसीरसरूपनवासोगमा
नी। ॰अद्भुतवीरभयानकरूपहैन्र
पमताधिनिरोवरमानी। सनमलो
कनिसतुदिखाईविस्तेहूवालयताल
समानी ६६ उरात वासोवातीव
डीवडीवोलतयावनमेवनवासीनु
माने देखनहीव्रजमानववाव्रज
मंडलकेसघयाअनुमाने धारनि
धारनिलोगवडेवडेभ्वारजिकौन।
गनैवरसाने संपतिगायहिकोय
हिदेवतहाकहोगायहिकोयहिचा

नै ९७ कुंडलिया नातोकहांतु
मसौंतुमकोहांजुदेवछुवोकछु मंगु
नवाको क्योंछुवेअंतुपैदेषतहैजर
जगाउतत्योनामैरूपरवाको कौनै
कह्यौहोविजाइहैवाधनयोगिरिजा
तोनडोरूडवाको लाटपटैलडवा।
वरीवामेंहोदंडुगनेगीननंदववा।
को ९८ निजहितअपुछियाई।
कैकहैअयनुतिआन करोवा।
हियेकारजमैसमाधिविधिसंधान
९९ अयनुति रैनिसोइदिनुइंदु
दिनेसजुन्हईसुधासुधनोविषघा
इ फूलनिसेजसुगंधदुकूलनिस
लउठैजनुज्वालज्योंताई वाहिभी
तरभैहहरेडनहोपरैदेवसुषछैन

का
१२

आई हौ हौ भुलानी किम लेसवेक है यौवमसी सरदाग मुसाई २० म पनुत्तीभेद मघन मबन घ्यासन नीद निवासनवास डुवास स्कक स्वेदसम हसनी पुलकावलि बो लुप्यवचोद्गानीरकयेकरू अंग। निसंगास्कंगवसे डरपेलो हियेक विवेकीमनोघरू छुटेनदेवाकि नौ नदिनौनि सिरीनवनेहुनरी विवजा रू २१ समाधि चलेव्रजचंद्रचं द्रावली केसदनचंद्रवदनीवनद बिवेकी हूलफूलया वीचिहिय वानकस चानगाकी सीलगलगी कगचहूदेवजोगअनुकूलयेरे

लौटतनगातनसम्हारतहूक्योवारे
सुघरसयानपन्यो भामिनिकीनल
पै लपटीनलौटनीलपटीहूंस।
लौटलटीलाजलटपटीलटपटीनु
जारलपर ९२ दोहा भिन्नवाक्य
विवि अर्थ्थुमिलिकैहैनिदरसनआ
नि उदाहरननिजवाक्यकोदृष्टान्त
सोजानि ९३ निदरसना ग्वारनि
तेभएजादवधारकहाभयोनंदजसो
मतिजाए राजसमाजकेसाजसबै
अवेस लिगे ब्रजगोकुलगाए देव
जुरबोसुखहाहरिकोमनुकाकोअब
लैधरयोधनुपारा कान्हैकोअ्यारे।
मिल्योकुलगोतुकहानहिहोतु। भ
लेदिनअ्यारा ९४ दृष्टांत साहम

क्र॰ एपकरेकरचोरुकेचाटतमोहउठाव
७२ तछ्यरु दामरिकामरिनलिगाइम
वचाएहैामोहिकपरमोकय्यरु का
न्हनाएकवोकुमवालसयालिलिये
दानकोठानतयय्यरु तासोवड्डाइ।
करोकोईजानेनकालिकेजोगीक
लीदेषोवय्यरु २५ दोहा नीदस
गहेसराहेनोदेषिवसमाज संसै
मेनिश्चयनहीतकैमर्थसमाज
२६ निदानसाति नाधिइयाधि
निवाधिहितगनसोतिनुकोनिनदु।
षुदियोते देककहाकहेसवेसुचोरि
केदीनोसुयसवहीकोहियोते कोयु
गनछिजउगोलपट्टमेहछिजराज
मलीनकियोते मोरिवदाहीनिहारि

वंशहीसुगोकुलमांझमेलोकुलियोतै
२० सकोतिनिंदा सांझहीस्यामको
लैनगईसुवसीवनमैसवजामिनि
जाइके सीरीवयारिकिदेमधराउ
रहेउरझावरमारमझाइकै तेरीसीर
कोकरिहैकरत्तनिहूतीकरिवेसकरी
मैवनाइकै भोरही भाईमटूरातमो
दुषदायनिकाजइतोदुषुपाइकै २८
संसय नारकिधौविधवारकिधौंघ
तथास्यौघावकैहेयरिरंभो कामकी
कामिनिकेसध्कजामिनिदामिनि।
दीयसिषाकिसदंभो देषीनजातिवि
सेषीवधूकिधौहै भवरेषास्मारुचि।
रंभो सांझसमीकिमभातहीभानुषि।
धोन्नवभानकेभोन भवंभो २९

का
१३

जहां विरोधी पदारथ विरोध हियैना
है अविरोधसोल विरोधसोलगै।
विरोधाभास १८० विरोधयथा
अायो वसंत लग्यो वरसावन नैन
नितै सरिता डुमहैरी कोलगिझी।
उछुपावैछुपासै छुपाकरकोछुवि
छाईरही चंदनसौं छिरकैछुति
अाअति डैडरको तुसहैरी सीत
लमंद सुगंधसमीरवहैदिनद्गुनो
देहदहैरी १ विरोधाभास कातिं
ककी राति पर्यो ईदुको प्रकासहूनो
अासयासयाउस अमावस घगोर
है ग्रीषमकी उषमा पर्यमानि
केनिसुषदेषेसनमुषनिसिसिसि
रलगोरहै वरसैजुन्हाई सुधावसु

धासहसधारकौमुदिनिसवैज्यौं
ज्यौंजामिनिजगीरहै यैउपन्तउ
ज्जलविराजैराजहंसीदेवस्यामरंग
रंगीजगमगीउमगीरहै १०२ दोहा
स्कतिनिंदाहितुल्यसवैतुल्ययोग
स्कथेर कहि-अप्रस्तुतिस्कतिअ
कांउस्कति-मैार ३ तुल्ययोग तै
सिवस्यामतमालसैजमुनाजल
कूलनिसाफसुहावरै कुंजनिगुंज
तभोरयनेतमपुंजभामिलिकैइक
ठावरै ध्यासहुयास-अकामुछयोछि
तितेजप्रकासनएनकिसवरै देव
गुयावतनवसेउतहूसघिराकहीठार
मिलैसकसावरै ३ अप्रस्कतिस्क
ति कर्मविपाककहाकहियेवकका

का०
१४

कवराककथाकहिआवै सारस
हंसकपोतकुरंगसुसंगतदेवसव।
सुषपावै नीमहथावकईपकई
वपुरीवकईकछुभोजनपावै रोनि
जुदीरटहृतटहूरहेघोससुघ्योसग
ज्योससुनावै ५ जहांअर्थसंभव
नहिताहिअसंभवभाषि कारनवा
रजअौरईअर्थअसंगतिसाषि
है यसंभव यावजमरूपरारूपन
एतौअनपसुरूपविराजतिजेसी
कामनेसिद्धसुरासुरछिनराकिन
रनागनिकैकहिकैसी देवकहौ
कहादेषतहौवनेदेवीस्मारस्मनी
यनतैसी नापरतवहकावतिमो
हिअहेचुपुहोहिअहोयिनिरोसी

७ असंगति यानिमैंदुषकौदु
पिदूषितुनैंसुषकीसुषवानैसषी।
की सौतिनकेलविलोचनलाल
भएरविकैंहृचिरांगनषीकी हूवि
सुषैसुषमैलीमेंहेवषकौनलिषी
लषिलीकसषीकी देवछिदीछति
यानिछिदीउचकीकुचकोरचको
रचषीकी ८ जोम्पलषिकरत
निकौयस्किरकैहैवयानि ननुरु
लगिगुनश्रोरकेयरेश्रोरसोजा
नि २ परिकर देवमनावतहीम।
धजामिनिचारिबैजामगएजगि
बीकै रारूनहीसुरहीहुमतौश्रंग
श्रंगनिमैं मगिनीश्रंगिनीकै:

का
७५

लउनकेडरमेडसेतविलालरहेल
गिकोलगिनीके हुलवभानसुता
सगपेलगिस्यातुसुताजमकीभ
गनीके १० तनुण नीचेकोनि
हारतनगीचेतनप्रधरदुवीचेपत्रो
स्यामारुनप्रभाप्रटकनको नी
लमनिभागहैपदमरागहैकेपुष्प
रागहैरहतुवीध्योछुनिकटकनको
देवविहसंनदुतिदंतनिच्छुकुतजो
तिनिर्मलमुकुतहीरागगटकन
को परकिकियिरकियितपाने
परताने तोरिवानेवदलतुनटमोती
लटकनको ११ इतिमुखालंकार
प्रपनडेदगोणनिका दोहा
लहैनयरगुनहलहेकहोप्रतमुन

माहि परगुन निजगुन वटावै अनु
गुन कहै सराहि १२ दोषहू को गुनु
देषिकै चाहत अनुज्ञा सोइ जहां आ
ना गुन सो प्रगट अवज्ञा होई १३
अथ तद्गुण अतद्गुण अनुज्ञा अवज्ञा
यथा वेनी लसत सित मिरारी तऊ जउ
दी यति सोहै सत्रीप ससी की वेस
रि को मुकता आनि ही फल कै छल।
कै छवि मंद हसी की नौ कुवसंय।
ति कंपनि छाती मली विपतो नय्य।
नाकवसी की हारगुनी को विहार
कौ होत न कोर कठोर कसी ऊकसी
की १४ दोहा गुनवत्त संग गुनी तु
के निगुनी गुन निप्रवीन मत्यनीक
उलटो गुन है निगुन को रेगुन हीन

का॰ ७६

२५ गुनदोषनिकेउल्लटेगुनहिनि
गुनकदोषगुनलेषसुकबानि ॥ आ
ग॰ आगेसासेवसीलितरैनजानि
२६ गुनवदभतनीकलेषसारमि
लितयथा चंदनकेसंगजाइमि।
ल्यो॰ अंग॰ अंबरनाकिल्लियोमुषइंदु
सो निर्मलतागुनमोती।विधाइछिप्यो
कुटिलालककालपनिंदुसो ग।
निते आठनित्योमुसुक्यनिभाक।
रीमोहतुदेवसुनिंदुसो चंद्रिकासं
दिरचंद्रमुषोमिलिसारदासिंधुमे
पारदविंदुसो २७ कारनगुंफि।
तकाजकोयोकिसुकारनमाल
एकावलिपद॰ अर्थगहेचलनतिचा

१८ मुद्रासंज्ञासूचना सूच्य प्रर्थ
क्विार मालदीपकदीपकैराकाव
लीप्रकार १९ कारनमालाका
वलीमुद्रामालादीपकयथा जीव
सोजीवनुजीवनसोधनुसोधनुजी
वनवायुनिवोधो याचित्तकोगति
ईठकीडीठिलो ईठकीडीठिमनी
ठलोसोधो वामनमोहनकीवह
मोहनीसोहनीसुंदररूपविरोधो
पाजियमेपियसुरतिहैपियसुरति
हेवसुमुरतिकोधो २० वहुतएक
हीवारपरतुहैसमुच्चयजानि के
वहुवातेएकमेएकहीवारवषानि
२१ संभावनविधितकहैलालनवडो
लघुदृढ कहुंमहर्षेणप्रयोजनग

होक्तिकहुरस्ट २२ समुच्चयसंभाव
नग्रहर्षगागस्ठोक्तियथ्या दावदरेरत
रेरम्भरेरसौघेरतम्भावतीघोरघटा।
६ चातकमोरनिसोरानिसोचहुम्रो
रनिवीजुछटाछहराई एसमेदेव।
वयेहिनुकोविधुमागैकहूविषला।
मिलिजाइम्भाजुतोराजविराजियेरे
निरहांकाइकाहूकोरछकुनाई २३
दोहा म्याजोक्तिछलसोकहैविवृतो
क्तिसउघारि जुक्तिजुक्तिकेरीति
मेसुभावोक्तिसुविचारि २३ म्याजो
तिविवृतोक्तियुक्तिचभावोक्तियथ्या
राक.निवेलिवेकीछलघातनिवातनि
वातनिगातछिपोहै म्भौरनिहूतजि
गर्वकरैदिघोसर्वसुबोलिकैघो।लीहि

योहै आैयाव्रजम्रयरस्पकोजुक्ति
जुदीकरितैजगुजीत्तिलियोहै देववि
मंगीसुतैसुघदाइनिसरघेसुभाईनिस
धोकियोहै २५ दोहा विकल्पविवि
रियुतुल्यवलसंकीर्णवहुलच्छ मग
भवभाविककहो आशिषसुनहुस
मह २६ विकल्पसंकीर्णभाविक
आसिखयथा वेईवसोकिवसेहम
हीईतनीकहैतोजियलागे वेनालि
नीअलिहैचलिमोगियेदेवमिलिक
हुचंदकुमोदनि याव्रजरानीभईअ
वराधिकाजानीसबैअवकंसुजियो
जिनि घातडहा मतिनीकरहोय।
तिनीकेरहीयलिनीकोरहोकिनि २८
दोहा सुमिरनसमृतिसुभ्रांतिभ्रम

का०
७८

विनुनिश्चयसंदेह निश्चयविनुसं
देहयेजानिनामसमलेह २९ स
त्तिन्यंतिसंदेहनिश्चयपयथ्या काति
कपस्योकीरातिससीरिसिपरवअंब
रसैयहिवाप्यो विनुचम्योअमइदुमु
निंदुफनिदुउसोचमहीसोभुताप्यो
देवकछृविसवासुनहीकोईधुंजम।
कासुअकासकोतान्यो रूपसुधा।
अविधानिअचैनिहचैमुधुराधिका
कोजियजान्यो ३० दोहा समविष
साधिकअल्पअन्योन्यविवसमान
विरोधउन्मीलितिनापिहितअन्योयत्ति
प्रमान ३१ समाविषमअल्पअधि
कयथा मांगसिदुरारीतमनरूनअ
रुनजोतिवेदीरविदन्योछविकुंजउप

रतु है सघन जघन कुच सकुच दुवी।
चद्ध्योऽउ चकिऽउ चकितं कुलच कोप
रतु है जोवन वनक वनैतन मेतन
कदेव म्रयन कनक मनि ग्राभाउ भर
तु है वेसरि को ती सुधा विंदु सो चुव
तमुसु इंदु सोऽउ वतु व रवि विदिउ छरतु
है ३२ सम सम विषम सुविषम
धि अधिक अल्प आधार अल्प अ
धिक आधेय क्रम अधिक अल्प स
विचार ३३ अन्योन्य जो परसपर
अद्भुत विज समान सामान्य सा
विसेष सोऽउन्मीलित वहुमान ३४
विहित छियो अवर्याय तो अधिक निंद
गुनगर्व विधि निषेध अन्योक्ति प्रति।
उक्ति अन्योक्ति सर्व ३५ अन्योन्य

काο ७९

विसामान्यविसेष उन्मीलितपिहि
तम्रथ्योपत्तियथा जोबजसौंबकु
जासौंलसैंतिहुकालवडीब्रजवाल
लहावे देवदकूलनिमैसिलिराक
अनेकसरूपदिषावै येलमैयेल।
तियेलनरानरानाहीमेनाहसोनेह
जनावै राधिकासीस्पनीयस्माष
तिकोनलगैरतिकोनकहावे ७६
विधिनिषेध अनुक्ति प्रत्युक्ति अन्यो
क्तियथा लोकचलोजुलोकहे
लोक अलोकलैलोक अलोकक
हैहो कारतोसतिमहिकोछवि
छाहयरेकहुकारीहुँजैहो जानदे
गोरसुदानकहाकोनिरानतिये
विनुजाननदेहो माधरीकोच

लिकैकलिकैकलिकैमलिकैअलि
कमुचलहो ३५ मुख्यनिहीकीछ
हलैचचलत्तगोननहृदे देसकाल।
मिलिवस्तकगुनमिश्रविचारअषेद
३६ येअर्थालंकारसवप्रोअमने।
कमकार उदाहरेनिजवुधिसमलह
नलखविचारि ३७ इतिकाव्यरसा।
यनेदेवदत्तकविविरचितेअर्थालंका
रनिरूपनेनवमःप्रकासः ९ अथ
छंदोवर्णनंदोहा पिंगलभाषितछंद
सवदसगुनगुहअवेह लघुगुरुही
तैयाईयत्तकाव्यवचनसंदेह छंदो
भेद एकमात्राव्रत्तअरुवर्णवृत्तहे
एक एनियतदससहंएजिनसोपिंग
लछंदअनेक २ अथ्यछंदमलदे

का० स गणविचार मायादेवीमात्राताय
८० रुग्रस्तारुग्राणु लघुगुरुउभयसंयोग
तैदेवकैरेतिहिजाणु ३ अथलघु।
गुरुस्वरुप एकमात्रानघुलेषियेस
रललीकविनअंक गुरुदीर्घहैमा
त्रालिषियेलेषाअंक २ लघुगुरु
हीकेआठगणअरलघुगुरुहिसमे
त अक्षरसवसरूपकीयेदसदेह
सवेत ४ अडुउच्चरक आगेजुड
एग ओ औहोर अंअः अरुसंयो
गकोआदिअंतपरकोई ६ इतिल
घुगुरुविचार अथआठगण म।
नभयजरसत आठगणसकल आ
दिमाधिअंत दैवेकमगुरुलघुति
वातिनजुगतसदीसंत ७ अथम

ठगणदेवताफल ॥ समिनाकससि।
सलिलरविपावकयवनप्रकास
सियसुषजसरसरोगसत्तिकरतप
पानंनिरास ० कवित्त जानौमीत्त
मनदासभयदोउडदासजोतोरिपुस
राहौतसंगीकरिजुगलहै मीतमीत
सिद्धिमीतदाससरसरिद्धिमीतउदास
प्रसिद्धिमीतवैरीकरैकलहै दासमी
तसुभदासदासमहासुषदासउदास
प्रसुषदासवैरीयेविकलहै हैउदा
समीतदासछेमद्वैउदाससुन्नउदा।
सप्रसीतमीतदासादिकुफलहै ९
इतिद्विगणविचार ॥ कोमसारत
घु० गुरु ऽमऽऽऽन।।।भ।।यऽऽजऽ।
रऽ।ऽस।।ऽतऽऽ।०० इनकेदेवफल।

का०
८१

प्रस्तार मभमित्रदेवता संपत्तिफल नगाकदेवतासुखफल भवंद्रदेवतानिर्मलजसफल यजलदेवतावृद्धिफल जसूर्यदेवतारोगफल रअग्निदेवताम्रत्युफल सवायुदेवतादूरगमनफल तआकासदेवतानिरासफल द्विगणविचार मनमित्रभयदासजरउदासासत्रवैरीमित्रमित्रसिद्धिमित्रउदासस्रसमित्रउदासअसिद्धिमित्रवैरीकलह दासमित्रसुभदासदाससुषदासउदासअसुषदासवैरीअसुभ उदासमित्रउदासदासहीनउदासउदाससम्यउदासवैरीवैरीमित्रादिअसुभ इतिएकगणद्विगण प्रस्तारअथद

छंदवर्णमात्रादिगणयघंदंडकत्रि।
विधिवर्णवृत्तकेभेदकाव्यकथापुरा
नआग.सिद्धांतसववेद १० ११अनु।
भासवसवात्तजोकहियेकामसंदने
विनाचरणकोकाव्यसोगयइघरस
गर्भ ११ गद्ययथा महाराजराजा
धिराजब्रजजनसमाजविराजमान
चतुर्दशभुवनविराजवेदविधिवि।
धासामयोसम्राजश्रीलसदेवदेवा
धिदेवदेववकीनंदनजदुवंशयशोदा
नंदहृदयानंदकंसादिनिकंदनवंसा
वतंसकृष्णंसावत्तारसिरोमणिविश्वप
त्रयानिविषगरिष्टपदत्रिविक्रमण।
जगत्कारणजमणनिवारण मायाम
यविश्वमणासुरारिषिसखासंगामन।

का
६२

राधिकारमणसेवकवरदायकगोपी
गोपकुलसुखदायकगोपालबालमं
डलीनायक अघघायकगोवर्द्धनध
रणमहेंद्रमोहापहरणदीनजनसं
जनसरणब्रह्मविस्मयविस्तरण
परब्रह्मजगजन्ममरणदुखसंहर।
ण अधमोद्धरणविश्वंभरणविमल
जसः कलिमलविनासनगरुडास
नकमलनयनचरणकमलजलधि
लोकोपावनश्रीवृंदावनविहरणराज
यजय १२ इतिगद्यवृत्ति गद्यभेद
वृत्तगंधि अथ चूर्णकउत्कलिकाये।
तीनि गंधजातिसंख्याविनाणानक
ह्यानतिरीनि १३ इतिगद्य अथ
पद्य छंदवरणगणएकतेग्यारह

गनपर्यंत यघवर्णछन्दसलोदंड
कन्योरग्रनंत १४ एकादिगणवर
णयघ नारीसः सैगंत्ताकन्याविद्य
मालादोडागन्या श्रीराधाश्रीकृस्न
स्वामीश्रीविश्वामीश्रंतर्यामी १५
नारी ऽऽऽ कन्याऽऽऽऽ विद्युन्माला ऽ
ऽऽऽऽऽऽ ऽऽऽ० नमतिसुलसहित १
तिदुगुनकहितसुभमतिजसुमति व।
सुमतिवसुमत्ति १६ मति०।।।० सु
मत्ति।।।।० रत्ति।।। ।।।।०।। भारत्तिसो
भागवत्ती छगनिसोयंतिसखी १७
भारति ऽ।। सोभा ऽ।।ऽ० सती ऽ।।ऽऽ।
ऽ० यहीएकमायादुयासोमराजीमु
जंगमयात्ताहीचारिसाजी यहीएक
मायादुयासोदुयासोमराजी भुजंगा

का० रिणामीहृदमेंविराजी १८ मायाऽऽसो
१९ मराजी ।ऽऽ।ऽऽ० भुजंगप्रयात।ऽऽ।
ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ० जगकविनोदसुदोईप्रमोदवि
नोदविनोदप्रमोदकमोदवयानिकमो
दप्रमोदविलास विनोदकमोदप्रमो
दविलास १९ विनोदऽऽ।० प्रमोदऽ।
ऽ।।ऽ।कमोद।०।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ। विलास
ऽऽ।। ऽ।।ऽ।। ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।० सुमुखीसु
मुखीहुनीतिलकासुमुखीतिलकामि
लितोटकहै मनमोहनकोमनुमो
हनिहैसुमुखीतिलकामिलितोटक
है २० सुमुखी तिलका ऽऽ।।ऽतो
टक।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ० रोच्यादोमनोरो
चनाछंदुसो रोचनारोचनासग्वि
नीछंदुसोतस्याी रोचनास्यग्विनीरा

की
धिकादेवतादेकआनंदसाधिका २१
मगो ऽ।ऽ रोचना ऽ।ऽऽ।ऽ० स्रग्वि।
नी ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ०॥ दोहा दुतिगुन
चौगुन आठगुन समग नादिकवर्णघ
तिनमे कछुक प्रसिद्ध ये उदाहरै मे स
घ २२ षष्ठजाति औरौ कहौ वर्ण मा।
त्रारूप भाषाप्राकृत संस्कृत कहे सु
जंगमरुप २३ सुलो प्रियाविवि
संजुताविविसंजुता कहिगीतिका य
हसंयुताविन अंतवरने सु तोमर संत
२४ प्रिया ।।ऽ।ऽ संयुता ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ
गीतिका ।।ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ० तोम
र० ।।ऽ।ऽ।।ऽ।० रुपात नुमंक दूतोग
वमाला २५ तनुमंका ऽऽ।।ऽऽ० सं।
का० ऽऽ।।ऽऽऽऽ।।ऽऽ० विज्जू ऽऽ।।ऽऽ

का SSIISSSSIISS घनमाला SSIISSSSII
SSSSSIISS वनमाला SSIISSSIIISS
SSIISSSSSIISS० ससिवदनायास।
कलमुलायादुगुनचरिचाकुसुमवि
चिचा २६ ससिवदनाया IIIISIS०
कुसुमविचिचा IIIISSIIIISS० दुनुगु
मधमवती ललितपदगती संग ० प्रेगल
लितासषिलषिचलिता २७ मधमव
ती IIIIIIS० जसोमस्गुरहीनाकुमा
रलतितादीनासुतलपगुनसो नल्यो
मनोजरसोसरल्यो २८ कुमारल।
लिता ISIIISSS० चिचपदादुटुभागा
सारसहंससमभागा भानुसुतासद्दु
संगासोहनिस्यामलरंगा २९ चि
चपदा SIISIISS० गेलगेलगोला।

गीहा समानिकाजगी स्यामसंगरा
धिकाप्रेममंत्रसाधिका ३० समा
निका समानिकासुबीजलौंममा
लिकासुधीसजौसुद्रगुनीनराचहै
मनोजमंत्रसेकहै ३१ समानिका
।।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ० नराच ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।
ऽ।।ऽ०।। तमनिमध्यामसिसुहैश्री
गुनजाकेभेदपुहै रायतुसीगोविंदहि
येसंडुनगोपीहंदकिये ३२ मनिमा
ध्या ।।० ऽ।।ऽऽऽ।।ऽ भामसुगोपीरूप
वतीहै रामसुश्रीपीरूपवतीहै नंद
लल्लाकीमेरपतिवाधा याव्रजमेंतेरी
जत्तीराधा ३३ रूपवती ऽ।।ऽऽऽ।।
ऽऽ० निजजगर्रतुरित्तगत्तीवरनर
सासुरसवत्ती हरिनिरषाहसिमनु

का
पंच

हैसुहिंडगरीततुधनुहै ३४ तुरित
गती ।।० ।।।।ऽ।।।। ऽ० ततौजगौगी
कहिबचोनराधे वेंद्रवज्राहतिही
समाधे ठाढेहुसरीकरसेलराधेप्रा
नंदुतेरोसुषचंदुचाबे ३५ इंद्रवज्रा
ऽऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ० जुपेंद्रवज्रासुषल्लक
ल्लावेउपेंद्रवज्राकरधामधावे म
हावलीरत्नसंपत्तिमारे सुगोपिकामं
डलमेविहारे ३६ उपेंद्रवज्रा ।।०।
ऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ० वेल्यौवाहहंदुस्रोविं
दुरोला वाहसलसयलवसौजलो
ला जामोमोवोराधिकानंदलाला
मोतीतगीसालिनीकंठमाला ३७
सालिनी ०ऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ० जोसुषसा
जेसवसुषसानीराधिकाराजेब्रज

पुरवानी सोमससरल्ली अमितत
रंगा है अनुकूल्लाय भत्तनुगंगा ३६
अनुकूल ०ऽ।।ऽऽ।।।।ऽऽ० रेनरा
लगाहु भारव्योद्धता पारव्यारव्यम।
हारव्योद्धतास्यामक्सीनिधिदीनवं
धनजामि वुध्दिसुमिदेन अंधाता
३९ रथोद्धता ०ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ० स
नत्कातामरसानुजजाया सवजगु
जाकारन भरमाया सुहृयदिनेसस्
तायस्वेरी जिहिविहित्योहरिचित्त।
अहेरी ४० तामरस ।।।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ०
दोधकरेसुषभनन गंगा नेरज
सोमाति नंदनसंगा श्रीजमुनाज
लमध्य विहारी देवमहासुनिसेवनि
हारे ४१ दोधक ०ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ०

काο
५६

निसिसारदीकुमुदश्वंदजुषीनवमाल
तीमलयपयोनयुषी विकसीलसी
व्रजवधविदुषी प्रमितात्त्रासजिस
सांकसुषी ४२ प्रमितीत्त्तरा०॥ऽ।ऽ॥।
ऽ॥ऽ०॥ द्रुतविलंवित्त हून मन्स्र स्योर
दपिउवमयचनिसीसप्यात्त्तलनिउ।
जलजोन्हजह्नीलयी हिमगुविंदुय
विंदुलबेसयी ४३ द्रुतविलंवित्त ०॥।
ऽ॥ऽ॥ ऽ।ऽ० सोमासेगाविंदगतिम।
नाजामायासोजुगु अनुरत्ता जाको।
दयोऽप्रकहकहानी नलेगोरीसिव
विधिवानी ४४ मत्ता० ऽऽऽऽ।।।।ऽऽ०॥
परिमलसोरमफूलसोहनी सरदनि
सासविरूपमोहनी आलिनलिनीमि
लिक्योसयोपरै निजजुरकोनहि।

मालतीहरै ४४ मालती।०।।।ऽ।।ऽ।
ऽ।ऽ० वनेकुंजसंजुदलपुंजछ्वि निके
मधुमल्लफू स्मनकूलवीनिकौवलि
येगुपालसुरताभिलाषिनी सजि
सेजगोपत्रियमंजभाषिनी ४६ मं
जुभाषिनी।।०।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ०।।ऽ०।।
चित्तवृत्तवसुधसंगमासहो सुनेस
जेगहिहिरुचिरागियेरहो कहाकहोस
षिविधियोगकीकथा घरांकियेसव
हरिकेमनोरथा ४७ रुचिरा ०।ऽ।ऽ।।।
ऽ।ऽ।ऽ०।। सरस्मदनसागरहगहि
रीमुत्तिसारजलविंदुसंगउलहिरी फु
फुटिफवज्ञासधिज्ञिरिवलिका ननन
नलगिहैप्रहरनकलिका ४८ प्रह
रनकलिका।।।।।ऽ।।।।।ऽ० प्रीयधि

का
६०

मिषनिचलीवनकोलसंती कुसाष
यानिरषिवयोसषित्रससंती चंद्रव
लीसंगसषीहरषेहसंती तृनाजुजा
गिगाहिहेतिलकावसंती ४९ वसंत
तिलका ।।०ऽऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽ।ऽऽ०।। कुसम
तस्मरंगरागरंगपिंगअंगरागमल्हि
रल्हिवल्हिकानि राजगाल्हिमल्हिका
नि ५० मल्हिका ।।ऽ।ऽ।ऽ।० मल्हिका
ऽ।ऽ।ऽ०।। ननगागहिरतुंगा ।।ऽ।ऽ।ऽ।
ऽ।० मल्हिंश्रचलवननगांगा गिरि
गुनानिम्रगाधारविरचनाराधा ५१
तुंगा० ।।।।।।ऽऽ० मदुमुरलीलामधा
रत्रिभुवनसंमोहधरा हरकरसो
भासंगिका नयसुषदासारंगिका
५२ सारंगा ।।०।।।।ऽऽ।।ऽ०।। नि

जरांपुष्पिताग्रवली मलयजमाल समहा हरिहियहारवासमोहैजि हिसरकासुमानयोह ५३ पुष्पिताग्र
॥०॥॥ ऽ।ऽ।ऽऽ० हेमंतोसिसिरवसंत ग्रीष्म वीत्यो प्रावीरीजलधरका लचित्तचीत्यो ज्योरसौसरदपिऊष वर्षनीको प्रासाहीमनुजरिगोमह र्षिनीको ५४ प्रहर्षनी ऽऽऽ।॥।ऽ।ऽ। ऽऽ ननिसुसगाहिकिसुकुप्पहिवंडी नलिननयनघनवुंदघमंडी कम लिनितुवमकरंदममोदी द्विवसभम रवहुवोझविनोदी ५५ वंडी॥॥॥
ऽ॥ऽऽ धवधमपुन्यसहिभासगनी ज्यो चलिनीरजाहिनलिनीरसछौ ज्यो मनुसुतिमालचुनिकेकेरसरंगी

का० कलहंसु सो प्रगट सो जु सुसंगी ५६
९९ कलहंस ।।ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽऽ० पापचित्ता
प प्रहारवती । नायदुराय विहारवती ।।
प्राय विभाग सुसारवती । प्राप प्रता
प सुसारवती ५७ सारवती।०ऽ।।ऽ।।
ऽ।।ऽ०।। सुत्ति भदाम सुभाग लही सु
वल्लि सुपल्लव ज्यों डलही सु सोहति
श्री हरि के हियबी च जाज पिक च भए
जन्मनीव ५८ सुत्तिदाम।०ऽ।।ऽ।।
ऽ।।ऽ।० स्फुरत्य न्यत ताल वाल साल
मंजरी अंगरागरंगयागसंगसंजिरी ।
नंदलाल श्री गुपाल मोहजाल मंजि
री वामचामरोदुलाई राधिरंजिरंजि
री ५९ चामर।०ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।०।।
मन हंस कौसजिजो भरे हरिमान से

ब्रजनारिनारजिनीसमूहजहांवसै
गुनसुतपुंजसजननिर्मलजोचुनै
मुसक्यानिगोकुलचंदसुंदरगोगुनै
६० मनहंस ०।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ०
हसिहसियहराईप्रायनीफूलमाला
भुजगहिगहिराईप्रेमवाचोविसाला
रतिसदनप्रकेलीकामकेलीनुला
नी ननमयययहवानीमालिनीकोसु
हानी ६१ मालिनी।।।।।।ऽऽऽ।ऽऽ।ऽ०
॥श्रीहरिचरनछछवीछोनीछोभनि
छकिता याव्रजपुरकीसोभाराधारू
पपुलकिता परमप्रभुतादेषेदेवा।
कोनविष्याकिता कौतुकरवनावेसा
भासतीनगचाकिता ६२ चकिता
०ऽ।।।।ऽऽऽ।।।।।ऽ छितिस्वछासछा

का० यमनसुनलागेसिषरिणी समीचीसी
६८ चीजोजसुनजलवीचीविहरिणी ज
हाफूलीफूलीमत्तनिंग्रनुकूलीसुकु
लिनी ग्मलीगुंजेकुंजयरिमलनि
पुजेकमालिनी ६९ सिषरिनी।।।ऽऽ
ऽऽऽ।।।।।ऽऽ।।।ऽ० गीतिकालल्हीम
ग्रानननवंचरीकिनिजानिये रास।
ज्योजिमुरेउयगिनिसंगिनीयह्चिा
निये थेतथेततथेतथेतथनगरंग
मदंगिनीततततततततततत्थेंततथे
ततरगिनी ६९ वंचरीकिनि०ऽ।ऽ।।
ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ०० मैनाजोसमुतीग
हीयमवलीसाइूलाविक्रीडितै श्रीमे
मैमसुमरोसदात्तजिसवैह्रस्मानय
वीडितै एसोकोजगमेहित्तूहितुके

करैसोकहरैसाकरे राधाकांतम
हांतसंतमहिमातोरैनिरैसाकरे ६५
सार्दूलविक्रीडितं० ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।ऽ।०॥
ऽऽऽ।ऽऽ।ऽ० ॥ रेभौंरानुरागीवनम
नतफिरैफूलीमिलिलता वंधोसो
गंधलोभीमधपमधपियागावेसि
लिलता लीनीसोभामलीनोनहिकु
सुदवधछीनीसुमदना मेरेभौवाय
मलीगहिकमलकलीकीनीसुवद
ना ६६ सुवदना ऽऽऽऽ।ऽऽ।।।।।।ऽऽऽ
।।।ऽ०॥ श्रीराधेत्वयथानीमधसुम
यमहामानहंताजिमानी मानीसो।
भागरानीव्रजविपिनमहीजाकीराज
धानी तासोक्योहहिवेठीसतमहनुव
तीयीडिहाउनकाहूं मोरेमानेत्रिया

का।
८०

हूविसुनिजतिजइस्त्रग्धरैवेधिताहू
हू॥ स्त्रग्धरा॥१०ऽऽऽऽ।ऽऽ।।।।।।ऽऽ।
ऽऽ।ऽऽ० इतिसंस्कृतंसुगावृत्त ॥अ
थभाषावृत्त सवैयाभेद मैलभगा
वसुभासुनिभागगसात्तभगोललसे
लभगा लैसुनिभातैभगोललसै
लभगा लैसुनिभागगहीललस
त्तभगीललसत्तभगंगयगा पीम
दिराव्रजनारी।किरीटसुमालती।
चित्रपदस्रग्गात्तचिकमाधविदु
र्मिलकाकमलीसुसवैयवसुक्र
मगा ह८ मैलभगामदिरायघ्या
पहीकवित्तउदाहरन॥०ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।
ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ० वसुभायघ्या मंजु
लमंजरीपिंजरीसीहूमनोजकेश्री

सा

जसम्हारतिचीरन ऽषनप्यासन
नीदघरैपरीप्रेमऽजीरनकेजुरजी
रन देवघरीपलजातिघुरीऽसुवा
निकेतीरउसासममीरन ऽयाहन
जानिऽहीरऽहेतुमैकान्हकह्यौ।
कहौकाहूकीपीरन ॥१॥ किरीट॥१०
ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।०॥मु
निमागायथ्या बोसिबेलनऽाव
तीयेनतोऽालिनकेमनमैपरतीक्यो
देवगुपालहिदेवतीयेनतोयाविरह
नलमैवरतीक्यो वायुरामंजुलऽा
वकीवालिसुमालिसीकिडरमैऽार
तीको कोमलकूकिकेकोलियाकूर
कोजिनकीःकिरचैकरतीक्यो १०
मालती ।।०ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।

का० ऽ।ऽ०। सातनगोलयप्या ९ प्रौढिको
२१ ९ प्रौढिकयोसुरह्यो ९ भरू ९ भाएनरी।
प्रियभान ९ अधार तोलगिमोरयवी।
हूनिहूमिलिकुंजपरी। पिकपुंजपुकार
रै ९ आजु ९ अटापरजाराहिहैनघटा।
गारजीवरजीवनहुवारै नैसिकया।
उसवंदलगीउमगी ९ भयियानि ९ अ
वंहितधारै ७१ चित्रपदा ऽ।।ऽ।।ऽ।
ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।० लसेलभाप्या
सर्वानसोदतउराहनो नितसुचित
सकोचुमुनेलहियै उरहे ९ भरुमेहि
जानिकहूयहिवानिनहीजुमिलैर
हियै बवांउचलोचहू ९ मोरकहाल
गिजीनवबाइनकोगहियै ९ अवा
नकवेजुकहूमिलिजाहिहहाकहि

यैकह्यकहियै ७२ मल्लिका ॥०ऽ॥
ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ। लेमुनिना
गगायथ्या अ्मनोवीअ्महीरैनहरिस।
जोगुवकेविसुसीमिमहीमिसमासो
कैहेकिनिअ्गजुकहामयातोहिकह
कह्योकान्हकोहाकोहिकोसो नजानि
सुभाउमिटारामिटेतिन्हसोतरिसानि
सुभान्सेयासो सहेजायसीकलहेत
पसीसुभाहरहेभातिरहेहरिजासो
७३ माधवी ०ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥
ऽ॥ऽऽ० ललसजभगायथ्या मुनि
कैकनिचातकमोरनिकोचहुओर।
निकोकिलकूकनिसो अ्नुरागनरे
हरिबागनिमैसघिरागतरागअ्चक
निसो कविदेवघटाजुनईउनईवन

का० झूमि भई दल हूक निसो रंगराती हरी।
१२ हहराती लता झुकि जाती समीर की मं-
कनि सो ७४ दुर्मिलका ०।।ऽ।।ऽ।।
ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।।० ललमत्तभंग गाय
य्या रससिंधन रीर तिकी पुतरी ऊ।
तरी रग मैनन तें दुदो ती। सरसा रस
रूप सुधारस ओज सु मोह मनोज
सरासन गोती। अंग अंग अनंगत
रंगित रंग उदोज रयंगविहंग मजान।
पलकै अरु नैन झलकै अरु नैन छुटी।
अलकै छलकै लर मोती ७५ कम
ला ।।० ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ०
इति प्राचीन मत्त सवैया भेद अष्टक अ
थ नवीन मत्त सवैया चतुर्भेद मंज
रिलसित सुधा लसा मिलिराय कवि

वरनंत कमललला ललमुनि
मुषगलभगोलरगानंत ७६ लमुष
गलअंतमुनियप्पा उहीअकुला।
स्नुनाजवनेककलापरवीनललाब्र
जराज विसारिदईकी हिदेवतुम्है अव
लोकतही अवलोककी लाजरतेप
रऔरूचवाउचल्यौवरजेमरमैगुरु।
लोककसमाज कह्यौंलगिलालकह्
कहियेहगानी सहियेसवरावरेकाज
७७ मंजरी॥०।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।
ऽ।।ऽ।० ललमुषभगनअंतमुनि
यप्पा विनुगोकुलचंदअमाउसपाउ
समीषनमीषमसेजसरंगिनि उधी
रजरेचकमेचकरूपचढीजमुनाज
लधारजरंमिनि अरिसंवरउंवरसे।

का० उसे घन॰ अंबसेवर॰ अंबररंगिनि
२९ भयभारसम्हार नदेति नहींवयला
चमकार॰ अधार॰ अरंगिनि ७८ ल
लिता ०॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥
ललमुषोल॰ अंतमसुनियणा ॰अं
धराति॰ अधारेकी सेउघयघमडी॥
झुरिवोनुकटावदु॰ मोर कुलदादुर
झिल्लिपुकारेकरेकिलकारेकरेपि
कचातकमोर कविदेवअमावस
पाउसरेनि॰ अज्यापिसरेनघनीघ
नघोर गजिमानुजियापियकंठल
गीलुकिमोनुधरेंहुवियेनफकोर
सुधा७९ रागनंतनमुनियणा लोगलु
गाइन्न हारी लगाइमिलामिली चाल
नमेरत्तहीवको वेरहिं॰ मोसर॰ आए
॥०॥ ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ०

ग्रहासमुहाररूयोनसमेरत्तहीवन्यो
कीनीग्रनोकनीयोमुहमोरियेजो
रितुजानदनेटत्तहीवन्यो ६० अल
सा॥ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।।ऽ।
ऽ०॥ इतिसवैया द्वादसभेदसमास:
अथ्यदंडकभेद जहदुनगनसात्तओ
आठनोदिअहेसोदिनेसोलमध्या
गणाहोहिजो अमवरनुहुचंडवर्वा
एवव्याजजीमत्तलीलाकरुहमत्तो
हंस्कोजयजयहरिदेवदेवाधिदेव।
मुदेवकीनंदनश्रीधरश्रीपत्ते
अतिकठिनकालदुस्तारसंसार
निस्तारसंत्रानसंचारसे चंडवर्षे
०।।।।।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ। ६०
जयजयभगावंतसामंतरूपीमहाम्त

का० भारायमानक्षितीभारसंभारहृत्रः
२६ कमलनयनकेसवस्वामिकंसा।
रिवंसावतंसस्फुरद्रूपगोपालम्
पालभज करुणानिलयकोटिकं
दर्पदर्पापहारीमहासुंदरस्यामम्
र्तिष्ठविद्युत्व व्रजजनहरनराजरा।
जेंद्रदेवेंद्रदुःस्वापहोयेंद्रवृंदावना
कोडसंक्रीन २६२ ग्रमणीधरडक
॥०॥।।।।ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ०
जदुकुलकमलाकरोद्द्योतभास्वंत
दीसेनचिंतामणेसंतसंतानकुञाण
दातारम् परपुरुषपुराणपुण्यात्म
माणनैपुणपकाननएसोजन्माला
वाणपरर्द्धस्यधन्यमम् व्रजजनम
नरंजनद्रोहकृतंजनाहोरहिनीमंज

जनत्केमसाधारणप्रेमराधाधरे जय
जयजयवासुदेवादिदेवाधिदेवाम्मरें
द्वारिकंदासकोदासमायाहरे ९३ अं
जरंडव ।।०।।।।।।ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।
ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ इहिविधिदुनगन।
आदिकरिगन अधिकप्रतिनाम दं
डककहिजोमत्त अरुसीलाकरउद्दा
म ९४ प्रचित्तकवरनियेसर्वकाव्या
धिकारीकहोदोइनसात्तयाहोहिजा
मे जदपिजगनवरणकहीएकसं
ख्याविनाछंदुसोईवषानोसभामे
हरिचरननिधरौचित्तमेनित्तसाहि
सोमित्तुरासोनहुजोकहूहे जिहिसु
मरतमहापातकजातसंसारसंयात
उसारविख्यातहूहे ९५ प्रचित्तक ।।०।।

का०
२५

।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।। राज
राजराजराजराज द्वारा प्रसोकपुष्पमं
जरीसुदंडकवर्णनिये क्रमकसजा
दवेंद्रजानइंद्रहूउपेंद्रदर्पदुष्टदानवें
द्रजानिये इतित्तच्छिजैंद्रमहेंद्रमहिता
हिनेंद्रसांद्रमंद्रमंद्रा।पमानवासुरी
नोसवसमूहबालवारगोपगोपिकाप्र
चारचातुरीभयन्नयन्नगासुर। ६६
पुष्पमंजरी।।०ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।
ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ० अनंतवर्णहोहिजो
सवैलगालगाजहांतहांअनंतसे
परप्रकासिये अनेकभांतिवर्णपा
तिगातवाघजत्यकांतिभव्यकाव्यकी
विसातिभासिये अरेकुबुद्धिरावण
प्रपंचजुद्धधावनप्रकोपिरामयावन

मियाहरी ॥ प्रचंडमुंडचंडखंडतुंडतुंडकुंडकुंडयातजातुघोरकुंडयाधरी

॥ ६० ॥ अनंगसेषर ॥ ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ ॥ वर्णदंडक यमोमोघारजसोभयेलगोहीछंद वीरदंडकवखान्योराजहंसनामज्

सहाईसनननिसंतत्तसरूपीहो ॥ अनंतजंतुमयपूरधनधर्मकामज् विलोकिनायकसुंदरविहारीसंतय नित्यदिव्यधनुधारीभुवभव्यधाम ज् विदेहीनिर्मलमानसविलासी राजहंसअंसवत्तारारघुवंसरामज् ॥

॥ ६८ ॥ इतिनियत्तगणवर्णदंडक

॥ अथ अनियत्तगणवर्णदंडक तीसआदिजेतीसलोपतियदअत

काव्य
२६६

छंद अनुप्रासजातिसजातिरसस
रसजमकपदवंद ७९ कहेपघदंड
कनियत्त अगनित्तगनविश्राम
अगनियत्तदंडक अक्कच्छंदघ
नाक्षरनाम ८० रसामृतयथा
जैजैव्रजदूलहदुलारेजसुधाके
सुतमहाराजमोहनमदनमनहारी
अनंद अघंडरासमंडलविलासनु
वमंडलके आघंडलदेहितकारीवं
सीधरसीधरगुपालवनमालधरा
धावरगोपवरगिरिवरधारी वृंदा
वनचंदनंदनंदनगुविंदस्यामसुंद
रकुंअरकुंजमंदिरविहारी ८१ रा
वरमाहरी अनरदिगीसनिकेमा
नदसुनीसनिकेईसनिके आन

रमहानद॰ग्रनोधिके भुवन॰ग्रनेक
राजराजनिकेएक राजराजताविवे
कजेजिहाजनोयपयोधिके सत्लउ
र॰ग्रसुरनिकूलसुरत्लवनिके। नि
रमलरत्नजेत्रिभुवनपुन्यपोधिके
देवमारतंडकुलमंडन॰ग्रवंडमही
मंडलकेमारतंडप्रायंडल॰ग्रैधि
के २१ ग्रातंसातुरी रिपमघराव
न॰ग्रघेघनुषसाइकनिघाइक॰ग्र।
सुरसुरनाइकसुभकरन तारनग्र
हिल्याउरसल्य॰ग्ररिसरनिकेतोर
नपिनाकन्नुपती निरहंकरन वं
धनपयोधिदसकंधरिपुदीनवंधुग्र
धमउधारनभयंकरभयंकरनपा
वककेग्रंकसोधिसियनिकलंक।

का
२०

आयेलंकरनजीतिरघुकुलकेअलं
करन २३ त्रयसंमाती अस
मिरतचढूयाईतेधिरतघनआवत
फिरतफानेकरसोमयाकेकपकिसा
रेनिमचपललालपकिलपाकि
बिनुमानध्यारेप्रानप्यारेहोतदेव।
कहैनेनअसुमानिहैअसुवार
पाकिरूपकिरतियाअधेरीधारनति।
यारे धरतिमुषवतियाकप्तेउठेद
तियातापाकिनपाकि २४ इतिअनि
यतवर्णदंडक अथअनियतादंडक
अनेरघुचउवसंहितमनितच
रज्यानपरूपनपुरसरोजकोजुम
स्त जुहारेजिन्हें इद्रानीसुजसुवा
नवानीकहानीजिनकीकहिकहे

सुकोननंदतु विरंचिओमहेसुउम
हेसुजिन्हैंध्यावतगनेसुगुनगावत
सुरेसुसेसुछंदतु त्रिलोकठकुरानी
महाराजरामरानीश्रीजनकनंदनी
केहोसुंदरपदवंदतु २५ वसुवसु।
वसुसुनिवरनजानिजहलघुगुरुच
रनंत दंडकसुछंदघनाछरीरवरनत
कविमतिमंत २६ एकतीसबतीस
औतेतीसोपरवरणे काव्यप्रथेसम
थेहैंचदतवचुरसुषकरणे २७ सि।
षिलवंधपदजानिजरचिवर्णमात्रा
ऊन अलंकाररसभावसेहोतक
वित्तअन्नन २८ सोरहपंद्रहचौद
होआवरजातियदवीव नदायिकवि
नघनाहरीउत्तममधमनीव २९

का० २८

अलंकारभूषनसुरसुजीपछंदुतनु
भाष तनुभूषनहूबिनुजियविनाजी
वतनुभाष १०० इतिघनाक्षरीका।
ख इतिश्रीकाव्यरसायनेदेवदत्त
कविविरचितेगद्यपद्यदंडकवर्णवृत्ति
निरूपनदसमःप्रकास : १० अथ
मात्रावर्णेन गाथादिनिरूपनगाथाद
कदोहादिकाहेजातिछंदद्वैभांति प
स्तारादिकभेदकरिदोऊअनंतयां।।
ति १ गाहाभेद गाहगीतिउपगी।
तिअरुआर्यगीतिउद्गीति गाथिनि
सिंहिनिसातविधि गाहभेददसमीति
२ गाहकेलछन रविपुरानरवि
तिथिकलाचारयोपदहोहिगाहसो
कहिये छठोजगनुकेथोलदस

नषत्तदलदुहूलहिये ३ सुभवातसं
यमसाधेमोहनुमोहेनिहारिद्दग॰ग्रा
धे जोगिनुजे॰ग्रवराधेत्ते॰ग्रवराधे
गुनवाधे ४ गाहागीतियथा गा
हग्रयमदलनदहूगीतिवखानदुन
हि दुहूदलनितिहि॰ग्रंतदलसो उप
गीतसराहि ५ विधिकीगतिगहिरा
जीवडभागिनीनंदराइकीरानी जा।
कीवेदकहानीताहिसुवावेसुकहि
कहिकहानी ६ उपगीतियथा व्रज
रजपरसतिजातन निर्मलजनकर्म
निजातन जननमरणयमजात
नसोकवियाजानियेजातन ७ ८
तिगीतिउपगीत ॰ग्रायोगीतिउद्गीति
यथा दुहूदलनि द्वैद्वैकलनिग्रधि

का
२२

क॰ आर्यागीति गाहादलयदियेजहा। उलसिसुकहिंडहोति ८ आर्यागीतिवस्यादिकनहिजानतशिवसनकादिकियेलचाहैजानत श्रीहरिदेवमहानताकीनोसोब्रजनारिनुमहानत ९ उहोतिहूय॰ मनहस्य श्री गाथाश्रीघनसोश्यामिनीराधा प्रेमसुधारसवरसतवरसतसंतापपापनहिपरसत १० अथ गाथिनीसिंहिनी वीसकलाचौथेचरनताहिगाथिनीजानि गाहरुति॰ अपरनवकलासिंहिनिताहिवखानि ११ गाथिनीश्रीवृंदावनचारीगोगोपीगोपवालसंचारी सुंदरकुंजविहारीन्यनुमोमनमाहसोमनोहारी १२ सिं

द्वितीयथा ब्रजमंदिरदीपकव
जवनिमादेवताव्रजसुषसमीयक
ब्रजरजनीरजनीकरजयव्रज।
कुसुदाकरश्रीकर १३ इतिमाचा।
छंदगाहादिभेद अप्पदोहादिक दो
हासोरठकुंडलीरोलाछपैविनं
ग वोपैयाघादाकुलक अरिल्लअ
मृततरंग १४ हरिकअरुहरिगीत
कहियपद्मावतिमधुभार आभीरेति
थिभेदकहिजयपिअनंतप्रकार १५
दोहा॰ वारहसमतेरहविषमकल
गलहुहुदलंत सोदोहाउलटोसुजो
कहतसोरठासंत १६ उदाहरण
रन कालियअघमर्दनवानलनिता
वित अवरेषु विषमविषयविषध

का रकितिकन्यासीविषविषमेष १७
१०० सुंदरनंदकुमारजोहानेकाजिहारि
हो यंधकूयसंसारदीनवंधतुम।
ताहिरिहो १८ रोलाकुंडली प्रति
पदकलचोवीसविरतिग्यारहपर
लहिये सोरोलादोहादिकियेकुंड
लियाकहिये कुंडलिप्रतिपदयम
कसिंहावलोकनतामे ग्याहव
रनअंतिप्रथवरनसुमिलेदोहामे
१९ रोलाउदाहरन कालियका
लकरालव्यालजनुज्वालउमग्यो
पसुपक्षीकमिकोपलयविषमय
विषसंग्यो जमुनाकूलकदंवम।
लचटिकाम्हलकंप्यो फुंकिफुंकि।
फनसहसफनीहरिचरनानिचंप्यो

२० कुंडलियाउदाहरन फुनिफुनि
फुनिमानिफुंकरतुफेलिफूलिज्यो।
फेनु सीससीसजगदीसनटुनटनु
घटिनसुखैनु वैनउघरिवटुनटनुर
यतिकथिकिंकिनिकंकन लटुपटा
तुपटुचटुलकुटिलभ्रकुटीलटकंक
न मंकनजीभसहस्त्रजुगलतामि।
स्वतरुनतान मनमनातनूपुरभ्रर
पुपगऊपरिकिनफून २१ भ्रमपछ
पदपदाकुल भयमहिरोलाचारि।
चरनचमरुछैउछाला पंद्रकलविसा
मसकलवसुवीसविसाला इहिविधि
छप्पैछंदसुमिलकोमलपढ़जासे
पेगलभाषितविपुलभेदसुषदेतसना
मे भनिवरनजहासोरहकलावो
पदचौसठिजानियै वहुवहलवर

का० नकोमलविमलपादाकुलकसुजा।
१०१ निये २२ छप्पयउदाहरनू परमत
त्वउज्जोलसत्वसंतोषसीलसुचि अ
ति निर्मलमति वित्तमुकुर अभासर
वरूचि निर्विकारनिरुपाधिवर्गनि
गुन निसगरिहू निराकारकैवल्यसा
रनिर्वचनयात्मह्व संभरस्वयंभरसं
भवविभवभवपरिभवअनुभवनिच
य जयदेवपरानंदमनुसत्यनित्य
चैतन्यमय २३ पादाकुलसंहस्न
सवुजगुपरषोमोहकेजार जरामरन
पंजरजंजार अमपसारसंसारअसा
र सकलसारहरिसुमरिनसार २४
अथ चौपैया अरिल्ल कलतीसवर
नगति दसवसुरविजतिचारयोपद
वीसासो जहंसोचौपयाछंदुसुख्या

वसुस्तुसगरवनुजासौ कलहकेसजा
सेसिवविश्रामधानिपदगुरुहविस।
म सोअरिहृकहियजगजस्तुलहि
येरहियन्नयतिसभासे २५ चौपै।
याउदाहरन सिगरोजगुहेरोधरध
रटेरोहूजोसीतनमेरो संकटमेरा
येन्नमसंनाषेजगतिकरैनिवेरो न
गवंतस्यातसंतसयातेअंतनयाते
तारिहो श्रीराधाहरिहैवाधाहरिह
रिहैहियआधारविहरिहै २६ अरि
ह्व दारासुतहितमीतप्रीतिघनधा
मसौ आठोजामनिकामवतुसा
नकामसो विषमविषयकीप्यासम
रतुअघधामसो छेमकाहकोचा
हमेमघनस्पामसो २७ अपाडि

का
१०२

भंगीतथाहीरक इसवसुरसवसुज
त्तिरदकलपदगात्तिसगनविरत्तियद
चांतलहो चरननिचतुरंगीजसर
ससंगीछंदुचौभंगीवनामकहो तेई
ससुमतावानवसनारगनससत्ताच
हुचरमो घटुजयसरकामावारिवि
रामाहीरकनामासोवरनौ २८ त्रि
भंगी जुगजोगस्वयंभूसुरमुनिसं
रवीज अहंमरचनकरे मिलितल
घवीसोसत्वानिहीसोईछाहीसोदेह
धरे त्रिभुवनविरल्यानो भ्रमरस
दानो भनुमानोजगजीवभरे भय
रुतुविहारतेसंसारकेसारजयदेव
रे २९ हीरक इंदुवदनहुंइकदननं
दनदनलाढिलेलासनचरनरासर

चनहासवचनचारिलेचदुलसुकट।
कुटिलल्पधनिभृकुटिलकुटताडिले
भतजनरत्तमनविसक्तनविभ्रा
डिले ३० इतिजातिछंद अथपद्
मजातिसंकरअपद्मावतीलक्षणदंडि।
कालतनं ससनंनभनंजयकीहर
मनंदरससुचरनंभतिसत्ता पद्मा
वतीसोवसुवसुजतिसोवसुरसरति
सोपदयत्ता गुलहैनलैहैजतिवसु
कलैहैवलतिविषलहैसुरभारो:
अथतध्वनिपेंडुहभनिषेधीनवगं
नियपदचारो ३१ पद्मावतीउदाहर
रसहूंदिसिहूंदिनदिननिसिहूंनिवसि
प्रविसिहूजगदेख्यो रसनारसहूश्रव
नरसरसहूअरसपरसहूसुविसेख्यो।

का

१०३

उपजैसोषियलनाजियतुसुचितना॰अ
जर॰अजिरलनाजोसोई जियजोध
रिहै॰मधमउधरिहैसबदुषहरिहैह।
रिकोई ३२ ॰मध्य॰अमतध्वनिउदा
हरन गगानलयथ्या व्रह्मादिकगुरु
सेन्यादिकसुररंभादिकतिय दुमाय

च

हलुजजैनारिगमगौतभावलकिय
गोपीव्रजनविलोयीव्रजरिपुलोपीज
गमय साधारनजनबाधाहरकररा।
धावरजय ३३ ॰अमतध्वनिभेद
गनलगलललगाललकहौगागनल
॰अरुनलगांग चारिभेददंडिकाकेग
गनलत्व॰अमि॰मतरंग ३४ गनल
गमधत्रा दंडिकाललगागललमध्य
रंग नलगांग॰मघ्जातरागमनल

अस्यान्तरंग ३५ मधराउदाहरन
सुंदरवदनामंदिरमदनाकुंदसुरदना
कर विरचनानंदितरचनानंदसु
वचना मोहितकमलामोहनविम
लाङ्गेहकलिमलासीतकरकलासी
तकलसकलागीतरसकला ३६ ल
लगगललमधरंगउदाहरन ज
सुदानंदनजगदानंदनप्रसरावंद
नजमुनापंकनजमनिः फंदनयम
लस्पंदन मुरलीमोहक सुरभीदो
हक असुरद्रोहकजयगोपालकम
लिमालालककमलालालक ३७
नलगगअस्याहरणयथा धनत
नुस्यामाङ्गिअघघामाधनवनदामा
हतरिपुरामाव्रतव्रजवामाकृतमन

का
१०३

कामादुअनदुसीलासुरसुघसीला
सुजनसुसीलामदननिसीलाम
दूदुनमीलसकरिपुलीला ३८
इति चतुर्भिदंडिक ॥अथ हरिगी
ततथा ॥आभीरनचमधआख
सुवीसकलपदसकलसंसुघवी।
सवरारिअंतये हरिगीतजानिस
तगीतिकछंदुविदितदिगंतये
सुनजोत्रिगनआभीरकोमक
रभारहीसजिसेजको मिलिराधि
केहरिगीतगीतिकजानिहतसुतेज
को ३९ हरिगीत अजसंवंरसुद
रूपमंदिरनंदगोपनंदना जग
वंदपदअरविंदलोचनअसुरवं
दनिकंदना जदुवंसवारअवतंस

वंसनिनादकंसविहंडना जयकृ
ष्णरासरसरिसकेलिसत्सगोकु
लसंकुना ४० असीरयया महि
मासवनमहीयव्रजमंदिरकुलदीप
जनतामनअभिरामजेसुंदरवरस्या
म ४१ मधुनारायया जयनंदका
रनुमि रविधिवेदवंधप्रभतिछंदकं
ध जयसर्वसारहरनरमिभास्वरानि
धजयगोपवेष ४२ सतविषमस
मअर्द्धसमभांतिभांतिवहुग प्राकृ
तसंस्कृतभाषासुंदृध ४३ जात
भाउचितपदसवदरुछंद तेवरनेसं
हेपकरिजगतप्रसिद्धआनंद ४४
मेरुपताकानष्टउद्दिष्टकौतुक
छिनप्रस्तारसुविस्तारतहांमिष्ट ४५

का॰ मानुषभाषासुष्यरसभावनाइका
१०५ छंद अलंकारपंचागयेकहुत्तसु
नत आनंद ७६ सत्यरसायन।
कवितुकोश्रीराधाहरिसेव जहा
रसालंकारसुषसंचौरच्योकवि
देव ७७ भाषा प्राकृतसंसकृत।
देषिमहाकविपंथु देवदत्तकवि
रच्यौकाव्यरसायनग्रंथु ७८
श्रीराधेब्रजदेविजयसुंदरनंदकि
सोर दुरितहरोचितकेचितैनेक
सदयद्रगकोर ॥ ७९ ॥ इतिश्रीका
व्यरसायनेदेवदत्तकविविरचिते
गद्यपद्यहृत्ता—ति—निरूपनेरसा
इसप्रकास ॥ ११ ॥ संवत १९०
८ कार्तिककृस्ना २ भौमवा।

